ध्येयIAS®
most trusted since 2003

परफेक्ट 7

यूपीएससी व पीसीएस परीक्षाओं के लिए संपूर्ण पाक्षिक

वर्ष : 4 | अंक : 21 | नवंबर 2022 / Issue-1 | मूल्य : ₹ 55

dhyeyaias.com

- वाइल्डलाइफ डिप्लोमेसी वन्य जीव संरक्षण के लिए बन सकता है कारगर हथियार
- हिजाब विवाद : मौलिक अधिकार का उल्लंघन या समान नागरिक संहिता की आवश्यकता
- भारत में बाढ़ की स्थिति : सतत और उन्नत योजना समय की मांग
- विदेशी मुद्रा भंडार में कमी और रूपये में गिरावटः भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में चुनौतियां
- नाटो, पुतिन की महत्त्वाकांक्षा और वैश्विक समीकरणों के बीच भारत की स्थिति
- 5G एक नए युग की शुरुआत
- ग्लोबल हंगर इंडेक्स : अनुमानित और वास्तविक स्थिति

परफेक्ट-7

करेंट अफेयर्स मैगजीन ही क्यों?

1. सर्वप्रथम परफेक्ट-7 करेंट अफेयर्स मैगजीन, **प्रत्येक 15 दिन** में प्रकाशित होती है जिससे छात्र करेंट अफेयर्स से अप-टू-डेट रहते हैं, वहीं अन्य कोचिंग संस्थानों की पत्रिकाएं मासिक होती हैं जिससे महीने भर की करेंट अफेयर्स एक साथ एकत्र हो जाती हैं। अधिक करेंट अफेयर्स होने के कारण छात्र प्रायः सभी लेखों को पढ़ नहीं पाते। अंततः वे वार्षिकी और अर्द्धवार्षिक मैगजीन पर निर्भर हो जाते हैं।
2. परफेक्ट-7 मैगजीन **आईएएस और पीसीएस केंद्रित परीक्षा** को ध्यान में रखकर बनाई गई है, वहीं अन्य कोचिंग संस्थानों की पत्रिकाओं में आईएएस और पीसीएस परीक्षा के नाम पर अनावश्यक एवं अतिरिक्त सामग्री शामिल कर देते हैं, जिससे छात्रों में कन्फ्यूजन हो जाता है।
3. परफेक्ट-7 मैगजीन में 15 दिन के दौरान महत्त्वपूर्ण परीक्षा उपयोगी घटनाओं पर **विषय विशेषज्ञों द्वारा 7 संपादकीय लेख, महत्त्वपूर्ण घटनाओं और सूचनाओं पर 42 लेख, रचनात्मक शैली में 7 ब्रेन-बूस्टर, करेंट अफेयर्स, वन लाइनर, प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा संबंधित प्रश्न** आदि दिए जाते हैं। इसके साथ व्यक्ति विशेष नाम का एक खंड भी है जो ऐतिहासिक व्यक्तित्व के देश और समाज के प्रति योगदान को दर्शाता है। इस तरह 15 दिन की अवधि में आईएएस, पीसीएस परीक्षा केंद्रित कोई भी महत्त्वपूर्ण सूचना और खबर नहीं छूटती।
4. इसके साथ ही **केस स्टडी खंड** के माध्यम से छात्र यह सीखते हैं कि एक अधिकारी को अपने कार्यकाल के दौरान कैसी परिस्थितियों का सामना करना होता है और उसका क्या समाधान हो सकता है?
5. परफेक्ट-7 करेंट अफेयर्स मैगजीन के माध्यम से Dhyeya IAS के सबसे महत्त्वपूर्ण परीक्षा कार्यक्रम **PMI (Pre + Mains + Interview)** की अच्छे से तैयारी हो जाती है।
6. करेंट अफेयर्स आधारित कक्षाओं में परफेक्ट-7 के माध्यम से तैयारी कराई जाती है जिससे छात्रों की गुणवत्तापूर्ण तैयारी हो पाती है।
7. परफेक्ट-7 मैगजीन **प्रत्येक माह की 10 और 25 तारीख** को छात्रों के लिए उपलब्ध हो जाती है, वहीं अन्य संस्थानों की मैगजीन में करेंट अफेयर्स पिछले महीने का होता है और पत्रिका में आगे का अगला महीना अंकित होता है, अर्थात करेंट अफेयर्स लगभग 1 माह पुराना होता है।
8. परफेक्ट-7 मैगजीन में प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा केंद्रित मॉक टेस्ट रहते हैं जिसके माध्यम से छात्र अपनी तैयारी को और भी सटीक बना सकते हैं।

ध्येय IAS most trusted since 2003

ध्येयIAS
most trusted since 2003

परफेक्ट 7

इस अंक में...

प्रबंध संपादक	:	विजय सिंह
	:	बाघेन्द्र सिंह
संपादक	:	विवेक ओझा
सह-संपादक	:	आशुतोष मिश्र
	:	सौरभ चक्रवर्ती
उप-संपादक	:	अमन कुमार
प्रकाशन प्रबंधन	:	डॉ.एस.एम. खालिद
संपादकीय सहयोग	:	हरि ओम पाण्डेय
	:	भानू प्रताप
	:	ऋषिका तिवारी
	:	ऋतु
	:	सल्तनत परवीन
	:	लोकेश शुक्ल
मुख्य समीक्षक	:	ए.के. श्रीवास्तव
आवरण सज्जा	:	अरूण मिश्र
एवं विकास	:	पुनीष जैन
टंकण	:	सचिन
	:	तरून
कार्यालय सहायक	:	राजू
	:	चंदन
	:	अरूण

समसामयिकी लेख 5-18

1. वाइल्डलाइफ डिप्लोमेसी वन्य जीव संरक्षण के लिए बन सकता है कारगर हथियार
2. हिजाब विवाद : मौलिक अधिकार का उल्लंघन या समान नागरिक संहिता की आवश्यकता
3. भारत में बाढ़ की स्थिति : सतत और उन्नत योजना समय की मांग
4. विदेशी मुद्रा भंडार में कमी और रूपये में गिरावट: भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में चुनौतियां
5. नाटो, पुतिन की महत्त्वाकांक्षा और वैश्विक समीकरणों के बीच भारत की स्थिति
6. 5G: एक नए युग की शुरुआत
7. ग्लोबल हंगर इंडेक्स : अनुमानित और वास्तविक स्थिति

राष्ट्रीय 19-24
अंतर्राष्ट्रीय 25-30
पर्यावरण 31-35
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 36-41
आर्थिकी 42-47
विविध 48-53
राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की महत्त्वपूर्ण खबरें 54-57

समसामयिक घटनाएं एक नजर में ... 58
ब्रेन-बूस्टर 59-65
प्रारम्भिक परीक्षा विशेष 66-71
समसामयिकी आधारित बहु-विकल्पीय प्रश्न 72-73
व्यक्तित्व 74

OUR OTHER INITIATIVES

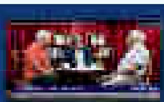

DHYEYA TV

UDAAN TIMES

Hindi & English
Current Affairs
Monthly

DHYEYA EDUCATIONAL SERVICES PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2008 COMPANY)

Face to Face Centres

MUKHERJEE NAGAR	:	9205274741, 9205274742
RAJENDRA NAGAR	:	9205274743
LAXMI NAGAR	:	9205212500, 9205962002
ALLAHABAD	:	0532-2260189, 8853467068
LUCKNOW (ALIGANJ)	:	0522-4025825, 9506256789
LUCKNOW(GOMTINAGAR)	:	7234000501,7234000502
GREATER NOIDA	:	9205336037, 9205336038
KANPUR	:	7887003962, 7897003962
GORAKHPUR	:	0551-2200385, 7080847474
BHUBANESWAR	:	8599071555
SRINAGAR (J&K)	:	9205962002

पहला पन्ना

विनय कुमार सिंह
संस्थापक
ध्येय IAS

करेंट अफेयर्स संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोगों की ओर से आयोजित परीक्षाओं की तैयारी में अति महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के मुद्दों पर प्रासंगिक सूचनाओं से जुड़ाव होना अभ्यर्थियों के लिए काफी जरूरी समझा गया है। इसी जरूरत को पूरा करने के लिए परफेक्ट-7 पत्रिका का पाक्षिक प्रकाशन किया जा रहा है। आईएएस और पीसीएस की तैयारी तभी पूर्ण मानी जाती है जब प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू स्तर की गतिशील प्रकृति के राज्यों और विश्लेषणों को आप सभी तक समावेशी रूप में रखा जाये। परफेक्ट-7 मैगजीन इसी विजन और दृष्टिकोण को ध्यान में रखती है और विद्यार्थियों की कटेंट के स्तर पर बहुआयामी जरूरतों को समझती है। इसीलिए इस मैगजीन को करेंट अफेयर्स के साथ-साथ सामान्य अध्ययन के महत्त्वपूर्ण खंडों से जुड़े अति प्रासंगिक कंटेंट के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। एक तरफ जहां करेंट अफेयर्स के स्तर पर सबसे पहले मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखते हुए 7 ज्वलंत विषयों पर समसामयिक लेखों को, स्वतंत्रता आंदोलन और अन्य क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तित्व की जीवनी और भूमिकाओं को, सामान्य अध्ययन के विविध खंडों के सर्वाधिक उपयोगी विषयों पर मुख्य परीक्षा के स्तर पर कवरेज दिया जा रहा है, वहीं प्रारंभिक परीक्षा के स्तर पर 15 दिन पर सबसे महत्त्वपूर्ण करेंट अफेयर्स के मुद्दों को कवर किया जा रहा है जिसमें राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र, लोक प्रशासन, कला-संस्कृति, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, राजव्यवस्था और अर्थव्यवस्था के मुद्दों पर जोर दिया जाता है।

विद्यार्थियों की संकल्पना के स्तर पर समझ को बढ़ने के लिए ब्रेन-बूस्टर सेक्शन में 7 ग्राफिक्स के जरिये विषय को संक्षेप और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके अलावा सिविल सर्विसेज की परीक्षा में प्रमुखता से पूछे जाने वाले ग्लोबल इनिशिएटिव्स, वैधिक संस्थाओं, संगठनों की संरचना, कार्यप्रणाली, महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट्स, सूचकांकों पर अपडेटेड जानकारी इस पत्रिका में शामिल रहती है। इस मैगजीन को केवल बच्चों व केवल एनालिसिस पर जोर देते हुए नहीं बनाया गया है बल्कि इस मैगजीन का ध्येय यह है कि सिविल सेवा के प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के उभरते हुए ट्रेंड्स और प्रश्नों की नई प्रकृति को देखते हुए अभ्यर्थियों को एक ऐसी समावेशी मैगजीन उपलब्ध कराई जाए, जिससे वे सिविल सेवा एग्जाम की नई जरूरतों को समझते हुए अपनी तैयारी को एक नई दिशा दे सकें। पत्रिका के प्रारूप में अभ्यर्थियों की तथ्यात्मक आवश्यकताओं, मानसिक विकास, लेखन प्रविधि विकसित करने जैसे विषयों को ध्यान में रखते हुये स्तंभ शामिल किये गये हैं। इसके साथ ही हम अभ्यर्थियों की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप नये स्तंभ शुरू करते रहे हैं और आगे भी यह क्रम जारी रहेगा। आशा है कि आप सभी के लिये यह अंक उपयोगी सिद्ध होगा। हमें आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं के साथ।

पर्यावरणीय मुद्दे

वाइल्डलाइफ डिप्लोमेसी वन्य जीव संरक्षण के लिए बन सकता है कारगर हथियार

दुनिया भर में जीव जंतुओं और वनस्पतियों का अस्तित्व जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग के चलते गंभीर स्थिति में पहुंच गया है। जीव-जंतुओं की विलुप्ति एवं उनकी संकटापन्न स्थिति से सतत विकास लक्ष्यों और जैव विविधता संरक्षण हेतु राष्ट्रों के लक्ष्य लगातार प्रभावित हो रहे हैं। कई ऐसे देश हैं जहां वन्य जीवों की अवैध तस्करी, प्राकृतिक आवासों के क्षरण और अन्य कारणों से वहां कुछ प्रजातियों के एक भी जीव नहीं बचे हैं। अब कुछ राष्ट्रों ने ऐसे विलुप्त जीवों को अपने यहां फिर से बसाने के लिए ट्रांसनेशनल ट्रांसलोकेशन (यानी दूसरे देश से अपने देश में विलुप्त जीव की प्रजाति को मंगाने के लिए कार्यवाही) की नीति का सहारा ले रहे हैं। इसके लिए ऐसे देशों ने दूसरे देशों से पर्यावरणीय अन्तरसम्पर्क, संवाद तथा समझौते पर जोर देना शुरू किया है। हाल ही में श्रीलंका की सरकार ने भी भारत सरकार से अनुरोध किया है कि वह गौर जिसे इंडियन बायसन भी कहते हैं, को श्रीलंका में फिर से बसाने में उसकी मदद करें। श्रीलंका में इंडियन बायसन को गवारास (Gavaras) के नाम से जानते हैं जो 17वीं शताब्दी में ही श्रीलंकाई द्वीप पर विलुप्त हो गया था। अगर इस प्रोजेक्ट को मंजूरी मिल जाती है तो यह भारत और श्रीलंका के बीच पहला ऐसा समझौता होगा जो वाइल्डलाइफ अथवा जूलोजिकल डिप्लोमेसी के विकसित हो रहे ग्लोबल ट्रेंड को बढ़ावा देगा। हाल के समय में कुछ पर्यावरणीय विशेषज्ञों ने कहा है कि वन्यजीव दो देशों के बीच जूलोजिकल एम्बेसडर के रूप में काम करते हैं।

भारत के विदेश मंत्रालय को हाल ही में श्रीलंका सरकार का यह प्रस्ताव मिला है जिसमें श्रीलंका ने 6 जीव-जंतुओं जिसमें इंडियन बायसन के अलावा, एक बुल और 3 गायें भी शामिल हैं, को पर्यावरणीय सहयोग के नाम पर भारत से प्राप्त करने की इच्छा जताई है। भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि श्रीलंका के इस प्रस्ताव को भारत के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को विचार करने के लिए भेज दिया है। वहीं श्रीलंका सरकार ने इस मामले में अपनी योजना को स्पष्ट करते हुए कहा है कि अगर उसे भारत से यह वन्यजीव उपहार प्राप्त हो जाता है तो वह अगले 5 साल के लिए ऐसे विलुप्त जीवों की कैप्टिव ब्रीडिंग का प्रोग्राम चलाएगा ताकि श्रीलंका में स्पीसीज रिकवरी के लक्ष्य को हासिल किया जा सके।

कैप्टिव ब्रीडिंग (Captive Breeding)

कैप्टिव ब्रीडिंग, जिसे कैप्टिव प्रोपेगेशन (Captive propagation) के रूप में भी जाना जाता है, जो पौधों या जानवरों को नियंत्रित वातावरण में बनाए रखने की प्रक्रिया है। जैसे- वन्यजीव भंडार, चिड़ियाघर, वनस्पति उद्यान और अन्य संरक्षण सुविधाएं।

श्रीलंका के सुप्रसिद्ध पर्यावरण संरक्षणविद रोहन पेथीयागोड़ा जिसे वर्ष 2022 का लिनीयन मेडल मिल चुका है, ने ही मूल रूप से यह प्रस्ताव श्रीलंका सरकार को दिया कि पड़ोसी देश भारत जो सदैव ही श्रीलंका को सहयोग सहायता देता रहा है, उससे पर्यावरणीय सहयोग को विस्तार दिया जाए। उल्लेखनीय है कि लिनीयन अवार्ड को जूलोजी के क्षेत्र का नोबेल पुरस्कार माना जाता है।

वहीं भारत के नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी के डायरेक्टर का कहना है कि कोई भी निर्णय करने के पहले इसका एक व्यवहार्यता अध्ययन (Feasibility Study) कराया जाएगा जिससे यह पता चल सके कि क्या ट्रांसलोकेटेड जीव श्रीलंका की परिस्थितियों में अनुकूलन कर पायेगा और उसका सर्वाइवल बना रहेगा अथवा नहीं?

दरअसल प्रजातियों के ट्रांसलोकेशन, रीइंट्रोडक्शन की नीति तथा कैप्टिव ब्रीडिंग के लिए एक देश द्वारा दूसरे देश को एनिमल्स के गिफ्ट या लोन की नीति आज जिस रूप में उभरी है, उसे ही वन्यजीव कूटनीति कहा जा रहा है। इससे दो देशों के बीच पर्यावरणीय सहयोग के साथ द्विपक्षीय संबंधों को भी मजबूती मिलती है। इससे दो देशों के बीच आपसी विश्वास बढ़ता है और सतत विकास लक्ष्यों को साझे रूप में प्राप्त करने की सोच को बढ़ावा मिलता है।

अमेरिका में जब अमेरिकी बायसन का सफाया हो गया था तब कनाडा ने अपने यहां से अमेरिका को बायसन देकर उसे फिर से अमेरिका की धरती पर बसाया था। हाल ही में ब्रिटेन ने भी अपने यहां यूरोपीय बायसन मंगाकर उसे अपनी भूमि पर फिर से रीइंट्रोड्यूस किया है। इन यूरोपियन बायसन को विसेंट भी कहते हैं। अनुमानित 10 हजार साल की अवधि के बाद यूनाइटेड किंगडम की धरती पर किसी वन्यजीव प्रजाति का ऐसा ट्रांसलोकेशन हुआ है। यूरोपियन बायसन स्टेपी बायसन के निकट संबंधी माने जाते हैं जो कुछ शताब्दियों पहले ब्रिटेन की धरती पर पाए जाते थे, लेकिन फिर विलुप्त हो गए और इसीलिए ब्रिटेन को यूरोप से बायसन मंगाने पड़े।

दुनिया के कई देशों ने वाइल्डलाइफ डिप्लोमेसी के जरिये वन्यजीवों के रीइंट्रोडक्शन की नीति पर काम करके, विलुप्त जीव-जंतुओं को अपने यहां बसाया है। इजराइल ने कई दशकों से पर्शियन फॉलो डियर को अपने यहां ट्रांसलोकेट कराया है। अरेबियन ओरेक्स और अन्य प्रजातियों को कहीं और से ले आकर नेगेव मरुस्थल (इजराइल) में छोड़ा गया है। वहीं दक्षिण अफ्रीका ने भी रंगभेद रोधी व्यवस्था के अंत के बाद कई अफ्रीकी देशों से अच्छे संबंधों के लिए चीते के निर्यात की नीति पर काम किया जिसे वाइल्डलाइफ या जूलोजिकल डिप्लोमेसी कहा गया है। नामीबिया से भारत को हाल ही में चीतों को गिफ्ट करने की बात भी भारत और अफ्रीका के संबंधों में एक नये युग की शुरुआत के रूप में देखी गई है।

भारतीय राजनेताओं द्वारा वाइल्डलाइफ डिप्लोमेसी के प्रयोग के उदाहरण:

जवाहरलाल नेहरू ने स्नेह और सद्भावना के दूत के रूप में 'इंदिरा' नाम के हाथी को 1949 में युद्धग्रस्त जापान के बच्चों को उपहार में दिया था। 1950 के दशक के दौरान भारत ने हाथियों को चीन, सोवियत संघ, अमेरिका, जर्मनी, तुर्की, ईरान, कनाडा और नीदरलैंड के चिड़ियाघरों में अच्छे भाव से भेजा था। नेहरू ने हाथियों को भारत के प्रतीक के रूप में 'बुद्धिमान और धैर्यवान' नाम से वर्णित किया था।

आधी सदी बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने हाथी को प्रतीक के रूप में भारत की भव्य छवि की मांग की। उन्होंने साल 2002 में कोपेनहेगन में तीसरे भारत-यूरोपीय संघ व्यापार शिखर सम्मेलन में कहा, 'भारतीय अर्थव्यवस्था की पहचान अक्सर हाथी से की जाती है। मुझे सादृश्य से कोई समस्या नहीं है। हाथियों को अपने विशाल शरीर के सभी अंगों को एक साथ आगे बढ़ने में समय लग सकता है, लेकिन एक बार जब वे वास्तव में चलना शुरू कर देते हैं, तो गति को मोड़ना, धीमा करना, रोकना या उलटना बहुत मुश्किल होता है और जब वे चलते हैं, तो जंगल हिल जाता है।'

वाइल्डलाइफ डिप्लोमेसी के साथ विदेशज प्रजातियों के आयात पर सतर्कता की भी जरूरत:

केंद्र सरकार ने विदेशज जानवरों के आयात को विनियमित करने के संबंध में एक एडवाइजरी जारी किया है। कोविड-19 महामारी ने 'वन्यजीवों के अवैध व्यापार तथा जूनोटिक रोगों के प्रसार' से संबंधित वैश्विक चिंताओं को उजागर किया है। इसी संदर्भ में भारत सरकार द्वारा यह कदम उठाया गया है।

> विदेशज जीवित प्रजातियां (Exotic live species), वे जीव तथा पौधे होते हैं, जिनको अधिकांशतः मनुष्यों द्वारा इनके मूल स्थान से अन्यत्र स्थानों पर ले जाया जाता है। भारत में भारी मांग वाले विदेशज जीवों में बॉल पाइथन, स्कारलेट मैकॉ, समुद्री कछुए, सुग ग्लाइडर, अफ्रीकन बंदर और भूरे अफ्रीकी तोते आदि सम्मिलित हैं।

विदेशज प्रजातियों की सूची:

एडवाइजरी के अनुसार, 'विदेशज जीवित प्रजातियों' के अंतर्गत 'वन्यजीवों तथा वनस्पतियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन' (CITES) की परिशिष्ट I, II तथा III में अधिसूचित लुप्तप्राय प्रजातियों के रूप में शामिल किया गया है, परन्तु 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत अधिसूचित प्रजातियों को शामिल नहीं किया गया है।

भारत में विदेशज जानवरों के आयात को सीमा शुल्क अधिनियम के तहत नियमित किया गया है, परन्तु वन्यजीव विशेषज्ञों द्वारा लंबे समय से भारत में विदेशज जानवरों के संबंध में कड़े कानूनों तथा दिशानिर्देशों की मांग की जा रही है। भारत में कई नागरिक 'वन्यजीवों तथा वनस्पतियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर अभिसमय (CITES) के अंतर्गत अधिसूचित विदेशज जानवरों को पालतू के रूप में रखते हैं। राज्य अथवा केंद्रीय स्तर पर ऐसी प्रजातियों से संबंधित कोई एकीकृत सूचना प्रणाली उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा, अक्सर इन दस्तावेजों की लंबी प्रक्रिया तथा जांच से बचने के लिए इन प्रजातियों को देश में अवैध रूप से तस्करी की जाती है।

राजव्यवस्था

हिजाब विवाद : मौलिक अधिकार का उल्लंघन या समान नागरिक संहिता की आवश्यकता

सन्दर्भः

कर्नाटक में हुए हिजाब विवाद के सन्दर्भ में मूल अधिकार के संरक्षण तथा समान नागरिक संहिता (यूसीसी) की आवश्यकता का विवाद निरंतर बढ़ रहा है।

परिचयः

कर्नाटक सरकार के द्वारा प्री-यूनिवर्सिटी स्कूलिंग के लिए स्कूल प्रशासन द्वारा निर्धारित यूनिफॉर्म को अनिवार्य बनाने के निर्णय के उपरांत धार्मिक स्वतंत्रता के मुद्दे पर एक नवीन बहस छिड़ गई। भारतीय संविधान के भाग-3 के अंतर्गत सभी व्यक्तियों को धार्मिक स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार प्राप्त है। यह मुद्दा स्पष्ट रूप से धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार तथा विद्यालय प्रशासन की स्वायत्तता में विरोधाभासी स्थिति को प्रदर्शित करता है। इन स्थितियों का मुख्य कारण यह है कि यहां राज्य धर्मनिरपेक्ष है जबकि समाज धार्मिक है।

हिजाब एक मौलिक अधिकार के रूप में:

हिजाब पहनने के अधिकार को मौलिक अधिकार मानने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए गए हैं-

- अनुच्छेद-15 किसी भी व्यक्ति को सार्वजनिक स्थान पर जाने के लिए धर्म के आधार पर विभेदन से प्रतिषेध करता है। इस प्रकार यह तर्क बन सकता है कि धार्मिक प्रतीक (हिजाब) के कारण किसी को विद्यालय (सार्वजनिक स्थल) में आने से रोकना, हिजाब पहनने वाली महिलाओं को धर्म के आधार पर विभेदन के संबंध में अनुच्छेद-15 का उल्लंघन होगा।
- यह सभी व्यक्तियों को अंतःकरण की स्वतंत्रता और धर्म को निर्बाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने का समान अधिकार प्राप्त है। यद्यपि यह अधिकार अत्यांतिक नहीं है तथा राज्य द्वारा इस स्वतंत्रता को लोक व्यवस्था, सदाचार, नैतिकता, स्वास्थ्य के आधार पर निर्बंधित किया जा सकता है तथा हिजाब पहनना, धर्म को मानने, आचरण करने तथा प्रचार के रूप में देखा जा सकता है।
- अनुच्छेद-29 भारत के किसी नागरिक को उसके संस्कृति के संरक्षण का अधिकार देता है।
- यह महिलाओं के अनुच्छेद-21(a) में वर्णित शिक्षा के अधिकार का भी हनन करेगा। इस प्रकार के धार्मिक प्रतीक चिन्ह (हिजाब) पर प्रतिबंध लगाने से यह भी संभव है कि मुस्लिम परिवार बालिकाओं की शिक्षा ग्रहण करने पर प्रतिबंध लगा दे। अंततः यह समस्या 'एजुकेशन फॉर ऑल' के तत्वार्थ के विरुद्ध होगी।
- कुछ लोगों का यह तर्क है कि हिजाब, सिक्खों की पगड़ी की तरह ही इस्लाम धर्म का प्रतीक है। हिजाब पहनने से रोका जाना, इन महिलाओं के धार्मिक स्वतंत्रता का हनन करता है।
- आमना विंत बशीर बनाम सीबीएससी मामले में केरल उच्च न्यायालय ने हिजाब को एक अनिवार्य धार्मिक अभ्यास माना है जिसे अनुच्छेद-25 के तहत संरक्षण प्राप्त है जो कि हिजाब पहनने को एक मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित करता है।

हिजाब पहनने से उत्पन्न समस्याएं:

- यह सत्य है कि भारत में धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है परन्तु यह अधिकार अत्यांतिक नहीं है। लोक व्यवस्था, सदाचार, नैतिकता, स्वास्थ्य के आधार पर इन्हें प्रतिबंधित किया जा सकता है।
- विद्यालय अथवा कॉलेज जैसे संस्थान के पास एक सीमा तक स्वायत्तता होती है तथा उन्हें यूनिफॉर्म निर्धारित करने का अधि कार है।
- इसके साथ ही हिजाब पहनने का अधिकार प्रदान करना अनुच्छेद-14 के अंतर्गत समानता के अधिकार का हनन होगा। हिजाब पहनने का अधिकार देने के बाद स्कूलों में एक यूनिफॉर्म के माध्यम से लाई गई समानता प्रभावित हो सकती है।
- कुछ लोगों का तर्क यह है कि मौलिक अधिकार का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में आवश्यक अधिकारों के समूह से है। आधुनिक समय में महिलाओं के लिए हिजाब की अनिवार्यता इस्लाम का अनिवार्य तत्व न होकर पितृसत्तात्मक मानसिकता द्वारा आरोपित किया गया है तथा धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर पितृसत्तात्मक मानसिकता को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता, क्योंकि यह महिलाओं के व्यक्तित्व के विकास को बाधित कर रही है।
- फातिमा तसनीन बनाम केरल राज्य मामले में केरल उच्च न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित किया है कि किसी संस्था के सामूहिक अधिकारों को व्यक्तिगत अधिकारों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस निर्णय के आलोक में हिजाब पहनने के अधिकार पर विद्यालय की सामूहिकता को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- हालाँकि हालिया मामले में कर्नाटक उच्च न्यायालय ने हिजाब पहनने के अधिकार को अनुच्छेद-25 के अंतर्गत अनिवार्य धार्मिक प्रथा मानने से इंकार कर दिया है।

क्या समान नागरिक संहिता आवश्यक है:

- वर्तमान में विवाह, विरासत, गोद लेने, उत्तराधिकार आदि जैसे मामलों को भारत में विभिन्न धार्मिक समुदायों के व्यक्तिगत कानूनों के अनुसार नियंत्रित किया जाता है। हिंदू धर्म में व्यक्तिगत कानून, विरासत, उत्तराधिकार, विवाह, गोद लेने, सह-पालन, अपने पिता के ऋणों का भुगतान करने के लिए बेटों के दायित्वों, पारिवारिक संपत्ति के विभाजन, संरक्षकता और धर्मार्थ दान से संबंधित कानूनी मुद्दों पर लागू होते हैं। इस्लाम में, व्यक्तिगत कानून, विरासत, वसीयत, उत्तराधिकार, विवाह, वक्फ, दहेज, संरक्षकता, तलाक, उपहार और कुरान से जुड़े मामलों पर लागू होते हैं।
- चूंकि भारत का समाज धार्मिक है तथा राज्य धर्मनिरपेक्ष, अतः समाज में धार्मिक स्वतंत्रता को अत्यंत व्यक्तिगत बनाने की आवश्यकता है। यह स्थिति राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में वर्णित यूनिफॉर्म सिविल कोड (अनुच्छेद-44) के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। यूनिफॉर्म सिविल कोड भारत में विवाह, तलाक, विरासत, गोद लेने जैसे मामलों में सभी धार्मिक समुदायों पर लागू एक कानून बनाने की मांग करता है।
- दिल्ली उच्च न्यायालय ने ये कहा है कि विभिन्न सिविल नियम समुदायों के मध्य आपसी संघर्ष को बढ़ाते हैं।
- यूसीसी के सन्दर्भ में डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि यूसीसी वांछनीय होने के बावजूद, इसके कानूनी निर्माण को अधिक उपयुक्त समय तक टाल दिया जाना चाहिए। अतः यह डॉ. अम्बेडकर द्वारा परिकल्पित महिलाओं और धार्मिक अल्पसंख्यकों सहित कमजोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करना है, जबकि एकता के माध्यम से राष्ट्रवादी उत्साह को बढ़ावा देना भी है।
- हाल ही में उत्तराखंड के विधानसभा चुनाव में समान नागरिक संहिता लागू करना एक चुनावी मुद्दा बना था। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने कहा कि यूसीसी राज्य में सभी के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देगा। यह सामाजिक सद्भाव को बढ़ाएगा, लैंगिक न्याय को बढ़ावा देगा, महिला सशक्तिकरण को मजबूत करेगा और राज्य की असाधारण सांस्कृतिक-आध्यात्मिक पहचान तथा पर्यावरण की रक्षा करने में मदद करेगा।
- उच्चतम न्यायालय ने कई बार केंद्र सरकार को समान नागरिक संहिता विधेयक न प्रस्तुत करने के लिए जवाब मांगा है। उदाहरण स्वरुप-मोहम्मद अहमद खान बनाम शाह बानो बेगम और अन्य (1985), जॉर्डन डिएंगडेह बनाम एस. एस. चोपड़ा (1985), जॉन वेल्लामाटोम एवं अन्य बनाम भारत संघ (2003) इत्यादि।
- समान नागरिक संहिता के द्वारा विद्यालय स्तर पर हिजाब की अनिवार्यता समाप्त होगी तथा धर्म के अंदर पड़े रूढ़िवादी नियमों को संशोधित किया जा सकेगा।

अभी भारत को समान नागरिक संहिता की आवश्यकता नहीं है:

- हालाँकि 2018 में विधि आयोग ने यह स्पष्ट किया था कि यूसीसी भारत के लिए 'इस स्तर पर न तो आवश्यक है और न ही वांछनीय है'। यह कहीं न कहीं भारत की विविधता को प्रभावित करेगा।
- विधि विशेषज्ञ यह शंका भी जताते हैं कि क्या समान नागरिक संहिता समानता को सुनिश्चित करने में सफल होगा? क्योंकि 'कोड' का मतलब हर परिस्थिति में एक ही कानून नहीं है। इसका मतलब या तो एक अधिनियमन जैसे भारतीय दंड संहिता, या हिंदू कोड बिल हो सकता है जिसमें तीन अलग-अलग अधिनियम शामिल हैं।
- इसके साथ ही हिन्दू धर्म के लिए लाये गए कोड अब तक अंतर्जातीय विवाह, लिंगभेद जैसी समस्याओं को निवारित करने में सफल नहीं हुए हैं।

अन्य तथ्य:

- भारत में प्रस्तावना तथा भाग-3 का अनुच्छेद-25 से 28 तक धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार देते हैं।
- यूसीसी की उत्पत्ति औपनिवेशिक भारत में हुई, जब ब्रिटिश सरकार ने 1835 में अपराधों, सबूतों और अनुबंधों से संबंधित भारतीय कानून के संहिताकरण में एकरूपता की आवश्यकता पर जोर देते हुए सिफारिश की कि हिंदुओं और मुसलमानों के व्यक्तिगत कानूनों को इस तरह के संहिताकरण से बाहर रखा जाए।
- औपनिवेशिक सरकार ने 1941 में हिंदू कानून को संहिताबद्ध करने के लिए बी. एन. राव समिति का गठन किया। राव समिति की रिपोर्ट का मसौदा बी. आर. अम्बेडकर की अध्यक्षता में एक प्रवर समिति को प्रस्तुत किया गया था, जिस पर संविधान को अपनाने के बाद 1951 में चर्चा हुई थी।
- यही हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 का आधार था।
- गोवा एक मात्र राज्य है जहाँ समान नागरिक संहिता लागू है।

निष्कर्ष:

यह सत्य है कि हिजाब एक प्रकार का धार्मिक पहचान है जिसका संरक्षण आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार से विद्यालयों की स्वायत्तता भी आवश्यक है। यदि एक धर्म के लोगों को उनकी धार्मिक पहचान धारण करने का अधिकार दिया गया तो अन्य धर्म के लोग भी इसकी मांग कर सकते हैं जो साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे सकता है। हालाँकि यह मामला अभी न्यायालय में विचाराधीन है। इसके साथ ही सरकार को चाहिए की पहले विवाह की आयु, तलाक के नियमों का नियमन करके धीरे-धीरे समान नागरिक संहिता की तरफ बढें क्योंकि वास्तविक विधि वहीं होती है जो सम्प्रभू द्वारा निर्मित हो तथा समाज द्वारा स्वीकृत हो।

राष्ट्रीय मुद्दे

भारत में बाढ़ की स्थिति : सतत और उन्नत योजना समय की मांग

संदर्भः

भारत में घटित होने वाली प्राकृतिक आपदाओं में सबसे अधिक घटनाएं बाढ़ की देखी जाती हैं जो प्रत्येक वर्ष अत्यधिक तबाही का कारण बनती है। भारत में जहां एक ओर लोग मानसून के आते ही खुशी से झूम उठते हैं और गर्मी से राहत महसूस करते हैं, तो वहीं कुछ हिस्सों में हर साल तबाही देखने को मिलती है। लेकिन इस साल असम में तो मानसून आगमन से पूर्व ही लगातार भारी बारिश ने अधिकांश भाग को जलमग्न कर दिया था और मानसून विस्फोट के साथ तो भारत के कई हिस्सों (केरल, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, ओडिसा, तेलंगाना आदि) में भारी बारिश के कारण बाढ़ आ गई थी।

बाढ़ क्या है?

- बाढ़ एक ऐसी स्थिति है जिसमें कोई निश्चित भू-क्षेत्र अस्थायी रूप से जलमग्न हो जाता है। बाढ़ या तो अचानक आ सकती है या धीरे-धीरे इसका निर्माण होता है। जब नदी का जल उफान के समय जल वाहिकाओं को तोड़ता हुआ मानव बस्तियों और आस पास के क्षेत्रों में पहुंच जाता है तब बाढ़ जैसी स्थिति होती है। कभी-कभी झीलों और आंतरिक जल क्षेत्रों में भी क्षमता से अधिक जल के कारण भी बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

भारत में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रः

- भारत में कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 4 लाख हेक्टेयर क्षेत्र बाढ़ प्रवण है। इस साल भारी बारिश और बाढ़ से भारत के कई राज्यों के हालात बहुत चिंताजनक रहे हैं। गुजरात और महाराष्ट्र इसमें सबसे ज्यादा प्रभावित हुए, वहीं असम, तेलंगाना, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर भी भीषण बारिश की चपेट में रहे। बाढ़ तथा लगातार बारिश से कई लोगों ने अपनी जान गंवाई है। जहां असम के 33 जिलों में से 18 जिले बाढ़ की चपेट में आए जिससे लगभग 200 लोगों की मृत्यु हुई और दस लाख से अधिक लोग तथा पशु-धन प्रभावित हुए हैं, वहीं महाराष्ट्र व गुजरात के हालात तो और भी ज्यादा खराब थे। 2016-2021 के बीच चक्रवात, अचानक बाढ़ और भूस्खलन जैसी चरम घटनाओं ने 3.6 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में फसलों को नुकसान पहुंचाया है, जिससे देश में किसानों को 3.75 अरब डॉलर का नुकसान हुआ है। इन्हीं जोखिमों को देखते हुए पिछले साल एडीबी ने चेन्नई के लिए इंटीग्रेटेड अर्बन फ्लड मैनेजमेंट हेतु 251 मिलियन डॉलर का ऋण प्रदान किया था।
- भारत में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के वितरण में ब्रह्मपुत्र नदी का क्षेत्र, मध्य व दक्कन क्षेत्र, गंगा नदी क्षेत्र, उत्तर-पश्चिमी नदी क्षेत्र शामिल हैं। भारत में गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना बेसिन में देश के कुल नदी प्रवाह का लगभग 60 प्रतिशत है।

भारत में बाढ़ के कारणः

- जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून में बाढ़ का खतरा विश्वभर में मंडराने लगता है। पर्यावरणविद और जलवायु परिवर्तन जोखिम विश्लेषक हर साल बाढ़ के पीछे के कारणों का विश्लेषण करते हैं। हालांकि भारत में बाढ़ का मुख्य कारण भारतीय मानसून की अनिश्चितता तथा वर्षा ऋतु के दौरान भारी जल प्रवाह है। इसके अलावा और भी कारण बाढ़ के लिए उत्तरदायी है। जैसेः

1. प्राकृतिक कारकः

- भारत की भौगोलिक स्थिति, असमित भू-आकृतिक विभिन्नताएं।
- नदियों का अतिप्रवाह।
- ग्लेशियरों का पिघलना तथा बादल फटना।
- तूफान की लहरें या सुनामी।
- ढ़लुआ किनारों वाली घाटियां।
- अपवाह तंत्र की कमी।

2. मानव सृजित कारकः

- बांध, बैराज और तटबंधों का टूटना।
- जलाशय से पानी का छोड़ा जाना।
- वनों की कटाई व वनस्पतियों की कमी।
- निर्माण गतिविधियों की निरंतरता।
- तेजी से बढ़ते औद्योगिकरण से शहरी बाढ़ का होना।

बाढ़ कैसे विभिन्न राज्यों को प्रभावित करती है?

ब्रह्मपुत्र की घाटी तथा गंगा नदी के निचले क्षेत्र में बाढ़ का प्रकोप अधिक होता है। प्रति वर्ष लगभग पाँच करोड़ हेक्टेयर भूमि बाढ़ग्रस्त हो जाती है, जबकि तमिलनाडू में लौटते मानसून के समय होने वाली भारी वर्षा बाढ़ ले लिए उतरदायी है, जिसका मानव समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

- कृषि भूमि एवं ग्रामीण तथा नगरीय बस्तियों के बार-बार बाढ़ ग्रस्त होने का मानव समाज और पारिस्थितिक तंत्र पर खराब प्रभाव पड़ता है।
- सड़कें, पुल, रेल और आधारभूत संरचनाएं अस्त व्यस्त हो जाती हैं। लाखों लोग बेघर हो जाते हैं तथा पशु-धन की हानि होती है जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

- बाढ़ से भौतिक और आर्थिक नुकसान तो होता ही है, इसके साथ ही सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं। जैसे-विस्थापन की समस्या, मानसिक तनाव आदि।
- बाढ़ से जलमग्न क्षेत्रों में विभिन्न रोग उत्पन्न होते हैं। कई जगहों पर मच्छरों और कीड़ों के प्रजनन के किए जमा होने वाला पानी मलेरिया और डेंगू जैसी विभिन्न बीमारियों का कारण बन जाता है। हाल ही में पेचिश, न्यूमोनिक प्लेग और सैन्य बुखार के मामलों में वृद्धि हुई है।
- जैव प्रजातियों की हानि।
- इसके साथ ही बाढ़ के कुछ सकारात्मक परिणाम भी देखे जाते हैं। जैसे बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में प्रतिवर्ष नई जलोढ़ मिट्टी की परत फैल जाती है जिससे खेतों की उर्वरता बढ़ती है और कृषि के उत्पादन में वृद्धि होती है। नदी मार्गों के मध्य में बना माजुली द्वीप (असम) प्रत्येक वर्ष बाढ़ग्रस्त होता है। इससे इसकी मृदा बहुत उपजाऊ हो जाती है, जिससे यहां चावल का अच्छा उत्पादन किया जाता है। बाढ़ से भू-जल संभरण भी होता है।

बाढ़ रोकने के उपाय:

हालांकि बारिश की घटनाएं, ग्लेशियरों का पिघलना, जल निकासियों और तूफानों को रोकना मुश्किल हो सकता है लेकिन इनके अधिकांश मामलों में कमी की जा सकती है। जैसे:

- जलाशयों के संचालन प्रक्रिया को इस प्रकार विकसित करना कि बाढ़ को सहने की क्षमता प्राप्त हो।
- जलग्रहण क्षेत्र में वृक्षारोपण करके मृदा अपरदन की दर को कम किया जाये तथा विभिन्न भागों में बोरिंग करके कुओं का निर्माण किया जाए।
- पुनर्वनीकरण, जल निकास तंत्र में सुधार, वाटर-शेड प्रबंधन तथा मृदा संरक्षण जैसे उपाय किये जायें।
- नदी जोड़ो परियोजना एक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत कर सकती है।
- नदियों तथा जलधाराओं के प्रवाह मार्ग में आने वाले अवरोधों को दूर करना चाहिए तथा समय - समय पर नदी तलहटों की सफाई होनी चाहिए।

केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा बाढ़ प्रबंधन हेतु शुरू किए गए कार्यक्रम:

- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005-** इसके तहत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एवं राष्ट्रीय आपदा मोचन बल का गठन किया गया।
- **बाढ़ प्रबंधन और सीमा क्षेत्र कार्यक्रम-** इसके तहत प्रभावी बाढ़ प्रबंधन, भू-क्षरण पर नियंत्रण, समुद्री तटीय क्षेत्रों के क्षरण के रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करना है।
- **राष्ट्रीय जल नीति, 2012-** इसके तहत संरचनात्मक और गैर-संरचनात्मक उपायों के माध्यम से बाढ़ का पूर्वानुमान लगाना तथा वास्तविक समय आंकड़ा संग्रहण प्रणाली का प्रयोग करते हुए आधुनिकीकरण किया जाना है।
- बाढ़ की बारंबारता में कमी करना, समय-समय पर बाढ़ से संबंधित क्षेत्रों में राहत कार्य करना आदि।

आगे की राह:

हालांकि सरकार द्वारा बाढ़ प्रबंधन हेतु अनेक कार्य किए जाते रहे हैं, आपदा के समय राहत सहायता प्रदान की जाती है लेकिन ये सब पर्याप्त नहीं है। बाढ़ प्रबंधन के लिए सतत एवं उन्नत योजना आज समय की मांग है। अतः सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिए। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में भवन निर्माण संबंधित कानूनों का कड़ाई से पालन करना, नदियों के स्लूस गेट (जलद्वार) का निर्माण किया जाना चाहिए, ऐतिहासिक तथ्यों का संकलन करना चाहिए, अवसंरचनात्मक तैयारी पर ध्यान देना चाहिए, स्वास्थ्य, बचाव राहत संबंधित कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना, IFLOWS (एकीकृत बाढ़ चेतावनी प्रणाली) जैसे प्रणालियों का उपयोग करना इत्यादि भी बहुत आवश्यक है। हाइड्रोमेट्रोलॉजिकल इसके लिए एक अच्छा समाधान हो सकता है। बाढ़ पर पूरे तौर पर नियंत्रण संभव नहीं है, अतः हमें नदी से जुड़ी प्रौद्योगिकी संरचनाओं का उपयोग करते हुए, वैकल्पिक उपायों की ओर ध्यान देना चाहिए।

अर्थव्यवस्था

विदेशी मुद्रा भंडार में कमी और रूपये में गिरावट: भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में चुनौतियां

सन्दर्भ :

हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने बताया कि पिछले 13 महीनों में भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर की गिरावट आई है। इसके साथ ही रुपया अपने सर्वकालिक न्यूनतम स्तर को छूते हुए 1 डॉलर के मुकाबले लगभग 83 रुपये के मूल्य पर पंहुच गया। ये दोनों स्थितियां भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में एक चुनौती है।

विदेशी मुद्रा भंडार:

विदेशी मुद्रा भंडार से तात्पर्य आरबीआई द्वारा विदेशी मुद्रा में आरक्षित संपत्ति से है जिसमें बॉण्ड, ट्रेजरी बिल और अन्य सरकारी प्रतिभूतियाँ शामिल हैं। अधिकांश विदेशी मुद्रा भंडार अमेरिकी डॉलर में रखा जाता है।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है:

- विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियाँ।
- स्वर्ण भंडार।
- विशेष आहरण अधिकार (SDR)
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के पास रिजर्व ट्रेंच।

वर्तमान परिदृश्य:

- सितंबर, 2021 के बाद से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर की गिरावट आई है जो 15 अक्टूबर, 2022 तक लगभग 532 अमेरिकी डॉलर हो गया था।
- ध्यातव्य है कि भारतीय रुपया एक स्वतंत्र रूप से फ्लोटिंग मुद्रा है और इसकी विनिमय दर बाजार द्वारा निर्धारित होती है। RBI का इस पर प्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं रहता।
- हालांकि उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत का प्रदर्शन काफी बेहतर रहा है।

विदेशी मुद्रा भंडार तथा रुपये में गिरावट के मुख्य कारण:

- **रुपये का समर्थन:** भारत की मुद्रा 'रुपया' में तेजी से गिरावट हो रही है। इस गिरावट को संतुलित करने के लिए आरबीआई अपने विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर का विक्रय कर रहा है। यद्यपि यह रुपये की मुक्त गिरावट को रोकने और बाजार में अस्थिरता को कम करने के लिये आवश्यक है।
- **अमेरिकी फेडरल रिजर्व की आक्रामक नीति:** अमेरिका के फेडरल रिजर्व ने पूंजी बहिर्वाह (Outflow) को रोकने के लिए मौद्रिक नीति को सख्त करने और ब्याज दरों में वृद्धि की है। इस कदम के फलस्वरूप कई विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक भारतीय बाजारों के स्थान पर अमेरिकी बाजार में निवेश कर रहे हैं। ये FPIs वित्तीय और आईटी सेवाओं के विक्रेता तथा दूरसंचार एवं पूंजीगत वस्तुओं के खरीददार थे। ये सभी क्षेत्रक विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं।
- **वैश्विक अर्थव्यवस्था की समस्या:** 2019 के कोरोना तथा कोरोनाजन्य लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया था। तदोपरांत रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति का बढ़ना भी भारत को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।
- **डीग्लोबलाईजेशन:** अमेरिकी मंदी के बाद ही कई देशों में संरक्षणवाद की प्रक्रिया लागू की गई। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे डीग्लोबलाईजेशन में परिवर्तित हो रही है। भारत वैश्वीकरण के लाभ लेने की स्थिति में पहुंच ही रहा था कि वैश्विक स्तर पर आये इस संरक्षणवाद ने भारत की विदेशी मुद्रा अर्जक क्षमता को प्रभावित किया है।
- **अवमूल्यन:** प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की कीमत में वृद्धि और सोने की कीमतों में गिरावट ने भी विदेशी मुद्रा भंडार में आई कमी में भूमिका निभाई।
- **मुद्रास्फीति दर:** भारत में बढ़ रही मुद्रास्फीति तथा निवल आयातक होने के कारण भारत को विदेशी मुद्रा व्यय करनी पड़ती है। इसके साथ ही बाजार मुद्रास्फीति में मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तन का कारण बनता है। उदाहरण के लिये अन्य देश की तुलना में कम मुद्रास्फीति दर वाला देश अपनी मुद्रा के मूल्य में वृद्धि देखेगा।
- **भुगतान संतुलन:** भारत एक निवल आयातक है। इसके साथ ही क्रूड ऑयल तथा सोने का व्यापक आयात भारत द्वारा किया जाता है जिसमें अन्य विदेशी मुद्रा का व्यय होता है। इसके साथ ही अन्य उत्पादों के आयात पर विदेशी मुद्रा को अधिक खर्च करने के कारण चालू खाते में घाटा, निर्यात की बिक्री से होने वाली आय से मूल्यह्रास का कारण बनता है। यह किसी देश की घरेलू मुद्रा की विनिमय दर में उतार-चढ़ाव को बढ़ावा देता है।
- **सरकारी ऋण:** भारत का विदेशी ऋण लगातार बढ़ रहा है। इस ऋण का ब्याज भी विदेशी मुद्रा में देय होता है। विगत वर्ष कोरोना के कारण होने वाले अप्रत्याशित व्यय ने सरकारी ऋण की मात्रा में व्यापक वृद्धि की है जिससे राजकोषीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता नही मिली।

उपरोक्त कारणों से जहाँ एक तरफ देश की मुद्रा में गिरावट हो रही है, वहीं दूसरी तरफ विदेशी मुद्रा तेजी से कम हो रही है। पिछले 7 सप्ताह से विदेशी मुद्रा भण्डार में निरंतर कमी आ रही है। ये समस्याएं देश को 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने तथा विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के मार्ग में बाधक बन रही हैं।

सरकार द्वारा इस समस्या से निजात पाने के लिए उठाए गये कदम:

- भारत सरकार निरंतर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है। इन प्रयासों के चलते भारत का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इस वर्ष अपने सर्वोच्च स्तर लगभग 83 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है।
- भारत सरकार निरंतर द्विपक्षीय समझौते कर रही है। पिछले वर्ष भारत ने यूएई, ऑस्ट्रेलिया के साथ द्विपक्षीय समझौतों को आगे बढ़ाया है, वहीं ब्रिटेन के साथ मुक्त व्यापार संधि अंतिम चरण में है।
- भारत अब बहुपक्षीय समझौतों से दूरी बना रहा है जहां ऐसे देश सम्मिलित हैं जो भारत से द्विपक्षीय व्यापार में भुगतान संतुलन के सकारात्मक स्थिति में हो। उदाहरण के लिए RCEP से बाहर निकलना।
- भारत सरकार लगातार स्टार्टअप इंडिया, इन्वेस्ट इंडिया तथा डिजिटल इंडिया जैसे इनीशिएटिव्स के माध्यम से भारत में निवेश को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है। यह लगातार भारतीय युवाओं को व्यापार की तरफ अग्रसर कर रही है जो देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में सहायक होगा।
- सरकार निरंतर वस्तुओं की मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ाने के लिए प्रोडक्शन लिंक इनिशिएटिव चला रही है जो सेमीकंडक्टर सहित 14 क्षेत्रों के लिए दिया जा रहा है।
- भारत सरकार निरंतर स्वच्छ ऊर्जा की तरफ निवेश को बढ़ा रही है। यह क्रूड ऑयल पर निर्भरता को कम करेगा जिससे अधिक विदेशी मुद्रा व्यय नहीं होगी।
- भौतिक स्वर्ण में निवेश को रोकने के लिए सरकार द्वारा गोल्ड डी-मोनेटाइजेशन स्कीम 'सॉवरेन गोल्ड बांड' जैसे प्रपत्र लाए गए हैं जो भौतिक स्वर्ण के ही समरूप है। यह स्वर्ण के लिए खर्च किए जाने वाले विदेशी मुद्रा को बचाने में सहायक होगा।
- भारत वस्तुओं के मामले में व्यापार संतुलन में नकारात्मक स्थिति में है, इसीलिए भारत सरकार द्वारा मेक इन इंडिया योजना चलाई गई जो भारत में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा दे रही है।
- भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी व्यापार को रुपये से सेटल करने का निर्देश दिया। यह कदम भारत में विदेशी मुद्रा के व्यय को रोकने में सहायक होगा।

इन क्षेत्रों पर फोकस करने की आवश्यकता:

- भारत का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मुख्य रूप से सिंगापुर जैसे टैक्स हैवन देशों से आता है। यह मुख्य रूप से कर परिहार (Tax Avoidance) के कारण किया जाता है। भारत लगातार कर परिहार से बचने के लिए समझौते कर रहा है।
- भारत में अभी भी नौकरशाही के कारण बिजनेस के आरंभ होने में देरी होती है जिसके लिए भारत सरकार निरंतर प्रयासरत है तथा कई क्षेत्रों में सिंगल विंडो क्लीयरेंस स्थापित कर रही है।
- कोरोना जनित लॉकडाउन के कारण स्पेशल इकोनामिक जोन की क्रियाविधि भी प्रभावित हुई है। ध्यातव्य है कि स्पेशल इकोनामिक जोन की अवधारणा विदेशी मुद्रा अर्जित क्षेत्र के रूप में की गई थी।
- भारत को अपने बंदरगाह अवसंरचना तथा सड़क अवसंरचना को बढ़ाने की आवश्यकता है। सरकार निरंतर भारतमाला परियोजनाओं के द्वारा इस क्षेत्र में प्रयासरत है।
- इसके साथ ही साथ एनर्जी पावर्टी, महंगा ऋण, एनपीए की समस्या इत्यादि ऐसी समस्याएं हैं जिन पर सरकार को अभी काम करने की आवश्यकता है।
- भारत को बहुत समय से लंबित साफ्टा (दक्षेश का मुक्त व्यापार समझौता) को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण शब्द एवं तथ्य:

- **भुगतान संतुलन:** भुगतान संतुलन का अर्थ किसी देश का अन्य संपूर्ण विश्व के साथ व्यापार के बैलेंस शीट से है। भारत ऐतिहासिक रूप से भुगतान संतुलन नकारात्मक देश रहा है।
- **व्यापार संतुलन:** व्यापार संतुलन का तात्पर्य किसी एक देश का किसी अन्य देश के साथ आयात-निर्यात से है। उदाहरण के लिए भारत, अमेरिका के साथ व्यापार संतुलन अधिशेष तथा चीन के साथ व्यापार संतुलन घाटे में रहता है।
- **प्रोडक्शन लिंक इनीशिएटिव:** देश में वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना है जिसमें वस्तुओं के प्रोडक्शन के अनुपात में सरकार कंपनियों को इनीशिएटिव्स देती है।
- **मेक इन इंडिया:** सरकार द्वारा मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ाने के लिए सितम्बर, 2014 से चलाई जा रही महत्त्वाकांक्षी योजना है।
- **विशेष आहरण अधिकार (SDRs):** विशेष आहरण अधिकार को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund-IMF) द्वारा 1969 में अपने सदस्य देशों के लिये अंतर्राष्ट्रीय आरक्षित संपत्ति के रूप में बनाया गया था। SDR न तो एक मुद्रा है और न ही IMF पर इसका दावा किया जा सकता है, बल्कि यह IMF के सदस्यों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग करने योग्य मुद्राओं पर एक संभावित दावा है।

निष्कर्ष:

- भारत तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। विश्लेषकों के अनुसार आने वाले कुछ समय में ही भारत जर्मनी को पछाड़कर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। हालांकि इस लक्ष्य के समक्ष चुनौतियां भी अधिक हैं परंतु भारत सरकार निरंतर प्रयासरत है। हालिया समय में देश में हुए व्यापार वृद्धि तथा सरकार की आकांक्षा से, भारत तेजी से तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है।

अन्तर्राष्ट्रीय

नाटो, पुतिन की महत्त्वाकांक्षा और वैश्विक समीकरणों के बीच भारत की स्थिति

रूस-यूक्रेन के बीच जारी संघर्ष ने विश्व भर के कूटनीतिक समीकरणों को एक असहज स्थिति में डाल दिया है। विभिन्न राष्ट्रों में यह गंभीर सोच विचार का विषय बना है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा, सुरक्षा परिषद या अन्य फोरमों की बैठक में किसके पक्ष में मतदान किया जाए? या वोटिंग प्रक्रिया से अनुपस्थित रहा जाए, लेकिन इसके बावजूद एक बात पर भारत सहित सभी राष्ट्र सहमत हो रहे हैं कि यूक्रेन मुद्दे का हल संवाद और कूटनीतिक मार्ग से एवं लोकतांत्रिक मूल्यों का अनुसरण करते हुए ही होना चाहिए, क्योंकि वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए पूर्वनिर्धारित शर्त यहीं है। विश्व को तृतीय विश्व के अटकलों से दूर करने के लिए भारत जैसे देशों के निर्णायक दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से सामने आने की जरूरत थी और इसलिए भारत ने पिछले डेढ़ दो माह में यूक्रेन मुद्दे पर अपने स्पष्ट दृष्टिकोण से विश्व समुदाय को अवगत कराया है।

77वें संयुक्त राष्ट्र महासभा असेंबली में विश्व के नेताओं को संबोधित करते हुए भारत के विदेशमंत्री ने कहा था कि 'हमसे अक्सर पूछा जाता है कि हम किसके पक्ष में है? हमारा उत्तर हर बार सीधा और ईमानदार होता है। भारत शांति के पक्ष में खड़ा है और मजबूती से उसी के साथ खड़ा रहेगा। हम उस पक्ष के साथ खड़े हैं जो संयुक्त राष्ट्र चार्टर और उसके मौलिक सिद्धांतों का सम्मान करता है। हम उस पक्ष के साथ हैं जो बातचीत और कूटनीति के जरिए ही इस मुद्दे का हल निकालने की बात करता है। हम उन लोगों के पक्ष में हैं जो अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

भारतीय विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने रूस-यूक्रेन युद्ध की वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर का जिक्र करते हुए कहा कि इससे तेल, खाद्य और उर्वरक की उपलब्धता पर असर होगा तथा इसकी कीमतें बढ़ेंगी। इस संघर्ष का जल्द से जल्द समाधान निकालना हम सभी के सामूहिक हित में है।

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र महासभा का आपातकालीन विशेष सत्र, यूक्रेन संघर्ष को लेकर बुलाया गया था जिसमें यूक्रेन के क्षेत्रों पर रूसी कब्जे की निंदा करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव के पक्ष में 143 सदस्यों ने वोट किया, जबकि 5 सदस्यों ने इसके विरोध में मतदान किया, वहीं भारत समेत 35 देशों ने वोटिंग में हिस्सा लेने से मना किया था। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने हाल ही में यूक्रेन के रूसी कब्जे वाले इलाकों दोनेत्स्क, लुहांस्क, खेरसॉन और जापोरिज्जिया में हुए कथित जनमत संग्रह पर चर्चा के लिए यह बैठक बुलाई थी।

वहीं संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की स्थायी प्रतिनिधि लिंडा थॉमस-ग्रीनफील्ड ने सुरक्षा परिषद की बैठक में बताया कि पिछले हफ्ते 100 से अधिक देशों के नेता संयुक्त राष्ट्र चार्टर के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए न्यूयॉर्क में एकत्रित हुए थे।

वैश्विक राजनीति की भेंट चढ़ा यूक्रेनः

यूक्रेन ने 24 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाया था। इसी दिन वह सोवियत संघ से अलग होकर एक स्वतंत्र संप्रभु देश के रूप में विश्व पटल पर आया था। लगभग तीन दशक बाद उसे एक बार फिर अपनी आजादी और संप्रभुता के अधिकार के लिए रूस के साथ लड़ाई लड़नी पड़ रही है लेकिन विश्व राजनीति में तो यह आम बात ही है कि कब दो देशों के बीच विवाद शुरू हो जाएं? या राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों के मुद्दे पर अड़े रहते हुए विश्व को प्रभावित करने लगते हैं।

रूस यूक्रेन संघर्ष ने विश्व में पॉवर पॉलिटिक्स को नया ही मोड़ दे दिया है। वैश्विक शक्ति और क्षेत्रीय शक्ति के नए केंद्रों का उभार शुरू हो गया है। विश्व राजनीति में बहुपक्षीयतावाद कमजोर दिखाई दे रहा है और ट्रेड वार, मिलिट्री वार, परसेप्शन वार, साइबर वार के बीच फंसी दुनिया नए मूल्यों का सामना कर रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध का आधार लेकर कई देश भौगोलिक अतीत के विवादित पन्नों को खोलने में लग सकते हैं। इसी आधार पर विश्लेषक कह रहे हैं कि चीन ताइवान और अरुणाचल प्रदेश पर अपने भू-क्षेत्र के दावों को लेकर अति आक्रामक हो सकता है, वहीं रूस- यूक्रेन युद्ध

के आधार पर ही भारत में एक बड़े वर्ग का मानना है कि भारत को पीओके का अधिग्रहण कर लेना चाहिए।

रूस-यूक्रेन का युद्ध अप्रत्याशित रूप से लंबा खिंच गया। इसके पीछे क्या कारण हैं? इस पर कई अंतरराष्ट्रीय विश्लेषक अपने दृष्टिकोण और राय पेश कर रहे हैं। इसमें एक जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात सामने आ रही है, वह यह है कि यूक्रेन का लगातार नाटो का सदस्य बनने की इच्छा जाहिर करते रहना, यूरोपीय संघ का सदस्य बनने के प्रयास, अमेरिका और यूरोपीय देशों से सहायता लेने की मंशा और रूस का सैन्य प्रतिकार करने की मंशा दिखाना वह प्रमुख कारण है जिन्होंने रूसी राष्ट्रपति पुतिन को इस युद्ध के लिए मजबूर किया। अगर यूक्रेन गंभीर स्थिति को देखते हुए, समय रहते नाटो से जुड़ने की मंशा को छोड़ देता और इस बात का प्रदर्शन न करता कि वह अमेरिका सहित पश्चिम के सहयोग से अपने को पूरी तरह सुरक्षित महसूस करता है, तो शायद रूस इतना आक्रामक नहीं होता। अमेरिका और नाटो सहित अन्य यूरोपीय देशों ने यूक्रेन को जो आश्वासन दिए थे, उस पर वो प्रतिबद्ध नहीं रह सके। जब यूक्रेन को नाटो और अमेरिका का कुछ हद तक सहयोग मिलना शुरू हुआ तब तक काफी देर हो चुकी थी। अमेरिका ने कई आर्थिक प्रतिबंध लगाए लेकिन इससे अधिक वह यूक्रेन के लिए कुछ नहीं कर सका। पूरे युद्ध में सबसे बड़ा सवाल अमेरिका पर खड़ा किया गया। युद्ध से पहले अमेरिका लगातार रूस को यूक्रेन पर हमले को लेकर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देता रहा, लेकिन जब युद्ध हुआ तो राष्ट्रपति जो बाइडेन ने स्पष्ट कर दिया कि अमेरिकी सेना, यूक्रेन में रूसी सेना के साथ नहीं टकराएगी।

NATO को जानिए

- नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन यानी NATO की स्थापना 1949 में हुई थी।
- NATO की स्थापना का उद्देश्य सोवियत संघ के बढ़ते प्रभाव से मुकाबला करना था।
- 1949 में जब NATO बना तो इसके अमेरिका समेत 12 संस्थापक सदस्य थे।
- NATO एक सैन्य गठबंधन है, जिसके अब अमेरिका, ब्रिटेन समेत 30 सदस्य हैं।
- NATO के सदस्य देशों पर अगर कोई और देश हमला करे, तो इसके सदस्य देश उसका जवाब देते हैं।
- यूक्रेन चाहता है NATO का सदस्य बनना, रूस कर रहा है इसका विरोध।

दरसअल अमेरिका का मानना है कि रूस और उसकी सेना एक-दूसरे के साथ भिड़ेंगे तो विश्वयुद्ध जैसी स्थिति हो जाएगी। अमेरिका का मानना था कि उसके मदद के बाद कई और देश भी इस युद्ध में शामिल हो सकते हैं जिसके नतीजे पूरे विश्व को भुगतने पड़ सकते हैं। अमेरिका ने काटसा (CAATSA) कानून के तहत रूस को घोषित तौर पर शत्रु देश का दर्जा दे रखा है। वह क्वाड के जरिये चीन के खिलाफ जो भी संदेश देता रहा है उससे रूस को भी अप्रत्यक्ष रूप से संदेश मिलता रहा है कि अमेरिका सागरीय सुरक्षा को खतरे में डालने वाले देशों के विरुद्ध खड़ा मिलेगा।

अमेरिका के यूक्रेन में सेना नहीं भेजने के पीछे कूटनीतिक कारण भी है। यूक्रेन-अमेरिका का पड़ोसी देश नहीं है और न ही उसका कोई सैन्य अड्डा यूक्रेन में है। इसी तरह सेना भेजने से उसका भविष्य में रूस के साथ तेल व्यापार भी प्रभावित हो सकता है, वहीं अमेरिका अभी कोरोना महामारी के कारण आर्थिक संकट से जूझ रहा है। यदि वह सेना भेजता है तो रूस उस पर भी हमला कर सकता है, जिससे हालात और खराब हो जाएंगे।

अब प्रश्न उठता है कि ये युद्ध विश्व को किस मोड़ पर लेकर जा रहा है और क्या युद्ध विराम समझौते के साथ वास्तव में इसपर विराम लगेगा? दरसअल रूस को पता है कि वर्तमान विश्व व्यवस्था को देखते हुए बार-बार युद्ध नहीं किया जा सकता, इसलिए जब एक बार युद्ध शुरू हो चुका है तो इसे अधिक से अधिक परिणाम प्राप्त करने वाला बना लिया जाना चाहिए। यूक्रेन के सामरिक आर्थिक नाभिकीय महत्त्व वाले क्षेत्रों, औद्योगिक और कृषि क्षेत्रों, काला सागर के क्षेत्रों पर एक स्थायी नियंत्रण का मौका रूस छोड़ना नहीं चाहता। अमेरिका और उसके सहयोगियों को भी अपना दम खम दिखाने का इससे अच्छा अवसर रूस को जल्दी नहीं मिल सकता। इसलिए रूस हर प्रकार के आक्रामता के साथ खड़ा नजर आता है। रूस को अंतर्राष्ट्रीय नियमों-कानूनों और संयुक्त राष्ट्र के मैंडेट्स से भी कोई खास भय नहीं है। उसका मानना है कि अमेरिका सहित पश्चिमी देशों ने भी यूनाइटेड नेशन सिक्योरिटी काउंसिल को अपने राजनीतिक मकसदों के लिए कई बार इस्तेमाल किया है। इसलिए यूएन की सलाह को भी रूस दरकिनार करता नजर आया है। इसके साथ ही यह भी एक बड़ा सच है कि चाहे अमेरिका हो या यूरोपीय देश, वह ये मानते हैं कि रूस के साथ अनन्य रूप से दुश्मनी का व्यवहार करने से विश्व को बड़े आर्थिक और व्यापारिक संकट भुगतने पड़ सकते हैं, इसलिए इस युद्ध में हर देश सतर्क होकर अपनी भूमिका निभाना चाहता है।

प्रौद्योगिकी

5G: एक नए युग की शुरुआत

सन्दर्भ:

हाल ही में हुए 5G लॉन्च को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक क्रांति' की संज्ञा दी है। आधुनिक दुनिया में भारत अब न केवल प्रौद्योगिकी का उपभोग करता है, बल्कि इसे आगे बढ़ाने में भी मदद करता है।

परिचय:

पूर्व में शुरू हुए 2जी, 3जी और 4जी सेवाओं के समय भारत अन्य देशों पर निर्भर था। आज भारत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रौद्योगिकी के मामले में एक अग्रणी राष्ट्र है और 5G के साथ एक नए ऐतिहासिक काल में प्रवेश कर रहा है। 5G सेवायें पहले 13 भारतीय शहरों में प्रदान की जायेंगी जिनमें दिल्ली, बेंगलुरु, मुंबई, चेन्नई, अहमदाबाद, चंडीगढ़, गांधीनगर, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ, पुणे, जामनगर और गुरुग्राम शामिल हैं। 5G सेवा सबसे पहले चेन्नई, मुंबई, दिल्ली और कोलकाता सहित महत्त्वपूर्ण मेट्रोपोलिटन शहरों में उपलब्ध होगी जिसे रिलायंस जियो द्वारा दिवाली के अवसर पर लांच किया गया। 5G का नेटवर्क दिसंबर, 2023 तक पूरे देश में उपलब्ध होगा। 5G तकनीक के लाभों में निरंतर कवरेज, तेज डेटा दर, न्यूनतम विलंबता और उत्कृष्ट विश्वसनीयता शामिल हैं।

5G क्या है?

- 5G नेटवर्क, जो अंततः 4G एलटीई की जगह लेगा यह मोबाइल ब्रॉडबैंड की अगली पीढ़ी है।

5G प्रौद्योगिकी की विशेषताएं:

- यह 30-300 गीगाहर्ट्ज मिलीमीटर वेव रेंज में काम करता है, जिसमें भारी मात्रा में डेटा के तेजी से प्रसारण की अनुमति देने का लाभ होता है। यह तीन बैंडों में काम करता है:

1. लो बैंड स्पेक्ट्रम।
2. मिड बैंड स्पेक्ट्रम।
3. हाई बैंड स्पेक्ट्रम।

- **लो बैंड स्पेक्ट्रम:** डेटा एक्सचेंज और इंटरनेट कवरेज के लिए उच्चतम संभव गति 100 एमबीपीएस (मेगा बाइट्स प्रति सेकेंड) है।
  - इसलिए इसे दूरसंचार ऑपरेटरों द्वारा व्यावसायिक मोबाइल ग्राहकों के लिए उपयोग और स्थापित किया जा सकता है, जिन्हें अत्यधिक तेज इंटरनेट की विशेष आवश्यकता नहीं होती है।
  - हालांकि लो बैंड स्पेक्ट्रम, उद्योग की विशिष्ट मांगों के लिए आदर्श नहीं है।
- **मिड बैंड स्पेक्ट्रम:** यह लो बैंड स्पेक्ट्रम की तुलना में तेज गति प्रदान करता है, लेकिन सिग्नल प्रवेश और कवरेज क्षेत्र पर प्रतिबंध है।
  - उद्योग और विशेष उत्पादन इकाईयाँ इस बैंड का उपयोग कैप्टिव नेटवर्क बनाने के लिए कर सकती हैं जो उस विशेष उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप हो सकते हैं।
- **हाई बैंड स्पेक्ट्रम:** इस बैंड की गति सबसे तेज होती है, लेकिन इसकी रेंज और सिग्नल की तीव्रता काफी सीमित है।
  - हालांकि इसके लिए महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है, यह बैंड भविष्य में उपयोग की जाने वाली 5G तकनीक के अनुप्रयोगों में काफी सुधार कर सकता है, जिसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और स्मार्ट तकनीक शामिल हैं।
- नए एप्लिकेशन जो 5G, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की क्षमताओं का उपयोग करते हैं, उन्हें कम विलंबता (अधिक गति) द्वारा समर्थित किया जाएगा।
- बढ़ी हुई 5G नेटवर्क क्षमता, डिमांड स्पाइक्स के प्रभाव को कम कर सकती है। जैसे-खेल आयोजनों और ब्रेकिंग न्यूज इवेंट्स के दौरान अक्सर देखने को मिलता है।

भारत की राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति 2018 के अनुसार, 5G क्लाउड कम्प्यूटिंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और डेटा एनालिटिक्स सहित ग्राउंड-ब्रेकिंग प्रौद्योगिकियों के समूह का अभिसरण, एक बढ़ते स्टार्ट-अप समुदाय के साथ डिजिटल जुड़ाव में तेजी लाकर, अवसरों के नये द्वार खोल सकता है।

अनुप्रयोग:

- **तेज डेटा प्रोसेसिंग:** 5G की उच्च गति सीमा की विलंबता दर 1 मिलीसेकंड है। नतीजतन, विभिन्न स्रोतों से बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण जल्दी से किया जा सकता है।
- 5G जैसे हाई-स्पीड मोबाइल नेटवर्क बफरिंग को कम करेंगे और मोबाइल डाउनलोड को गति देंगे। इसके साथ ही यह हाई-क्वालिटी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और कॉलिंग की सुविधा भी प्रदान करेगा।
- **इंटरनेट ऑफ थिंग्स:** 5G से आईओटी (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) के विकास में तेजी आएगी।
- 5G कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स और अन्य प्रोग्रामिंग भाषाओं के लिए अतिरिक्त लाभ प्रदान करता है। यह त्वरित डेटा प्रोसेसिंग को सक्षम बना सकता है।
- **शिक्षा:** कोविड-19 के परिणामस्वरूप ऑनलाइन सीखने में तेजी आई है। हालाँकि इंटरनेट की गति शिक्षा के लिए एक महत्त्वपूर्ण बाधा बनी हुई है।
- **स्वास्थ्य क्षेत्र:** 5G से टेलीमेडिसिन और बायोटेक्नोलॉजी जैसे

क्षेत्रों को लाभ होगा। यह अधिक दूरस्थ स्थानों में चिकित्सा सेवाओं तक पहुंच के विस्तार की सुविधा प्रदान करेगा।

- **रोजगार के अवसर:** 5G साइबर, निर्माण और सूचना प्रौद्योगिकी सहित कई उद्योगों में रोजगार के नए अवसर सृजत करेगा।
- **सरकारी सेवाएं:** नागरिकों को 5G की सहायता से सरकारी सेवाओं तक अधिक से अधिक पहुंच प्राप्त हो सकती है। यह सार्वजनिक शिकायतों के त्वरित समाधान की सुविधा प्रदान करेगा और सरकारी कार्यों में खुलेपन तथा जवाबदेहिता को सुनिश्चित करेगा।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा:** भारत अपनी मेक इन इंडिया पहल का विस्तार कर सकता है और 5G की तैनाती में चीन को टक्कर दे सकता है। वैश्विक प्रौद्योगिकी की गति को बनाए रखने के लिए भारत को अपने 5G अनुसंधान में तेजी लानी होगी।

5G रोलआउट होने में आने वाली बाधाएं:

- **कम फाइबराइजेशन फुटप्रिंट:** भारत का वर्तमान फाइबर कनेक्शन, जो इसके केवल 30% दूरसंचार टावरों को जोड़ता है, को अपग्रेड करना होगा।
- **भारत में निर्मित हार्डवेयर चुनौती:** 5G प्रौद्योगिकी के विकास में एक बाधा, कुछ विदेशी दूरसंचार ओईएम (मूल उपकरण निर्माता) पर प्रतिबंध है।
- **उच्च स्पेक्ट्रम कीमतें:** दुनिया भर में भारत के 5G स्पेक्ट्रम की कीमतें काफी अधिक महंगी हैं। इसका खामियाजा भारत में नकदी की तंगी से जूझ रही टेलीकॉम कंपनियों को भुगतना पड़ता है।
- **सर्वश्रेष्ठ 5G प्रौद्योगिकी मानक का चयन:** 5G प्रौद्योगिकी को अपनाने में तेजी लाने के लिए घरेलू 5G मानक और अंतर्राष्ट्रीय 3GPP मानक के बीच संघर्ष को हल करना होगा।
- भारत की शीर्ष तीन 5G प्राथमिकताएं हैं:
  - इस नई तकनीक की क्षमता का पूर्णतया दोहन करने के लिए शुरुआती, प्रभावी और व्यापक 5G नेटवर्क स्थापित करना।
  - 5G डिजाइन और आईपी आयामों में भारत की औद्योगिक तथा अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं का निर्माण करना।
  - **निर्माण:** सेमीकंडक्टर उत्पादन, असेंबली और परीक्षण के लिए 5G निर्माण सुविधाओं का विस्तार करना।
- **शिक्षा और जागरूकता संवर्धन कार्यक्रम:** 5G समिति तीन पहलों का सुझाव देती है:
  - राष्ट्रीय 5G कार्यक्रम आयोजित करना।
  - भारत में अंतर्राष्ट्रीय 5G सम्मेलन करना।
  - एक व्यापक कौशल विकास कार्यक्रम का निर्माण करना।
- **प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और प्रमुख परीक्षण:** 5G परीक्षण हमारे दूरसंचार सेवा प्रदाताओं (टीएसपी), शिक्षाविदों और उद्योग को सीखने के अवसर प्रदान करेंगे।
  - यह समिति दुनिया भर के मुख्य मूल उपकरण निर्माताओं को स्थानीय सहयोगियों के साथ भारत में महत्त्वपूर्ण 5G प्रयोग करने के लिए आमंत्रित करने की सलाह देती है।
- **कोर टेक्नोलॉजी और मैन्युफैक्चरिंग:** 5G के लिए कोर टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट (डिजाइन और आईपी) तथा मैन्युफैक्चरिंग में भारत की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण और निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है।

इस दिशा में अब तक किए गए उपाय:

- भारत में 5G के विजन का वर्णन करने तथा इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए विधायी परिवर्तनों और कार्य योजनाओं का सुझाव देने के लिए, सरकार ने सितंबर 2017 में 5G उच्च स्तरीय फोरम की स्थापना की थी।
- इसके अतिरिक्त, डीएसटी और MeitY ने 5G मुद्दों पर केंद्रित कई छोटे विश्वविद्यालयों को अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) परियोजनाओं के लिए धन उपलब्ध कराया है।
- अक्टूबर 2019 में, देश में पहला 5G वीडियो कॉल दिल्ली में इंडिया मोबाइल कांग्रेस (IMC) में दिखाया गया था, जिसका श्रेय अमेरिकी दूरसंचार उपकरण निर्माता क्वालकॉम और स्वीडिश टेलीकॉम दिग्गज एरिक्सन के बीच साझेदारी को जाता है।
- भारत में 5G सेवाओं के संबंध में, राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति-2018 (एनडीसीपी-2018) भी निम्नलिखित लक्ष्यों को रेखांकित करती है:
  - इंटरनेट, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और एम2एम (मशीन से मशीन) को सक्षम करने के लिए 5G तकनीक का उपयोग करना।
  - 5G और अन्य अगली पीढ़ी के नेटवर्क के विकास में सहायता करने के लिए बैकहॉल क्षमता बढ़ाना।
- यह सुनिश्चित करना कि 5G के लिए 6 GHz बैंड स्पेक्ट्रम उपलब्ध है, एक ऐसा ढांचा तैयार करना जो डिवाइस सुरक्षा और अवरोधन की सुरक्षा करते हुए मशीन टू मशीन सेवाओं को अधिक तेजी से तैनात करने की अनुमति दे।

निष्कर्ष:

विनिर्माण, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, वित्तीय और सामाजिक क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग में तेजी से वृद्धि को सक्षम करके, 5G तकनीक में भारत में एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक बदलाव की शुरुआत करने की क्षमता है। भारत को प्रभावी ढंग से और व्यापक रूप से 5G नेटवर्क स्थापित करके, खुद को एक प्रमुख विश्वव्यापी नवप्रवर्तनक तथा प्रौद्योगिकी प्रदाता के रूप में अग्रसर करना चाहिए। 5G को वास्तव में समावेशी तकनीक बनाने के लिए, इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि यह ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित समुदायों के जीवन में भी आवश्यक परिवर्तन करे ताकि इसका प्रसार समान रूप से हो सके।

सामाजिक मुद्दे

ग्लोबल हंगर इंडेक्स : अनुमानित और वास्तविक स्थिति

संदर्भ:

कंसर्न वर्ल्डवाइड और वेल्थहंगरलाइफ (Concern Worldwide and Welthungerhlife) द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित, जीएचआई इंडेक्स-2022 में भारत को 121 देशों में 107वां स्थान दिया गया है। यूरोपीय एजेंसी द्वारा बनाए गए इस सूचकांक ने वैश्विक मंच पर, भूख की स्थिति को लेकर भारत की छवि को संवेदनशील बना दिया है।

सूचकांक क्या है?

- सन् 2000 के बाद से जीएचआई जारी किया जा रहा है। इस वर्ष इसकी 15वीं रिपोर्ट प्रकाशित हुई है।
- कम स्कोर से देश को उच्च रैंकिंग मिलती है जिसका मतलब बेहतर प्रदर्शन होता है। सूचकांक के पीछे का उद्देश्य भूख का मानचित्रण करना है ताकि 2030 तक एसडीजी लक्ष्य जीरो हंगर को प्राप्त करने का मार्ग बेहतर ढंग से प्रक्षेपित किया जा सके। यहीं कारण है कि जीएचआई स्कोर की गणना कुछ उच्च आय वाले देशों के लिए नहीं की जाती है।
- जीएचआई-2022 के सूची में शीर्ष पर क्रोएशिया, एस्टोनिया और मोंटेनेग्रो सहित यूरोपीय देशों का वर्चस्व है। एशियाई देशों में चीन तथा कुवैत ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।
- भुखमरी की परिभाषा आम बोलचाल तक सीमित नहीं है, क्योंकि इस सूचकांक के अनुसार कम कैलोरी सेवन को भी भुखमरी माना जाता है।
- यह 4 प्रमुख मापदंडों पर विभिन्न देशों के प्रदर्शन को ट्रैक करता है, क्योंकि इन मापदंडों को एक साथ लेने पर सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी जैसे कई आयामों को चिन्हित किया जाता है।
- भारत 2014 से लगातार इस सूचकांक में पिछड़ रहा है। यहां तक कि भारत के पड़ोसी देश जैसे श्रीलंका (64), बांग्लादेश (84), पाकिस्तान (99), नेपाल (81) भारत की तुलना में बेहतर रैंकिंग प्राप्त किये हैं।
- सन 2000 में, इस सूचकांक में भारत ने 38.8 का 'अलार्मिंग स्कोर' दर्ज किया था, जो 2014 तक घटकर 28.2 के डेंजर स्तर तक पहुँच गया। देश ने तब से उच्च स्कोर दर्ज करना शुरू कर दिया है जो 2022 में (29.2 स्कोर के साथ), भूख की 'गंभीर' श्रेणी को प्रदर्शित करता है।
- उल्लेखनीय है कि वैश्विक स्तर पर भी, इस वर्ष की रिपोर्ट में गिरावट दर्ज की गई है, जिसके प्रमुख कारण निम्न हैं:
  - कोविड-19 के कारण आर्थिक गिरावट होना।
  - जलवायु परिवर्तन।
  - रूस-यूक्रेन युद्ध का समाधान न होना।
  - अन्य क्षेत्रीय विवादों से आपूर्ति शृंखला का प्रभावित होना।

गणना किए जाने वाले कारक:

जीएचआई मुख्य रूप से चार संकेतकों पर आधारित है:

- **अल्पपोषण (अपर्याप्त भोजन उपलब्धता):** इसकी गणना कुपोषित जनसंख्या के अंतर्गत की जाती है।
- **चाइल्ड वेस्टिंग (एक्यूट अंडरन्यूट्रीशन):** पांच साल से कम उम्र के उन बच्चों की गणना की जाती है जिनका वजन उनकी ऊंचाई की तुलना में कम होता है।
- **बाल बौनापन (क्रोनिक अल्पपोषण):** 5 वर्ष से कम आयु के वो अविकसित बच्चे, जिनकी उम्र के अनुसार लंबाई कम होती है।
- **बाल मृत्यु दर (अपर्याप्त पोषण को दर्शाता है):** 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर की गणना की जाती है।

प्रत्येक देश के डेटा को 100-बिंदु पैमाने पर मानकीकृत किया जाता है और अंतिम स्कोर की गणना घटक 1 और 4 को 33.3% भार देकर और घटक 2 और 3 में प्रत्येक को 16.66% भार देकर की जाती है।

सूचकांक में 3 श्रेणियां हैं:

1. भूख की निम्न श्रेणी
2. भूख की गंभीर श्रेणी (भारत को इसी श्रेणी में रखा गया है)
3. बेहद खतरनाक श्रेणी

भारत में कुपोषण और भूख की भयावह स्थिति के पीछे कई प्रमुख कारण हैं, इसलिए उनकी सटीक पहचान कर पाना संभव नहीं है। फिर भी कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

- **कैलोरी की कमी:** खाद्यान्न केंद्रों पर अधिशेष खाद्यान्न संचय के बावजूद, पीडीएस आवंटित खाद्यान्न में कैलोरी की कमी है। इसके अलावा आवंटन और वितरण की प्रक्रिया में भी कमियाँ होना शामिल है।
- **प्रोटीन की कमी:** दाल प्रोटीन की पूर्ति का प्रमुख स्रोत है जबकि भारत में दाल की उपलब्धता और इसके समुचित वितरण की समस्या है।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (छिपी हुई भूख):** भारत सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के गंभीर संकट का सामना कर रहा है

जिसके लिए खराब आहार, बीमारी, गर्भावस्था और स्तनपान के दौरान सूक्ष्म पोषक तत्वों की बढ़ी हुई जरूरतों का पूरा न होना।

- **अन्य कारक:**
  - सुरक्षित पीने योग्य जल की अच्छी पहुंच न होना।
  - प्रदूषण के कारण बिगड़ता स्वास्थ्य।
  - निम्न स्तरीय पोषक तत्वों की उपलब्धता।

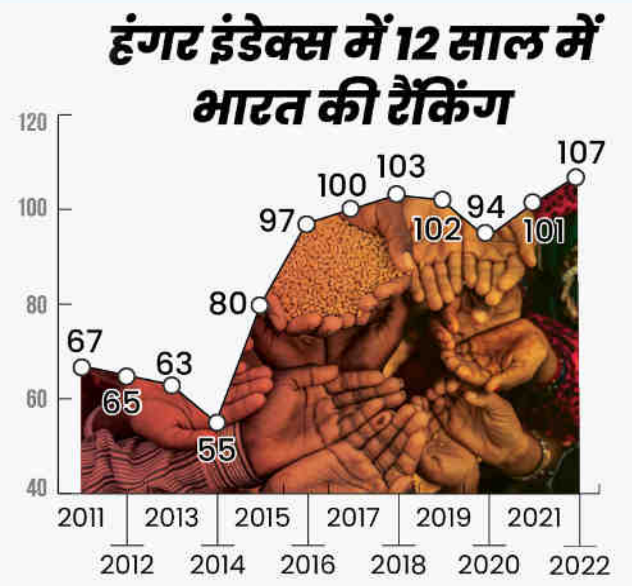

- वैश्विक भुखमरी सूचकांक के अतिरिक्त नीति आयोग जैसी प्रमाणित और घरेलू एजेंसी की एसडीजी रिपोर्ट ने भी भारत में भूख, गरीबी और कुपोषण के बारे में बड़ी चिंताओं को चिह्नित किया है।
- नीति आयोग द्वारा जारी सतत विकास लक्ष्य सूचकांक 2019-20 के अनुसार देश का कुल स्कोर 60 है जो चिंताजनक है। यह शर्तों की गंभीरता को देखते हुए कार्यक्रमों के बेहतर क्रियान्वयन के लिए सरकारी एजेंसी को सचेत करने वाला है।
- भारत सरकार ने जीएचआई-इंडेक्स 2022 में भूख की एक अनुपयुक्त परिभाषा देने हेतु आलोचना की है।
- भारत सरकार का तर्क है कि 'गलत सूचना' वार्षिक रूप से जारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स की पहचान है।
- चूंकि सूचकांक की गणना के लिए उपयोग किए जाने वाले चार में से तीन संकेतक बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित हैं जो पूरी आबादी का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।
- चौथा और सबसे महत्त्वपूर्ण संकेतक कुपोषित आबादी (पीओयू) का है जो महज 3000 लोगों के बहुत छोटे से नमूने के आकार पर आयोजित जनमत सर्वेक्षण पर आधारित है।
- सूचकांक विशेष रूप से कोविड महामारी के दौरान आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सरकार द्वारा किए गए प्रयासों (जैसे-प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना) की भी अनदेखी करता है।
- एफआईईएस (खाद्य असुरक्षा अनुभव स्केल) के माध्यम से भारत जैसे विशाल देश के लिए एक छोटे से नमूने से एकत्र किए गए डेटा का उपयोग, सम्पूर्ण भारत के पीओयू मूल्य की गणना करने के लिए किया गया है जो गलत और अनैतिक होने के साथ ही, स्पष्ट पूर्वाग्रह का भी प्रतीक है।
- भारत सरकार दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम चला रही है। संकटपूर्ण परिस्थितियों में, महामारी के दौरान सरकार ने गरीबों के लिए पैकेज का आवंटन करके एक अनुकरणीय कदम उठाया है। इसके साथ ही सरकार कई अन्य लोक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। जैसे:

इसके साथ ही सरकार कई अन्य लोक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। जैसे:

- ईट राईट मूवमेंट।
- पोषण अभियान।
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना।
- फूड फोर्टीफिकेशन।
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013।
- मिशन इन्द्रधनुष।
- एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) योजना।
- मिड डे मील योजना।

निष्कर्ष:

इस प्रकार, भूखमरी को संबोधित करने की समस्या एक पखवाड़े का विषय नहीं है बल्कि औपनिवेशिक प्रेरित संकट को दूर करने के लिए एक बड़ी संरचित योजना की आवश्यकता होगी और इस सफलता के लिए सतत तथा दीर्घकालिक प्रयास करने होंगे। सरकार अपने सीमित संसाधनों के इष्टतम दोहन पर ध्यान दे, जीएचआई जैसे अन्य सूचकांक इस स्थिति से निपटने के उपायों के परिणामों की समीक्षा मात्र हैं। इसलिए आगे की रूपरेखा और कार्यक्रमों के निर्धारण के लिए एजेंसियों द्वारा प्रमाणीकृत आंकड़ों का उपयोग करके, एक दक्षतापूर्ण बेहतर कार्यप्रणाली विकसित की जानी चाहिए, जिसके लिए एक खुले दृष्टिकोण पर विचार किया जाना आवश्यक है।

1 परिवार पहचान पत्र - हरियाणा

चर्चा में क्यों?

सरकार द्वारा सभी वर्ग के लोगों के लिए कई सारी योजनाएं आरंभ की जाती हैं। इन योजनाओं का लाभ सभी लाभार्थियों तक पहुंचे, यह सुनिश्चित करने के लिए हरियाणा सरकार के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर द्वारा हरियाणा परिवार पहचान पत्र (PPP) की शुरुआत हुई। परिवार पहचान पत्र (PPP) व्यक्ति के लिए आधार कार्ड की तरह ही है, जहां आधार कार्ड एक इकाई के रूप में एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है वहीं पीपीपी एक परिवार को एक इकाई के रूप में दर्शाता है।

हरियाणा परिवार पहचान पत्र क्या है?

हरियाणा में प्रत्येक परिवार को सरकार की ओर से PPP कार्ड दिया जाता है। ये राज्य के परिवारों की जानकारी को डिजिटल रूप में उनकी सहमति से संग्रह करने का तरीका है। इसके तहत प्रत्येक परिवार को आठ अंकों की परिवार आईडी प्रदान की जाती है। पीपीपी के माध्यम से 54 लाख परिवारों की जानकारी को सत्यापित किया जायेगा।

परिवार पहचान पत्र के लिए नामांकन की आवश्यकता:

- स्थाई परिवार-वे सभी परिवार जो स्थाई रूप से हरियाणा में रह रहे हैं। उन्हें पीपीपी बनवाना अनिवार्य हैं। उन्हें आठ अंकों की पारिवारिक आईडी प्रदान की जाएगी।
- अस्थाई परिवार-वे सभी परिवार जो हरियाणा से बाहर रह रहे हैं लेकिन राज्य की किसी सेवा या योजना के लिए आवेदन करना चाहते हैं, तो उनको भी पीपीपी बनवाना अनिवार्य है। उन्हें नौ अंकों की पारिवारिक आईडी प्रदान की जाएगी।

पीपीपी चर्चा में क्यों?

- यह राज्य के परिवारों की जानकारी को डिजिटल रूप से संग्रहित करेगा, लेकिन हाल ही में इस योजना में गोपनीयता को लेकर चिंता जताई जा रही है। भारत में गोपनीय कानून के अभाव में डाटा के दुरुपयोग की संभावना हो सकती है।

पीपीपी की विशेषताएं:

- पीपीपी में परिवार जानकारी के स्वचालित अद्यतन की सुविधा है।
- सरकार ने पीपीपी को तीन सामाजिक सुरक्षा योजनाओं - वृद्धावस्था सम्मान भत्ता, दिव्यांग पेंशन, विधवा और निराश्रित महिला पेंशन से जोड़ा है।
- सरकार के पास परिवार का डाटा डिजिटल रूप से संग्रहित रहेगा।

पीपीपी की आवश्यकता क्यों?

- हरियाणा के सभी परिवारों की प्रामाणिक, सत्यापित और विश्वसनीय जानकारी तैयार की जाएगी।
- इसके माध्यम से राज्य सरकार राज्य में रहने वाले लगभग 54 लाख परिवारों की निगरानी करेगी।
- यह सरकारी योजनाओं जैसे छात्रवृत्ति, सब्सिडी, पेंशन आदि से संबंधित योजनाओं को जोड़ेगी ताकि निरंतरता और विश्वसनीयता के साथ विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों के स्वचालित चयन को सक्षम किया जा सके।
- सरकारी कामकाज के लिए, स्कूल कॉलेज, बैंक मे खाता खुलवाने में, कोई भी सरकारी प्रमाण पत्र बनवाने के लिए फैमिली आईडी जरूरी होगी।

महाराष्ट्र राज्य इस मॉडल को क्यों अपना रहा है?

- पीपीपी राज्य भर में प्रत्येक परिवार के लिए समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा शुरू की जा रही नागरिक केंद्रित सेवाओं के सुचारु व स्वचालित वितरण में सक्षम है।
- इसके तहत सरकार के पास सभी परिवारों का रिकॉर्ड डिजिटल रूप से उपलब्ध रहेगा।
- इससे भ्रष्टाचार में कमी आयेगी व पारदर्शिता के साथ सरकारी सुविधाएं जरूरतमंद वर्ग तक पहुंचेगी।

भारत में आधार कार्ड मॉडल हरियाणा के पीपीपी से कैसे पहचान ले सकता है?

- जहां आधार कार्ड एक व्यक्ति को एक इकाई के रूप में दर्शाता है, वहीं पीपीपी में एक परिवार को एक इकाई माना गया है। यही आधार कार्ड से पीपीपी को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाता है। क्योंकि सरकार की ज्यादातर योजनाए परिवार से संबंधित होती है न की व्यक्ति विशेष से इसलिए आधार कार्ड को पीपीपी से जोड़ने से सामाजिक आर्थिक जनगणना की कमियों को दूर किया जा सकता है।
- आरक्षण व्यवस्था (क्रीमी लेयर), सार्वजनिक खाद्यान वितरण, आदि में रिसाव को कम किया जा सकता है।

पीपीपी के लाभ:

- राज्य के लगभग 54 लाख परिवारों को इस योजना का लाभ मिलेगा।
- इस परिवार पहचान पत्र के जरिये स्कूल कॉलेजों में एडमिशन लेने में सहायता मिलेगी और सरकारी और निजी नौकरियों को

प्राप्त करने में भी सहायक होगी।

- परिवार पहचान पत्र (PPP) के जरिये भ्रष्टाचार में कमी आएगी।
- इस पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण प्रक्रिया को गति मिलेगी।
- इस पोर्टल पर सभी लाभार्थियों का डाटा अपलोड किया जाएगा जिसके माध्यम से उन्हें पारदर्शिता के साथ सभी सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाया जाएगा।
- वे परिवार जिनका नाम सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना या SECC डेटा सूची में पंजीकृत हैं, वे भी परिवार पहचान पत्र के लिए नामांकन फॉर्म भर सकते हैं।

आगे की राह:

सरकार द्वारा जनता तक सभी योजनाओं के लाभ पहुँचाने हेतु निश्चित रूप से अहम है, परन्तु इसके लिए निजता का अधिकार का उल्लंघन नहीं होना चाहिए ताकि लोगों का विश्वास बना रहे।

2 वायनाड को पहली बार मिलेंगी डिजिटल आदिवासी बस्तियां

चर्चा में क्यों?

राज्य सरकारें स्वास्थ्य, शिक्षा व रोजगार से संबंधित क्षेत्रों पर जोर देकर अनुसूचित जनजातियों का विकास करना चाहती है, जिसके लिए पिछड़े और अनुसूचित समुदाय कल्याण मंत्री राधाकृष्णन ने 16 अक्टूबर को वायनाड जिले के कलपेट्टा से इस योजना का उद्घाटन करते हुए कहा की कि केरल के वायनाड जिले को देश की पहली डिजिटल आदिवासी बस्ती मिलेगी। इस योजना हेतु नौ करोड़ रूपये की राशि व्यय की जायेगी। इसके लिए वायनाड के पहाड़ी जिले में आदिवासी कॉलोनियों में ई-शिक्षा और ई-स्वास्थ्य कार्यक्रमों को एकीकृत किया जाएगा।

डिजिटल आदिवासी बस्तियां:

- इसमें आदिवासी समुदायों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार से संबंधित सुविधाएं ऑनलाइन तथा डिजिटल तरीके से प्रदान की जायेगी।
- इस परियोजना के माध्यम से आदिवासी बस्तियों में स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं में विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग (सीडीएसी) की मदद से सुधार की उम्मीद है।
- यह योजना राज्य अनुसूचित जनजाति विभाग द्वारा केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की मदद से, CDAC द्वारा क्रियान्वित की जा रही है।

डिजिटल आदिवासी बस्तियों की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- इसके माध्यम से राज्य सरकार अनुसूचित जनजातियों का स्वास्थ्य, शिक्षा व रोजगार से संबंधित क्षेत्रों में विकास करना चाहती है।
- आदिवासी समुदायों को शिक्षा के अभाव के कारण ट्राइबल लोन स्कैम, लैंड स्कैम, बैंकों व सोशल मीडिया से संबंधित धोखाधड़ी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- वन संसाधन, मांस, पौष्टिक आहार आदि अनुपलब्ध होने के कारण आदिवासी समुदायों में एनीमिया, कुपोषण जैसी बीमारियों की समस्याएं होना। जैसे-स्वास्थ्य विभाग के अगस्त के आंकड़ों के अनुसार वायनाड कलपेट्टा आदिवासी समुदाय में 60 बच्चों में से 47 बच्चें कुपोषण से पीड़ित थे।
- नेशनल रिसर्च कारपोरेशन में ईलाज के दौरान मरीजों को कोई जरूरी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध न करवाना तथा स्वास्थ्य से संबंधित जागरूकता का अभाव।
- छात्रों के स्कूल ड्रॉपआउट रेट कम करने के लिए।

डिजिटल आदिवासी बस्तियों की विशेषताएं:

- आदिवासी बस्तियों में स्मार्ट क्लासरूम शुरू किए जाएंगे जिन्हें लोक शिक्षा कोष के व्यापक ई-संसाधन पोर्टल से जोड़ा जाएगा।
- क्षेत्रीय कैंसर केंद्र, क्षेत्रीय नेत्र विज्ञान संस्थान और सीएसआईआर-एनआईआईएसटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों की सेवाएं वायनाड के आदिवासी गांवों के लिए ऑनलाइन उपलब्ध होंगी।
- सिंथेटिक इंटेलिजेंस की मदद से गैर-संचारी बीमारियों और डायबिटीज रेटीनोपैथी, ओरल कैंसर, सर्वाईकल कैंसर की जांच हेतु टेलीमेडिसिन सिस्टम की व्यवस्था हो सकेगी।

डिजिटल आदिवासी बस्तियों के लाभ:

- ई-स्वास्थ्य सुविधाओं व संतुलित आहार से कुपोषण, एनीमिया आदि बीमारियों में कमी आयेगी।
- ई-शिक्षा के माध्यम से आदिवासी समुदाय अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगे जिससे वे संपत्ति, बैंकों तथा सोशल मीडिया से संबंधित धोखाधड़ी से बच पाएंगे।
- आदिवासी समुदाय स्वास्थ्य के क्षेत्र प्रतिष्ठित संस्थानों से जुड़कर अच्छी कंपनियों का उपयोग कर सकेंगे।
- रोजगार से सम्बन्धित क्षेत्रों के विकास से रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

आगे की राह:

हालांकि सरकार द्वारा इस योजना की घोषणा तो कर दी गई है लेकिन सरकार के सामने अभी बहुत सारी समस्याएं है। जैसे-बिजली की आपूर्ति की कमी, इंटरनेट की सुविधा का अभाव, छात्रों के पास टैबलेट/लैपटॉप जैसे उपकरणों का अभाव, भाषा के माध्यम

की समस्या, दुर्गम क्षेत्रों से शिक्षा केन्द्रों तक छात्रों को पहुंच आदि। सरकार द्वारा इस योजना के सुचारु क्रियान्वयन के लिए इन समस्याओं का समाधान अति आवश्यक है, तभी यह योजना अपने उद्देश्यों में सफल होगी व अन्य आदिवासी समुदायों के लिए एक रॉल मॉडल बन सकेगी।

3 कानूनी कार्यवाहियों में क्षेत्रीय भाषाएँ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, अखिल भारतीय सम्मलेन का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री ने न्याय प्रणाली में क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने की वकालत की। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कानूनी भाषा, नागरिकों के समक्ष कानून की बारीकियों को समझने में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न करें।

'न्यायालय की भाषा' से जुड़े संवैधानिक प्रावधान

- भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद-343 से 351 राजभाषा से संबंधित हैं, जिनके अंतर्गत न्यायपालिका की भाषा एवं विधिक पाठ शीर्षक के अंतर्गत न्यायालय की भाषा संबंधी प्रावधान किये गये हैं।
- यद्यपि देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने संबंधी प्रावधान अनुच्छेद-343 में किया गया था। बावजूद इसके, अनुच्छेद-348 (1)(a) में प्रावधान है कि जब तक विधि द्वारा कोई उपबन्ध न करें तब तक सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय की कार्यवाही अंग्रेजी भाषा में ही होगी। सर्वोच्च न्यायालय केवल उन्हीं याचिकाओं को सुनता है जो केवल अंग्रेजी में हो।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 में प्रावधान किया गया है कि राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से संबंधित राज्य के उच्च न्यायालय में कार्यवाही के लिए हिंदी या किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग की अनुमति दे सकता है, इस शर्त के साथ कि कार्यवाही का अंग्रेजी अनुवाद भी सलंग्न होना आवश्यक है। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान जैसे कुछ राज्यों ने उच्च न्यायालय के समक्ष कार्यवाही के लिए हिंदी को, जबकि तमिलनाडू ने तमिल भाषा को अधिकृत किया है।
- वर्ष 2019 में न्यायालय ने अपने निर्णयों को अंग्रेजी के साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने संबंधी पहल की थी।
- यद्यपि राज्य सरकार के पास नागरिक प्रक्रिया संहिता, 1908 की धारा-137 के अंतर्गत शक्ति प्राप्त है कि राज्य सरकार अधीनस्थ न्यायालयों की कार्यवाहियों के संबंध में क्षेत्रीय भाषा का चयन कर सकते हैं परंतु न्यायालय द्वारा अंग्रेजी का प्रयोग भी जारी रहेगा। ऐसे में, उच्च न्यायालय के अधीनस्थ सभी न्यायालय सामान्य रूप से अंग्रेजी के साथ ही, राज्य सरकार द्वारा निर्धारित क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करते हैं।
- जबकि न्याय का मूल सिद्धांत न्याय होना ही काफी नहीं, बल्कि न्याय होते हुए दिखना भी चाहिए। न्याय की इसी मांग के अनुरूप सर्वोच्च न्यायालय ने महत्त्वपूर्ण संवैधानिक मामलों की कोर्टरूम की लाइव टेलीकास्ट की व्यवस्था शुरू की है। न्यायालय में क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग इस मुहीम को और अधिक कारगर बनाने के साथ ही, लोगों को न्याय प्रणाली से जोड़ने का कार्य करेगा। लोकतंत्र की मजबूती के लिए, न्याय के शासन की स्थापना, न्यायपालिका से नागरिकों का गहरे स्तर पर जुड़ाव होना आवश्यक है।

4 पीएम डिवाइन योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 2022-23 से 2025-26 तक पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए एक नवीन योजना प्रधानमंत्री विकास पहल (PM-DevINE Prime Minister's Development Initiative for North East Region) को अपनी स्वीकृति प्रदान की है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए इसकी घोषणा केंद्रीय बजट 2022 में की गई थी।

पीएम डिवाइन योजना:

- पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकास अंतराल को कम करने व स्थाई आजीविका के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने हेतु केंद्रीय बजट 2022 में पीएम डिवाइन की घोषणा की गई। पीएम डिवाइन योजना शत-प्रतिशत केंद्रीय वित्त पोषित योजना है, जिसके तहत 2022-23 से 2025-26 तक 4 वर्ष की अवधि के लिए 6, 600 करोड़ रुपए का परिव्यय होगा। यह योजना पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय द्वारा पूर्वोत्तर परिषद, केंद्रीय मंत्रालय/एजेंसियों के माध्यम से क्रियान्वित की जाएगी।

उद्देश्य:

- पीएम गति शक्ति में सम्मिलित आधारिक संरचना को निधि प्रदान करना।
- सामाजिक विकास परियोजनाओं का समर्थन करना।
- युवाओं एवं महिलाओं के लिए आजीविका संबंधी गतिविधियों को सक्षम बनाना।
- विभिन्न क्षेत्रों में विकास अंतराल को कम करना।

पीएम डिवाइन योजना की आवश्यकता क्यों:

- पूर्वोत्तर भारत का अपना सामरिक महत्त्व है क्योंकि यह दक्षिण-पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार है तथा म्यांमार को भारतीय भूमि से जोड़ता है।
- अपनी भौगोलिक स्थिति तथा अविकसित परिवहन ढांचे के कारण इस क्षेत्र तक पहुंचना, हमेशा से ही मुश्किल रहा है।
- मूलभूत न्यूनतम सेवाओं (बुनियादी ढांचे का अभाव जैसे भौतिक – जल मार्ग, सड़क मार्ग, रेल मार्ग आदि व सामाजिक- स्वास्थ्य सुविधाएं तथा शैक्षणिक संस्थान आदि) के संबंध में पूर्वोत्तर राज्य के मानदंड राष्ट्रीय औसत से काफी नीचे रहे हैं।
- औद्योगिक विकास की धीमी गति के कारण पूर्वोत्तर क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से अविकसित रहा है।
- पूर्वोत्तर राज्यों के मध्य अंतर राज्यीय व अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष हमेशा बना रहा है। जैसे-सीमा विवाद, जातीय भिन्नता, आदिवासी सांस्कृतिक असमानता आदि।

पीएम डिवाइन योजना की प्रमुख विशेषताएं:

- पीएम डिवाइन योजना अवसंरचनात्मक विकास से संबंधित है।
- पीएम-डिवाइन योजना के तहत स्वीकृत परियोजनाओं के पर्याप्त संचालन एवं रखरखाव को सुनिश्चित करने के लिए उपाय किए जाएंगे ताकि वे धारणीय हों।
- समय एवं लागत में वृद्धि के निर्माण जोखिमों को सीमित करने के लिए, सरकारी परियोजनाओं पर पड़ने वाले अभियांत्रिकी निर्माण के आधार पर जहां तक संभव हो, लागू किया जाएगा।
- PM-DevINE योजना आधारिक अवसंरचना एवं सामाजिक विकास परियोजनाओं को सहायता प्रदान करेगा जो आकार में बड़ी हो सकती हैं तथा अलग-अलग परियोजनाओं के स्थान पर एक आद्योपान्त (एंड-टू-एंड) विकास समाधान भी प्रदान करेगी।
- यह सुनिश्चित करेगा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय या किसी अन्य मंत्रालय/विभाग की किसी अन्य योजना के साथ, पीएम डिवाइन योजना के तहत परियोजना समर्थन का दोहराव नहीं है।

पूर्वोत्तर में प्रमुख बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ:

- इसके तहत 4, 000 किमी सड़कें, 2,011 किमी की 20 रेलवे परियोजनाएं और 15 हवाई कनेक्टिविटी परियोजनाएं विकसित की जा रही हैं।
- गंगा, ब्रह्मपुत्र व बराक नदियों के राष्ट्रीय जलमार्ग पर (गंगा NW-1, ब्रह्मपुत्र पर NW-2 और बराक पर NW-16) बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिये कई परियोजनाएं विकास के चरण में हैं।
- 5,000 किमी. लंबी ईस्टर्न वाटरवेज कनेक्टिविटी ट्रांसपोर्ट ग्रिड नौगम्य जलमार्ग द्वारा पूर्वोत्तर को शेष भारत से जोड़ेगा।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र विद्युत प्रणाली सुधार परियोजना द्वारा इंट्रा-स्टेट ट्रांसमिशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम पूर्वोत्तर क्षेत्र के आर्थिक विकास की दिशा में एक बड़ा कदम है।

आगे की राह:

बुनियादी ढाँचे में निवेश से रोजगार का सृजन तथा अवसंरचनात्मक विकास होगा जो पूर्वोत्तर क्षेत्र में अलगाववादी आंदोलनों को विफल करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

5 जन्म और मृत्यु के लिए एकीकृत राष्ट्रीय डेटाबेस

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कैबिनेट नोट से राष्ट्रीय स्तर पर डेटाबेस एकीकरण के मामले फिर से सामने आए हैं। गृह मंत्रालय द्वारा विधेयक पेश किए जाने के बाद केंद्र में जन्म और मृत्यु से संबंधित सभी डेटाबेस के पंजीकरण को एकीकृत करने का विचार सामने आया है।

वर्तमान स्थिति क्या है?

- वर्तमान में सभी पंजीकरण और जन्म-मृत्यु से संबंधित डेटा स्थानीय रजिस्ट्रार के माध्यम से संबंधित सरकारों के नियंत्रण में है, लेकिन अगर यह कदम कानून के रूप में लागू होता है, तो भारत के महापंजीयक को इस डेटाबेस को बनाए रखने की जिम्मेदारी दी जाएगी जिसे बनाए रखने के लिए राज्यों में मुख्य रजिस्ट्रार के साथ काम करेगा।

केंद्र सरकार का एजेंडा और उद्देश्य:

- केंद्र सरकार सभी नागरिक डेटाबेस को एकसाथ एकीकृत करना चाहती है जिसका जनसंख्या रजिस्टर, मतदाता सूची, आधार कार्ड, राशन कार्ड, पासपोर्ट और ड्राइविंग लाइसेंस आदि से जोड़ने की प्रक्रिया में उपयोग किया जायेगा। यह कदम उपरोक्त पहचान पत्रों में जालसाजी और नकल की चुनौतियों का

भी समाधान करेगा। इसका उद्देश्य 1969 के जन्म और मृत्यु पंजीकरण अधिनियम में संशोधन करना है।

- 2019 के आर्थिक सर्वेक्षण ने एक मजबूत गोपनीयता ढांचे के साथ, एक केंद्रीय डेटाबेस बनाने की भी सिफारिश की है जो नागरिकों, सरकारी और निजी क्षेत्र की फर्मों को लाभान्वित कर सकता है क्योंकि भारत डिजिटल परिवर्तन की ओर अग्रसर है। इससे भारत के जनांकिकीय सर्वेक्षणों का बेहतर विश्लेषण करने में भारत के रजिस्ट्रार जनरल को भी मदद मिलेगी।
- NRC-CAA के समान ही इस कदम को कड़े विरोध का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए इस कदम के सार्वजनिक होने से पहले इस मुद्दे से संबंधित सभी हितधारकों को विश्वास में लाना होगा ताकि अफवाहों और नाजायज प्रचार को सामने आने से पहले रोका जा सके।

जन्म और मृत्यु पंजीकरण अधिनियम (आरबीडी)-1969:

- देश के सभी हिस्सों में आरबीडी अधिनियम के प्रावधानों के तहत जन्म और मृत्यु का पंजीकरण अनिवार्य है। जन्म और मृत्यु की रिपोर्ट करने के लिए 21 दिनों की सामान्य अवधि (घटना की तारीख से)निर्धारित की गई है।

आगे की राह:

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक राष्ट्र है। अपनी विशाल आबादी के लिए एकीकृत डेटाबेस बनाए रखना, समय की मांग है। यह न केवल अन्य डेटाबेस को संशोधित करने में सहायता करेगा, बल्कि (जन्म और मृत्यु) जनसांख्यिकी से संबंधित विभिन्न नीतियों के प्रदर्शन का बेहतर विश्लेषण भी करेगा।

6 राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी)

चर्चा में क्यों?

DMK के राज्यसभा सांसद पी. विल्सन ने केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार को पत्र लिखकर राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (NCBC) में पदाधिकारियों की नियुक्ति करने का आग्रह किया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आयोग ठीक से काम करे।

विल्सन ने कहा कि एनसीबीसी 1 मार्च से काम नहीं कर रहा है क्योंकि अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति नहीं की गई है। उन्होंने कहा कि सरकार की निष्क्रियता के कारण संवैधानिक संस्था का कामकाज ठप हो गया है।

एनसीबीसी के साथ समस्या:

- राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की नियुक्तियों के संबंध में कोई विशेष प्रावधान नहीं किया गया है जिससे इसकी कार्यप्रणाली प्रभावित हो रही है। एनसीबीसी की सिफारिश सरकार के लिए बाध्यकारी नहीं है। इसके अलावा एनसीबीसी के पास पिछड़ेपन को परिभाषित करने की कोई जिम्मेदारी नहीं है, इसलिए यह पिछड़ी जातियों के रूप में शामिल होने वाली जातियों की मांगों की वर्तमान चुनौती का समाधान नहीं कर सकता है।

एनसीबीसी के बारे में:

- भारत का राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत एक संवैधानिक निकाय (भारतीय संविधान के अनुच्छेद 338(B) के तहत इसे एक संवैधानिक निकाय बनाने के लिए संविधान में 123वां संविधान संशोधन विधेयक, 2017 और 102वां संशोधन अधिनियम, 2018) है। इसकी स्थापना 14 अगस्त, 1993 को हुई थी। इसका गठन राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग अधिनियम, 1993 के प्रावधानों के अनुसार किया गया था।

एनसीबीसी का कार्य:

- संविधान के तहत या किसी अन्य कानून के तहत सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के सभी मामलों की जांच तथा निगरानी करना, जो प्रदान किए गए सुरक्षा उपायों के उचित कामकाज से संबंधित हैं।
- सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के विकास की प्रगति का मूल्यांकन करने के साथ-साथ उनके सामाजिक-आर्थिक विकास में सक्रिय रूप से भाग लेना और सलाह देना।
- यह प्रतिवर्ष राष्ट्रपति को सुरक्षा उपायों के कामकाज पर आधारित रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। यदि इनमें से कोई रिपोर्ट राज्य सरकार से संबंधित किसी मामले से संबंधित है, तो उस रिपोर्ट की एक प्रति राज्य सरकार को भेजी जाती है।
- एनसीबीसी सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के संरक्षण, कल्याण, विकास और उन्नति के लिए जिम्मेदार है।

निष्कर्ष:

सरकार को पहले एनसीबीसी के रिक्त पदों पर नियुक्ति करनी चाहिए ताकि आयोग ठीक से काम कर सके। साथ ही एनसीबीसी के लिए यह वांछनीय है कि वह अपने कर्तव्य को ध्यान में रखते हुए ओबीसी के संवैधानिक अधिकार की रक्षा करे।

7 हेट स्पीच के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का आदेश

चर्चा में क्यों?

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने औपचारिक शिकायत की प्रतीक्षा किए बिना घृणास्पद भाषणों के अंतहीन प्रवाह से निपटने के लिए पुलिस को सक्रिय कार्यवाही का निर्देश दिया है। कोर्ट ने सभी धर्मों और सामाजिक समूहों के बीच धर्मनिरपेक्षता और बंधुत्व के संवैधानिक मूल्यों को रेखांकित किया है।

हेट स्पीच की परिभाषा:

- अभद्र भाषा की कोई विशिष्ट कानूनी परिभाषा नहीं है। IPC के कुछ प्रावधान भाषणों, लेखन, कार्यों, संकेतों और अभ्यावेदन का अपराधीकरण करते हैं जो हिंसा को भड़काते हैं और समुदायों एवं समूहों के बीच असामंजस्य फैलाते हैं।
- भारत के विधि आयोग के अनुसार, घृणास्पद भाषण आम तौर पर नस्ल, जातीयता, लिंग, यौन अभिविन्यास, धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में परिभाषित व्यक्तियों के समूह के खिलाफ घृणा के लिए एक उत्तेजना है।

हेट स्पीच के खिलाफ भारतीय कानून:

- भारतीय दंड संहिता की धारा-153(ए) और 505 को आम तौर पर मुख्य दंड प्रावधानों के रूप में लिया जाता है जो भड़काऊ भाषणों और अभिव्यक्तियों को दंडित करते है
- धारा-153(ए) के तहत, 'धर्म, जाति, जन्म स्थान, निवास, भाषा आदि के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता को बढ़ावा देना और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रतिकूल कार्य करना', तीन साल के कारावास से दंडनीय अपराध है। यदि पूजा स्थल, या धार्मिक पूजा या धार्मिक समारोहों में लगी सभा में प्रतिबद्ध है तो यह पांच साल की अवधि के सजा का प्रावधान है।
- बयान, प्रकाशन, रिपोर्ट, या अफवाह जो सशस्त्र बलों द्वारा विद्रोह को बढ़ावा देती है, या ऐसा भय या अलार्म का कारण बनती है कि लोगों को राज्य या सार्वजनिक शांति के खिलाफ अपराध करने के लिए प्रेरित कराती है; या किसी वर्ग या समुदाय को किसी अन्य वर्ग या समुदाय के खिलाफ अपराध करने के लिए उकसाती है इसे धारा-505(1) के तहत दंडित किया गया है जिसमे तीन साल तक की जेल की सजा का प्रावधान है।
- धारा-505(2) के तहत, वर्गों के बीच शत्रुता, घृणा या दुर्भावना पैदा करने या बढ़ावा देने वाले बयान देना अपराध है।

अभद्र भाषा पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले:

- **श्रेया सिंघल बनाम भारत संघ 2015:** इसमें संविधान के अनुच्छेद-19(1)(ए) द्वारा प्राप्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा-66(ए) द्वारा हनन के खिलाफ न्यायालय में मुद्दा उठाया गया था जिसमे कोर्ट ने माना कि चर्चा, वकालत और उकसावे के बीच अंतर होना चाहिए और यह भी माना कि पहले दो अनुच्छेद-19(1) का सार है।
- **अरूप भुइयां बनाम असम राज्य 2011:** कोर्ट ने कहा कि केवल एक कृत्य को तब तक दंडित नहीं किया जा सकता जब तक कि कोई व्यक्ति हिंसा का सहारा नहीं लेता या किसी अन्य व्यक्ति को हिंसा के लिए उकसाता नहीं है।
- **एस. रंगराजन आदि बनाम पी. जगजीवन राम 1989:** इस मामले में, अदालत ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को तब तक दबाया नहीं जा सकता जब तक कि इस तरह की स्थिति समुदाय/जनहित के लिए खतरनाक न हो।

हेट स्पीच के खिलाफ कार्यवाही, समय की मांग:

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भाषण की स्वतंत्रता के बीच एक स्पष्ट अंतर करने की आवश्यकता है जो किसी सार्वजनिक समूह या समाज के वर्ग के खिलाफ घृणा को उकसाती है।
- ऐसे समय में जब सांप्रदायिक रूप से प्रेरित सभाएं अपनी आवृत्ति में बढ़ रही हैं और अल्पसंख्यकों के खिलाफ भड़काऊ भाषणों में मुखर हो रही हैं, तो ऐसी स्थिति में पुलिस स्थिति के प्रति अधिक संवेदनशील होगी और नफरत भरे भाषणों को रोकेगी।

निष्कर्ष:

यह महत्त्वपूर्ण है कि इसके लिए एक अलग कानून होना चाहिए विशेष रूप से जो ऑनलाइन और सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित अपराधों के खिलाफ आईपीसी और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम में संशोधन किया जाना चाहिए।

1 भारत-मिस्र के संबंध

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के विदेशमंत्री एस. जयशंकर मिस्र के आधिकारिक दौरे पर रहे, जहाँ उन्होंने मिस्र के राष्ट्रपति के साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। विदेशमंत्री ने 2023 में भारत में होने वाले G-20 सम्मलेन के लिए मिस्र को आमंत्रित किया। विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने भारत और मिस्र के मध्य रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग के साथ अक्षय ऊर्जा, व्यापार, पर्यटन तथा कनेक्टिविटी में व्याप्त अवसरों को तलाशने पर जोर दिया।

प्राचीन ऐतिहासिक संबंध:

- दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से दो भारत और मिस्र की सभ्यताएं रही हैं जिनके बीच प्राचीन काल से निकट संपर्क रहा है। अशोक के शिलालेखों में टॉलेमी द्वितीय के तहत मिस्र के साथ संबंध का उल्लेख है जबकि आधुनिक समय में महात्मा गांधी और साद जघलौल दोनों अपने देशों की स्वतंत्रता पर साझा विचार रखते थे। 'इंडिया बाय द नाइल' (आईबीएन) वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव मिस्र में सबसे बड़े विदेशी त्यौहार के रूप में उभरा है जिसमें मणिपुरी लोक नृत्य, योग और आयुर्वेद, बॉलीवुड संगीत, स्ट्रीट फूड फेस्टिवल, फिल्मों की स्क्रीनिंग आदि शामिल था।

राजनीतिक संबंध:

- स्वतंत्रता के बाद से भारत और मिस्र द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा वैश्विक मुद्दों पर एक दूसरे के प्रति सहयोग करते रहे हैं। जमाल अब्देल नासिर और जवाहरलाल नेहरू के बीच घनिष्ठ मित्रता रही। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के समय दोनों देशों ने मिलकर तीसरी दुनिया का नेतृत्व किया था। उसके बाद लगातार दोनों देशों की तरफ से उच्च स्तरीय दौरे होते रहे हैं। भारत ने मिस्र की अध्यक्षता में होने वाले COP-27 में सहायता देने की बात की।

आर्थिक संबंध:

- भारत-मिस्र द्विपक्षीय व्यापार समझौता मार्च, 1978 और मोस्ट फेवर्ड नेशन क्लॉज पर आधारित है। कुल द्विपक्षीय व्यापार 2021-22 में 7.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया जोकि अपने सबसे उच्च स्तर पर है। शीर्ष पांच भारतीय निर्यात खनिज ईंधन, मांस, वाहन के पुर्जे, सूती धागे और जैविक रसायन थे जबकि शीर्ष पांच भारतीय आयात कच्चा तेल, रॉक फॉस्फेट, अकार्बनिक रसायन, कपास और फल हैं। 50 भारतीय कंपनियां मिस्र में लगभग 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किये हैं जो परिधान, कृषि, रसायन, ऊर्जा, ऑटोमोबाइल, खुदरा आदि क्षेत्र में मौजूद हैं। ये कंपनियां लगभग 35,000 मिस्रवासियों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करती हैं।
- **दोनों देशों के बीच हुई कुछ उच्च स्तरीय यात्रायें:** राजीव गांधी (1985), पी.वी. नरसिम्हा राव (1995), आई. के. गुजराल (1997) और डॉ मनमोहन सिंह (2009, NAM समिट) तथा मिस्र से राष्ट्रपति होस्नी मुबारक ने 1982 तथा 1983 में भारत का दौरा किया और फिर 2008 में। मिस्र के साथ उच्च स्तरीय आदान-प्रदान जारी रहा और राष्ट्रपति मोहम्मद मोर्सी ने मार्च 2013 में भारत का दौरा किया। भारतीय विदेश मंत्री ने मार्च 2012 और अगस्त 2015 में काहिरा का दौरा किया तथा मिस्र के विदेश मंत्री ने दिसंबर 2013 भारत का दौरा किया।

आगे की राह:

भूमध्यसागर और लाल सागर के बीच सामरिक स्थिति में होने से मिस्र की महत्ता भारत के लिए बढ़ जाती है। मिस्र के साथ व्यापक संबंधों को बढ़ाकर भारत न सिर्फ अक्षय ऊर्जा बल्कि कृषि आदि क्षेत्रों में एशिया-अफ्रीका ग्रोथ को बल मिल सकता है। मिस्र भारत के रक्षा सामानों जैसे-ब्रम्होस और तेजस में दिलचस्पी दिखाई है जिससे व्यापार की संभावना को कई गुना बढ़ाया जा सकता है।

2 IOR + DEFEXPO 2022

हिंद महासागर क्षेत्र प्लस (IOR) रक्षा मंत्रियों के सम्मेलन की मेजबानी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा 19 अक्तूबर, 2022 को गांधीनगर में DEFEXPO-2022 के मौके पर की गई। इस सम्मेलन में 40 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

IOR + डिफेंस कॉन्क्लेव चर्चा में क्यों?

- DEFEXPO के 12वें संस्करण के दौरान रक्षा मंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने हाल ही में यूक्रेनी संघर्ष के कारण सबसे कमजोर देशों के लिए ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव का उदाहरण देते हुए आईओआर में सुरक्षा तथा स्थिरता के लिए उभरते खतरों (हिंद महासागर में आतंकवाद, नशीले पदार्थों, अनियमित मछली पकड़ना आदि)

को संबोधित करने के लिए सामूहिक प्रयासों का आह्वान किया।

- साथ ही उन्होंने समुद्री संसाधनों के सतत दोहन को 21वीं सदी में राष्ट्रों के विकास और संवृद्धि के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन बताया।

DEFEXPO क्या है?

- रक्षा मंत्रालय का एक प्रमुख द्विवार्षिक कार्यक्रम है, जिसमें थलसेना, नौसेना, वायुसेना के साथ - साथ मातृभूमि सुरक्षा प्रणालियों का प्रदर्शन किया जाता है।

कॉन्क्लेव का विषय:

- 'हिंद महासागर में चुनौतियां और सहयोग'।

IOR + DEFEXPO 22 कॉन्क्लेव के उद्देश्य:

- सभी के लिए सुरक्षा और विकास के दृष्टिकोण के अनुरूप आईओआर देशों के भीतर रणनीतिक और वाणिज्यिक साझेदारी को बढ़ावा देना।
- DefEXpo-22 को व्यापार और निर्यात पर ध्यान देने के साथ एक बड़ी सफलता बनाना।
- स्वदेशी रक्षा प्लेटफार्मों और उत्पादों को बढ़ावा देना जो जनता को शामिल करने का वादा करता है और उन्हें इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित करता है।
- एयरोस्पेस और रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाना।
- आईओआर देशों से भारत में सरकार द्वारा सभी के लिए पारस्परिक लाभ हेतु बनाए गए अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाने का आग्रह किया।
- जहाज, समुद्री विमान, तटीय रडार और अन्य निगरानी प्रणाली, प्रशिक्षण तथा भारतीय शिपयार्ड तक पहुंच प्रदान करके भागीदार देशों की क्षमता निर्माण में सहयोग करना।

आगे की राह:

सही नीतियों और ढांचे के साथ,भारत एक वैश्विक अनुसंधान एवं विकास केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। भारत अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिक श्रेष्ठता के ढोंग को स्पष्ट रूप से खारिज करता है और प्रत्येक देश से आपसी सम्मान और लाभ के आधार पर एक वैश्विक व्यवस्था में विश्वास करता है। इसके लिए सहयोगात्मक प्रयास की आवश्यकता है ताकि हिंद महासागर का समुद्री विस्तार शांतिपूर्ण हो एवं क्षेत्रीय और वैश्विक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इसका बेहतर उपयोग किया जाए। पश्चिमी हिंद महासागर में ठोस अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों से समुद्री डकैती को रोकना, सामूहिक सहयोग का ही परिणाम होगा।

3 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपनी मिस्र यात्रा के दौरान व्यापार और गेहूं समझौते पर बात की तथा इसके साथ ही वैश्वीकरण पर चर्चा करते हुए कहा कि वैश्वीकरण जिसमें विशाल अवसर होते हैं लेकिन इसमें निहित जोखिम भी होते हैं जिन्हें समान विचारधारा वाले देशों द्वारा समाधान किया जाना चाहिए। इस पर एक दूसरे के साथ मिल कर विचार किया जा सकता है। मिस्र के राष्ट्रपति ने भी भारत से व्यापार बढ़ाने का आग्रह किया।

1970 के दशक से विश्व अर्थव्यवस्था में जो दूरगामी परिवर्तन हुए हैं, वास्तव में वे वैश्वीकरण को ही दर्शाते हैं। वैश्वीकरण विश्वव्यापी विकास के लिए व्यापक अवसर प्रदान करता है लेकिन यह समान रूप से प्रगति नहीं कर रहा है। कुछ देश दूसरों की तुलना में अधिक तेजी से वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकृत हो रहे हैं। जो देश एकीकृत करने में सक्षम हैं,वे तेजी से विकास करके गरीबी को कम कर रहे हैं।

वैश्वीकरण:

वैश्वीकरण एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो मानव नवाचार और तकनीकी प्रगति का परिणाम है। यह दुनिया को एक गांव के रूप में देखता है। यह दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं के बढ़ते एकीकरण को संदर्भित करता है, विशेष रूप से व्यापार और वित्तीय प्रवाह के माध्यम से। साथ ही यह अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार लोगों (श्रम) और ज्ञान (प्रौद्योगिकी) की आवाजाही को भी संदर्भित करता है। वैश्वीकरण के व्यापक सांस्कृतिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय आयाम हैं।

वैश्वीकरण में अपार संभावनाओं के साथ जोखिम:

1990 के दशक में उभरते बाजारों के संकट ने यह स्पष्ट किया था कि वैश्वीकरण के अवसर जोखिमों के बिना नहीं आते हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ एक ओर एशिया की नई औद्योगिककृत अर्थव्यवस्थाओं ने अच्छा प्रदर्शन किया है तथा विकासशील देशों ने समग्र रूप से विश्व व्यापार में वृद्धि की है, वहीं दूसरी ओर अफ्रीकी देशों का प्रदर्शन खराब रहा है।

- वैश्वीकरण आर्थिक विकास का एक अति चालक हो सकता है।
- सूचना, संचार और कृत्रिम बुद्धिमता सहित नई प्रौद्योगिकियाँ तेजी से बढ़ते विकास तथा उन्नति से संबंधित है। ये नवाचार उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर सकते हैं, लेकिन इसमें जिन देशों की पहुंच नहीं है, उनके पीछे छूटने का खतरा रहता है।

- आर्थिक गतिविधियां,जीवनशैली में बदलाव और शहरीकरण सहित वैश्वीकरण से जुड़े कई रुझान हमारे पर्यावरण पर प्रभाव डालते हैं जिससे जलवायु परिवर्तन में योगदान दे सकते हैं।
- व्यापार, मशीनीकरण, आउटसोर्सिंग आदि से जहां विनिर्माण क्षेत्र का विकास हुआ है और आगे प्रगति जारी है, वहीं इससे नौकरियों में नुकसान हुआ है। श्रम बाजारों में ये रुझान आय असमानताओं की उच्च दरों से जुड़े हैं।
- वैश्वीकरण गरीबी कम करने के लिए एक शक्तिशाली शक्ति हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप कई देशों ने अपने कल्याण और शैक्षिक प्रणालियों में सुधार देखा है। युवाओं को शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञान व आत्म विश्वास पैदा करके अमीर व गरीब राष्ट्रों के बीच की असमानताओं को दूर करने की कोशिश की जा सकती है।

आगे की राह:

समावेशी आर्थिक विकास और सतत विकास का समर्थन करने के लिए वैश्वीकरण से लाभ उठाएं जा सकते हैं, लेकिन उसके लिए मौजूदा प्रणाली के साथ-साथ उभरती प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना आवश्यक है, ताकि नीतिगत समाधान तैयार किए जा सकें। इससे आर्थिक विकास दर में गिरावट, नौकरियों की हानि, कम आय में बढ़ोतरी, खराब शिक्षा और स्वास्थ्य आदि में सुधार किए जा सकते हैं।

4 भारत का सूडान के साथ रुपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के निपटान पर जोर

चर्चा में क्यों?

भारत ने घरेलू मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में कदम उठाते हुए रुपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार करने हेतु सूडान से संपर्क किया है। हालांकि इससे पहले आरबीआई ने भी वैश्विक व्यापार के विकास को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन को रुपये में करने के लिए एक तंत्र का अनावरण किया था।

भारत और सूडान के मध्य व्यापारिक संबंध:

- सूडान, भारत का 75वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। 2021-22 के दौरान दोनों देशों के बीच कुल व्यापार 1.21 बिलियन डॉलर रहा है। भारत सूडान को प्राथमिक रूप से खाद्य वस्तुओं, पैट्रोलियम, विनिर्मित वस्तुयें, मशीनरी और उपकरण, रसायन, दवाओं तथा टेक्सटाइल का निर्यात करता है, वहीं सूडान से तिल, कपास, तरबूज के बीज, खाल और मूंगफली आदि का आयात किया जाता है। भारत इस समय सूडान से तेल का आयात नहीं करता है।

भारत सूडान के साथ रूपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्यों करना चाहता है?

- भारत ने रूपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण की कार्यविधि के तहत सूडान के साथ रूपये में कारोबार पर जोर दिया है।
- एक बार सूडान के राजदूत एल. तालेब ने ये भी कहा था कि भारतीय किसानों का सूडान में खेती करने के लिए स्वागत है, न केवल सूडान को खाद्य उपलब्धता के लिए बल्कि निर्यात बाजार के लिए भी।
- भारत अपने कच्चे तेल का 80 प्रतिशत आयात करता है, अत: भारत सूडान के साथ कच्चे तेल के आयात की ओर देख सकता है।
- सूडान में निवेश करके, भारत आसानी से अपने बाजार को बढ़ा सकता है। भारत द्वारा उपयोग की जाने वाली कृषि प्रौद्योगिकियां अफ्रीकी देशों के लिए बहुत अनुकूल हैं।
- पिछले कुछ वर्षों में, सूडान सोने के प्रमुख उत्पादक के रूप में उभरा है। सूडान सालाना 70 टन से अधिक सोने का उत्पादन करता है।
- भारत कृषि और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों के अलावा, सोने के खनन में निवेश कर सकता है ताकि भारत सूडान संबंध नई ऊंचाइयों तक पहुंच सकें।

भारत का सूडान के साथ रूपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ:

- इससे भारतीय रूपये को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में पहचान मिलेगी।
- भारत अफ्रीकी देश से कच्चे तेल का आयात करने व स्थानीय मुद्राओं में भुगतान करने में सक्षम होगा।
- इससे न केवल सूडान के साथ निर्यात को बढ़ावा मिलेगा बल्कि वैश्विक कारोबार का विकास भी होगा।
- देश के विदेशी मुद्रा भंडार को बचाया जा सकता है जो वर्तमान में कम हो रहा है।
- इससे भारत को कुछ ऐसे प्रतिबंधों को दरकिनार करने में मदद मिल सकती है, जो कुछ खास देशों के साथ अमेरिकी डॉलर जैसी ग्लोबल करेंसी में व्यापार की इजाजत देने से रोकता है।
- INR में वैश्विक व्यापार समुदाय की बढ़ती रुचि को समर्थन मिलेगा।
- विदेशी मुद्रा में उतार चढ़ाव का जोखिम कम होगा।
- रुपये के अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बनने से भारत का व्यापार घाटा कम होने की संभावना है जिससे वैश्विक बाजार में रुपया मजबूत

होगा।

व्यापार में आने वाली चुनौतियां:

- रुपये को पूरी तरह से परिवर्तनीय बनाना होगा।
- सभी देश रुपये में व्यापार करने के लिए सहमत नहीं हो सकते क्योंकि रुपये की विश्वसनीयता अमेरिकी डॉलर से कम है।
- रुपये की गिरावट को रोकना होगा।
- चीन की स्थिति अफ्रीका के संदर्भ में भारत से अधिक मजबूत है। इसलिए भारत को चीन की चुनौती से निपटने के रास्ते भी खोजने होंगे।

आगे की राह:

यदि रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण होता है, तो भारत वास्तव में आत्मनिर्भर होने की ओर अग्रसर होगा। भारत को अन्य देशों को अधिक निर्यात शुरू करने की आवश्यकता है। साथ ही, भारत को एक निर्माता बनने की जरूरत है क्योंकि इससे रुपये को व्यापार की मुद्रा बनने में काफी मदद मिलेगी। इस समय रूस अंतर्राष्ट्रीय भुगतान प्रणाली स्विफ्ट से बाहर हो गया है, इसलिए भारत रूस के साथ रुपये में व्यापार करके रुपये को वैलुएबल बना सकता है और व्यापार घाटा कम कर सकता है। इससे विदेशी मुद्रा भंडार को भी कम खर्च करना पड़ेगा। साथ ही रूपये के मूल्यह्रास को बहुत सीमित सीमा तक धीमा करने की जरूरत है, नहीं तो विदेशी निवेशक भारतीय बाजारों से पैसा बाहर निकल सकते है।

5 आस्ट्रेलिया-भारत-इंडोनेशिया की त्रिपक्षीय बैठक

चर्चा में क्यों?

हाल ही में आस्ट्रेलिया-भारत-इंडोनेशिया त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की बैठक न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 77वें सत्र के दौरान हुई। यह इस त्रिपक्षीय समूह की पहली व्यक्तिगत बैठक थी। लंबे समय से यह त्रिपक्षीय समूह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक के स्तर तक ही सीमित था, लेकिन इस बैठक के साथ इसे अब मंत्री स्तर तक बढ़ा दिया गया है।

ऑस्ट्रेलिया-भारत-इंडोनेशिया त्रिपक्षीय बैठक चर्चा में क्यों:

- काफी समय से आस्ट्रेलिया और भारत इस त्रिपक्षीय बैठक को मंत्रिस्तरीय तक बढ़ाने पर जोर दे रहे थे, लेकिन इंडोनेशिया की तरफ से सक्रिय भागीदारी नहीं थी क्योंकि इंडोनेशिया किसी ऐसे समूह का हिस्सा नहीं बनना चाहता था जो चीन को गलत संदेश भेजे, क्योंकि चीन उसके प्राथमिक भागीदारों में से एक है। साथ ही चीन कई बुनियादी ढांचा विकास परियोजनाओं का वित्तपोषण भी कर रहा है, जैसे- चीन जकार्ता-बांडुंग रेल नेटवर्क। चूंकि अब इंडोनेशिया आर्थिक और व्यापारिक क्षेत्र में विविधता लाने की कोशिश कर रहा है, साथ ही इंडोनेशियाई लोगों में चीन को लेकर अविश्वास भी बढ़ा है।

त्रिपक्षीय बैठक के मुख्य बिंदु:

- इस त्रिपक्षीय बैठक का मुख्य एजेंडा हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA), इंडो-पैसिफिक, G-20 और ब्लू इकोनॉमी के ढांचे में सहयोग को मजबूत करने की ओर ध्यान केंद्रित करना है।

त्रिपक्षीय बैठक से होने वाले लाभ:

आस्ट्रेलिया-भारत-इंडोनेशिया त्रिपक्षीय बैठक हिंद महासागर क्षेत्र और इंडो-पैसिफिक में प्रभावी साबित हो सकता है। यह वास्तव में एक सकारात्मक विकास है। जैसे:

- हिंद महासागर के तटवर्ती होने के कारण, तीनों देश हिंद महासागर में समुद्री शासन और समुद्री कूटनीति जैसे क्षेत्रों में एकसाथ काम कर सकते हैं।
- फिलहाल ब्लू इकोनॉमी पर चर्चा जोर पकड़ रही है। हिंद महासागर अनेकों जलवायु-प्रेरित चुनौतियों का सामना कर रहा है। जैसे-समुद्री संसाधनों की त्वरित कमी, प्राकृतिक आपदाएं आदि। इन क्षेत्रों में काम करने की बहुत संभावनाएं हैं।
- समुद्री शासन प्रारंभिक बिंदु हो सकता है। अन्य रास्ते जैसे समुद्री डोमेन जागरूकता, तट रक्षक प्रशिक्षण, कूटनीति अभ्यास और समुद्री बुनियादी ढांचे का विकास आदि विशेष रूप से शुरू किए जा सकते हैं।
- इंडोनेशिया नवंबर 2022 में आगामी G-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहा है, जहां त्रिपक्षीय बैठक के विभिन्न पहलुओं एवं परियोजनाओं पर चर्चा करना मददगार होगा।

आगे की राह:

हालांकि इंडोनेशिया, भारत और आस्ट्रेलिया के विदेश मंत्रियों की बैठक सकारात्मक रही है, इस गति को भविष्य में बनाए रखना आवश्यक है। भारत और आस्ट्रेलिया को विशेष रूप से समुद्री, आर्थिक और व्यापार, जलवायु परिवर्तन तथा हरित ऊर्जा क्षेत्रों में फोकस बढाने की आवश्यकता होगी, जो इंडोनेशियाई लोगों के हितों को भी ध्यान रखे जिससे त्रिस्तरीय संबंध समावेशी बन सके। भारत को अपने इंडो-पैसिफिक ओशन इनिशिएटिव (आईपीओआई) और कोएलिशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर (सीडीआरआई) में विशेष रूप से आईओआरए के सदस्य देशों को शामिल करने की जरूरत है।

6 एशियाई तटरक्षक एजेंसियों की 18वीं प्रमुखों की बैठक (HACGAM)

चर्चा में क्यों?

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में खुले, मुक्त और नियम-आधारित समुद्री सीमाओं के लिए भारत के संकल्प पर जोर दिया। उन्होंने 15 अक्टूबर, 2022 को नई दिल्ली में आयोजित एशियाई तटरक्षक एजेंसियों की 18वीं बैठक (HACGAM) में उद्घाटन भाषण के दौरान यह बात कही।

एशियाई तटरक्षक एजेंसियों के प्रमुखों की बैठक (HACGAM) के बारे में:

- 2004 में अपनी स्थापना के साथ, यह एशियाई क्षेत्र की प्रमुख तटरक्षक एजेंसियों की सुविधा के लिए काम करता है। यह भारत, चीन, आस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया, पाकिस्तान आदि सहित 23 देशों का एक समूह है। भारतीय तटरक्षक बल ने HACGAM सचिवालय के साथ मिलकर 18वें HACGAM की मेजबानी की। पहला HACGAM 2004 में टोक्यो में जापान तटरक्षक बल द्वारा आयोजित किया गया था।

इसकी महत्ता:

- हिन्द-प्रशांत क्षेत्र दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले और आर्थिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है जिसमें चार महाद्वीप एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और अमेरिका शामिल हैं। यह दुनिया की 60% आबादी और वैश्विक आर्थिक उत्पादन के दो तिहाई हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। यह क्षेत्र समुद्री संसाधनों जैसे-हाइड्रोकार्बन, मीथेन हाइड्रेट्स, समुद्री खनिज और दुर्लभ पृथ्वी धातु का केंद्रबिंदु होने के साथ ही विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का एक बड़ा स्रोत है। भारत के बड़े तटीय इलाकों की सुरक्षा हेतु, इस प्रकार का संगठन आवश्यक हो जाता है ताकि 2008 के मुंबई जैसे हमले से बचा जा सके। इसके माध्यम से हिन्द-प्रशांत क्षेत्र (दक्षिण चीन सागर और जापान सागर) में चीन के प्रभुत्व को कम किया जा सकता है।

आगे की राह:

इसके माध्यम से क्षेत्र में कनेक्टिविटी स्थापित करके सुशासन, पारदर्शिता, व्यवहार्यता तथा स्थिरता को बढाया जा सकता है जिससे संप्रभुता की रक्षा होगी और क्षेत्रीय एकता मजबूत होगी। अवैध, अनियमित और असूचित (आईयूयू) मछली पकड़ने तथा समुद्री प्रदूषण से, इस क्षेत्र के जलीय जीवन में बाधा उत्पन्न हुयी है जिसका समाधान करना आवश्यक है। बैठक के माध्यम से इस क्षेत्र को चोरी, तस्करी और आतंकवाद से सुरक्षा प्रदान किया जा सकता है ताकि सभी सदस्य देशों को इससे लाभ प्राप्त हो सके।

7 अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति

चर्चा में क्यों?

हाल ही में अमेरिकी प्रशासन ने राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि रूस से ज्यादा चीन, अमेरिका के लिए बड़ा खतरा है और पूरी दुनिया के समीकरणों को पलट सकता है।

राष्ट्रपति बाइडेन की टीम ने चीन को अमेरिका का इकलौता प्रतिद्वंद्वी बताया है। हालांकि, रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि अमेरिका ने चीन के साथ और विवाद की उम्मीद नहीं की है, वहीं बाइडेन की टीम ने रूस को एक ऐसा खतरा बताया है, जिसके चलते उसे नई रक्षा रणनीति में मजबूर होना पड़ रहा है। रूस की वजह से उत्पन्न मुद्रास्फीति की स्थिति को वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरा बताया गया है।

रणनीति के मुख्य बिंदु:

- देश और विदेश में चीन के व्यवहार ने आर्थिक, राजनीतिक, सुरक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में रूढ़िवादी दृष्टिकोण को जन्म दिया है।
- रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के यूक्रेन पर आक्रमण ने अमेरिकी कांग्रेस को विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर अपने आवश्यक दस्तावेज को दूसरे आयाम पर फिर से बदलने के लिए प्रेरित किया।
- 2030 तक अमेरिका को पहली बार दो प्रमुख परमाणु शक्तियों (चीन और रूस) को रोकना होगा।
- खतरों के प्रति परमाणु प्रतिरोधी प्रतिक्रिया बनी रहेगी।
- अमेरिका परमाणु शक्ति का आधुनिकीकरण करेगा और साथ ही सहयोगियों के प्रति विस्तारित प्रतिरोधक प्रतिबद्धताओं को मजबूत करेगा।

भारत की रणनीति:

- भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और एक प्रमुख रक्षा

भागीदार भी है। संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत के साझा दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए द्विपक्षीय और बहुपक्षीय रूप से मिलकर काम करेंगे। 75 वर्षों से संयुक्त राज्य अमेरिका ने एक मजबूत और लगातार रक्षा उपस्थिति बनाए रखी है और इस क्षेत्र की स्थिरता और शांति में सार्थक योगदान देना जारी रखेगा। क्वाड और औकस क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण होंगे, अपने सहयोगियों और भागीदारों को एक साथ जोड़कर अपनी सामूहिक ताकत को अधिक मजबूत करेंगे जिसमें समान विचारध ारा वाले इंडो-पैसिफिक और यूरोपीय देशों के बीच अच्छे संबंधों को प्रोत्साहित करना शामिल है।

एशिया में अन्य प्रमुख क्षेत्रीय भागीदारः

- राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति इंडो-पैसिफिक संधि सहयोगियों जैसे- आस्ट्रेलिया, जापान, कोरिया गणराज्य, फिलीपींस और थाईलैंड के साथ मजबूत प्रतिबद्धताओं की पुष्टि करता है और इन गठबंधनों का आधुनिकीकरण करना जारी भी जारी रखेगा। भारत अपनी पारस्परिक सुरक्षा संधि के तहत जापान की रक्षा के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता की पुष्टि करता हैं, जिसमें सेनकाकू द्वीप भी शामिल हैं।

निष्कर्षः

राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति दुनिया भर में लोकतंत्र, और बहुपक्षीय संस्थानों, उभरती प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, और व्यापार और अर्थशास्त्र के लिए नए मार्ग और निष्पक्ष नियमों को मजबूत करेगी। राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति भी सहयोगियों और भागीदारों के एक अद्वितीय गठबंधन के महत्व को प्राथमिकता देती है।

1 लिविंग प्लेनेट रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, डब्लू डब्लू एफ द्वारा 'लिविंग प्लेनेट रिपोर्ट-2022' प्रकाशित की गई, जिसमें पिछले 50 वर्षों में दुनिया भर में स्तनधारियों, पक्षियों, उभयचरों, सरीसृपों और मछलियों सहित वन्यजीव आबादी में 69 प्रतिशत की कमी की बात कही गयी है। यह रिपोर्ट प्रत्येक दो वर्ष पर प्रकाशित की जाती है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:

- लैटिन अमेरिका में वन्यजीव आबादी (94%) में सबसे बड़ी क्षेत्रीय गिरावट दर्ज की गई है।
- अफ्रीका ने 1970-2018 तक अपनी वन्यजीव आबादी में 66 प्रतिशत और एशिया-प्रशांत क्षेत्र में 55 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।
- डब्ल्यूडब्ल्यूएफ ने जैव विविधता के लिए छह प्रमुख खतरों के रूप में कृषि (भूमि उपयोग को सर्वाधिक नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है), शिकार, लॉगिंग, प्रदूषण, आक्रामक विदेशी प्रजातियां और जलवायु परिवर्तन की पहचान की है। रिपोर्ट में पाया गया है कि:
  - उभयचरों (जमीन और पानी दोनों पर रहने वाले जानवर) के लिए कृषि सबसे प्रमुख खतरा है।
  - भविष्य में शिकार और ट्रैपिंग से पक्षियों और स्तनधारियों को खतरा होने की सबसे अधिक संभावना है।
  - भौगोलिक रूप से दक्षिण पूर्व एशिया वह क्षेत्र है जहां प्रजातियों को महत्त्वपूर्ण स्तर पर खतरों का सामना करने की सबसे अधिक संभावना है।
  - ध्रुवीय क्षेत्रों और आस्ट्रेलिया व दक्षिण अफ्रीका के पूर्वी तटों पर जलवायु परिवर्तन के उच्च प्रभाव परिलक्षित होने की संभावना है, विशेष रूप से पक्षियों पर।
  - लगभग 50% उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के कोरल पहले ही समाप्त हो चुके हैं और अनुमान के मुताबिक 1.5 डिग्री सेल्सियस तापमान में वृद्धि होने पर, 70-90% उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के कोरल को क्षति हो सकती है।
  - फ्रेश वाटर की प्रजातियों की आबादी विश्व स्तर पर 83 प्रतिशत तक कम हुई है, जो इस बात को प्रमाणित करता है कि अपना ग्रह 'जैव विविधता और जलवायु संकट' का सामना कर रहा है।

डब्लू डब्लू एफ:

- वर्ल्डवाइड फण्ड फॉर नेचर (डब्लू डब्लू एफ) की स्थापना 1961 में ग्लैंड (स्विट्जरलैंड) में हुयी थी। यह पर्यावरण संबंधी जागरूकता को फैलाने का कार्य 100 से अधिक देशों में करने वाली संस्था है।
- डब्लू. डब्लू. एफ का उद्देश्य प्रकृति का संरक्षण करने के साथ ही, उन कारकों की पहचान करना है जो पृथ्वी की जैव विविधता को क्षति पहुँचाते हैं।

आगे की राह:

संधारणीय विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, सभी जिम्मेदार राष्ट्रों तथा, वैश्विक संस्थाओं को एक सामूहिक समावेशी दृष्टिकोण अपना करके उत्पादन, उपभोग, शासन और वित्त प्रबंधन जैसे विषयों में क्रांतिकारी नवाचार, पर्यावरण संरक्षी तकनीक अपनाने संबंधी पहल करनी चाहिए ताकि स्थिति को बिगड़ने से रोका जा सके।

2 विश्व स्लॉथ बियर दिवस

चर्चा में क्यों?

हाल ही में इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (IUCN) ने 12 अक्टूबर को 'विश्व स्लॉथ बियर दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इस अवधारणा को वन्यजीव एसओएस इंडिया द्वारा प्रस्तावित किया गया था, जो स्लॉथ बियर संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था है।

स्लॉथ बियर के बारे में:

- स्लॉथ बियर, भालू की आठ प्रजातियों में से एक है। उनके एक लंबा, झबरा गहरा भूरा फर, वी-आकार के छाती पैच और पंजे होते हैं।
- स्लॉथ बियर की 90 प्रतिशत आबादी भारत में पाई जाती है। इस प्रजाति का एक छोटा प्रकीर्णन नेपाल और श्रीलंका में भी पाया जाता है।
- इन्हें मधु (हनी) बहुत पसंद होने के कारण हनी बियर नाम से भी जाना जाता है।
- स्लॉथ बियर नाजुक होते हैं और सबसे दुर्जेय जंगली जानवर माने जाते हैं।

संरक्षण स्तर:

- IUCN स्थिति: संवेदनशील (Vulnerable)
- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972- अनुसूची।
- लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES)-

परिशिष्ट ।

- वे मुख्य रूप से दीमक और चींटियों को खाते हैं।
- वे हाइबरनेट नहीं करते हैं और उन्हें सबसे कम शोध वाली भालू प्रजाति के रूप में जाना जाता है।
- संकट- आवास हानि, आवास विखंडन, अवैध शिकार और मानव-भालू संघर्ष में वृद्धि।

स्लॉथ बियर दिवस का महत्त्व :

- यह दिन इस प्रजाति को उजागर करने का अवसर प्रदान करेगा।
- यह स्लॉथ बियर और उनके आवासों के संरक्षण को बढ़ावा देगा।
- यह अनुसंधान में तेजी लाएगा और इस कम ज्ञात प्रजाति के बारे में जन जागरूकता बढ़ाएगा।

संरक्षण के प्रयास:

- स्लॉथ बियर के लिए दुनिया का सबसे बड़ा बचाव और पुनर्वास केंद्र वन्यजीव एसओएस द्वारा स्थापित किया गया था, जिसे उत्तर प्रदेश में आगरा भालू बचाव सुविधा के रूप में जाना जाता है।
- स्लॉथ बियर दिवस, कम ज्ञात स्लॉथ बियर को वैश्विक केंद्र में लाएगा जो उनके संरक्षण को बढ़ावा देगा ही, साथ में उनके आवास संरक्षण को सुनिश्चित करेगा।

3 भारत में फ्लेक्स फ्यूल स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड इलेक्ट्रिक व्हीकल (FFV-SHEV)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने टोयोटा द्वारा भारत की पहली इथेनॉल-रेडी फ्लेक्स फ्यूल हाइब्रिड कार (FFV-SHEV) कोरोला एल्टिस हाइब्रिड का अनावरण किया गया।

फ्लेक्स ईंधन वाहन (एफएफवी) क्या है?

- फ्लेक्स ईंधन वाले वाहन लचीले ईंधन जैसे-पेट्रोल, इथेनॉल या पेट्रोल और इथेनॉल के मिश्रण पर चलते हैं।
- FFVs पेट्रोल से इथेनॉल में स्विच करने के लिए लचीलापन प्रदान करते हैं जिन्हें बैटरी पर भी संचालित किया जा सकता है। इस प्रकार यह कार्बन उत्सर्जन की कमी में योगदान देता है।

FFV और FFV-SHEV के बीच अंतर:

- FFV वे वाहन हैं जो लचीले ईंधन पर चल सकते हैं जिसमें 100 प्रतिशत तक इथेनॉल शामिल हो सकता है।
- **FFV-SHEV:** ये वे FFV हैं जो मजबूत हाइब्रिड इलेक्ट्रिक प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत होते हैं। मजबूत हाइब्रिड वाहन, जिन्हें फुल हाइब्रिड वाहन भी कहा जाता है, वे वाहन हैं जो पूरी तरह से इलेक्ट्रिक या पेट्रोल मोड पर चलते हैं। माइल्ड हाइब्रिड वाहन इनमें से किसी एक मोड पर पूरी तरह से चलने में असमर्थ हैं। वे प्रणोदन के मुख्य मोड के पूरक के रूप में माध्यमिक मोड का उपयोग करते हैं।

एफएफवी का वर्गीकरण:

- पेट्रोल-इथेनॉल अनुपात के आधार पर FFV को E-95, E-90 और E-85 के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

इथेनॉल क्या है?

- इथेनॉल बायोमास से बना एक नवीकरणीय ईंधन है जो मुख्य रूप से गन्ने का उप-उत्पाद है, लेकिन इसे अनाज से भी प्राप्त किया जा सकता है। एक अच्छा FFV 83 प्रतिशत तक इथेनॉल-मिश्रित ईंधन का उपयोग कर सकता है, जो एक वैश्विक मानक है।

FFVs का महत्त्व :

- इथेनॉल भारत में पेट्रोल से काफी सस्ता है। यह भारत को ईंधन आयात पर अपनी निर्भरता को कम करने में मदद करेगा।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** FFV इथेनॉल-मिश्रित गैसोलीन का उपयोग करते हैं जो गैसोलीन की तुलना में कम जहरीले धुएं का उत्पादन करता है। इथेनॉल ग्रीनहाउस गैसों में योगदान नहीं देता है।
- **किसानों को अधिक लाभ:** भारत मक्का, गन्ना और गेहूं के अधिशेष उत्पादन का देश है। साथ ही इथेनॉल का अनिवार्य सम्मिश्रण किसानों को एक विकल्प देकर उच्च आय प्राप्त करने में मदद कर सकता है।
- **कर लाभ:** FFV पर प्रदान किया गया टैक्स क्रेडिट करदाता के कर दायित्व को काफी हद तक कम कर देता है जिससे आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा मिलेगा।

फ्लेक्स की चुनौतियां-ईंधन वाहन:

- **गैर-किफायती:** यह गैसोलीन की तुलना में ईंधन दक्षता को कम करता है। इसके अलावा, भारत में फ्लेक्स ईंधन स्टशनों की कमी है।
- **इंजन पर प्रभाव:** इथेनॉल जंग लगाकर इंजन को नुकसान पहुंचा सकता है, क्योंकि यह आसानी से गंदगी के कणों को अवशोषित कर लेता है।
- **खाद्य सुरक्षा:** खाद्यान्नों को एथेनॉल उत्पादन की ओर मोड़ने से खाद्य उत्पादों के कीमत में बढ़ोत्तरी हो सकती है। साथ ही, भारत में खाद्य फसलें खराब मौसम प्रभावित होती हैं, जिससे एफएफवी की आपूर्ति प्रभावित हो सकती है और खाद्य सुरक्षा

खतरे में पड़ सकता है।

आगे की राह:

भारत में सुचारू और कुशल FFV-संस्कृति के लिए एक व्यापक रोडमैप की आवश्यकता है। यह भारत को शीर्ष वैश्विक उत्पादकों में से एक बनाने के लिए सशक्त करेगा।

4 सितंबर, 2021 इतिहास का पांचवां सबसे गर्म सितम्बर हुआ रिकॉर्ड

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रकाशित यूनाइटेड स्टेट्स के नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) की रिपोर्ट में, सितंबर 2021 को इतिहास का पांचवां सबसे गर्म सितंबर चिह्नित किया गया।

रिपोर्ट के अनुसार जलवायु:

- पिछले एक दशक में धरती का तापमान तेजी से बढ़ रहा है, जिसका नतीजा है कि इतिहास के 10 सबसे गर्म सितम्बर, 2009 के बाद दर्ज किए गए हैं। यदि एनओएए द्वारा जारी आंकड़ों को देखें तो 2015, 2016, 2019 और 2020 में सितम्बर का तापमान सबसे ज्यादा था, जब तापमान में हो रही वृद्धि 20वीं सदी के औसत तापमान से करीब 0.94 डिग्री सेल्सियस ज्यादा दर्ज की गई थी।

उल्लेखनीय जलवायु घटनाएं:

- सितंबर 2022 में बर्फ की सीमा (आवरण) रिकॉर्ड स्तर पर 8 वीं सबसे कम सितंबर में थी। सितंबर में आर्कटिक का न्यूनतम बर्फ कवर था।
- **उष्णकटिबंधीय परिदृश्य:** पूरे महीने पूर्वी और पश्चिमी प्रशांत घाटियों में तूफानों तथा चक्रवातों की आवृत्ति औसत स्तर से अधिक रही। कैरेबियन, दक्षिण-पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका, मध्य यूरोप, उत्तरी और दक्षिणी एशिया एवं ऑस्ट्रेलिया के कुछ हिस्सों में औसत से अधिक वर्षा देखी गई।

बढ़ते तापमान के लिए जिम्मेदार कारक:

प्राकृतिक कारक :

- **ज्वालामुखीय गतिविधि-** ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान गैस और राख निकलती है जो जलवायु को प्रभावित करती है।
- **प्लेट टेक्टोनिक्स-** पृथ्वी के तापमान के मूल में परिवर्तन से मेंटल प्लम और संवहन धाराओं में परिवर्तन होता है जो पृथ्वी की प्लेट को समायोजित करने के लिए मजबूर करता है। यह वैश्विक, स्थानीय जलवायु और वातावरण को प्रभावित करता है।
- **महाद्वीपीय बहाव-** भू-भाग का निरंतर बहाव पृथ्वी की जलवायु में एक प्रमुख भूमिका निभाता है।
- **महासागरीय धाराएँ-** महासागरों में पानी के तापमान का अंतर क्षेत्र की जलवायु को प्रभावित करता है।

मानवजनित कारक:

- **ग्रीनहाउस गैस प्रभाव-**ग्रीनहाउस गैसें पृथ्वी की सतह द्वारा उत्सर्जित अवरक्त विकिरण को फंसा लेती हैं जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि होती है। सामान्य ग्रीनहाउस गैसों में जल वाष्प, कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड आती हैं।
- **वायुमंडलीय एरोसोल-** वे अवरक्त विकिरण को बिखेरते हैं और अवशोषित करते हैं जिससे तापमान बढ़ जाता है।
- **भूमि उपयोग पैटर्न में परिवर्तन-** वनों की कटाई, अल्बेडो में वृद्धि, मरुस्थलीकरण आदि पृथ्वी के तापमान में वृद्धि का कारण बना है।

जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभाव:

- **बढ़ता समुद्री जल स्तर-** बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियर के पिघलने की दर बढ़ी है जिससे समुद्री जल स्तर में वृद्धि हुई है।
- **महासागरीय अम्लीकरण-** ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि से महासागरों द्वारा CO_2 अवशोषण की दर में वृद्धि हुई है जो महासागर को अम्लीय बनाती है।
- **प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति-** बढ़ते तापमान के कारण सूखे, जंगल की आग, चक्रवात, भूस्खलन, बाढ़ की आवृत्ति बढ़ रही है।
- **उभरती स्वास्थ्य समस्याएं-** दुनिया में बढ़ते तापमान के कारण संक्रामक रोगों, अत्यधिक गर्मी की लहरों और आपदाओं के कारण जनधन का नुकसान हो रहा है।
- **आर्थिक प्रभाव-** विद्वानों का अनुमान है कि अगर शीघ्र ही कार्यवाही नहीं की गई तो जलवायु परिवर्तन पर वार्षिक वैश्विक जीडीपी का लगभग 5 से 20 प्रतिशत खर्च हो सकता है।

आगे की राह:

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक मुद्दा है, इसके प्रतिकूल प्रभाव को दूर करने के लिए वैश्विक प्रयासों और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। वैश्विक समुदाय के समावेशी और सतत विकास के लिए एक वैश्विक व्यापक कार्य योजना बनाकर, कार्य करने की आवश्यकता है ताकि समय रहते चीजें संभाली जा सकें।

5 वन्यजीव बोर्ड ने मध्य प्रदेश में नए बाघ अभयारण्य को दी मंजूरी

चर्चा में क्यों?

मध्य प्रदेश वन्य जीव बोर्ड ने 2339 कि.मी. में फैले दुर्गावती टाइगर रिजर्व के नाम से एक नए रिजर्व को मंजूरी दी है, जिसमें 1414 वर्ग किमी क्षेत्र कोर क्षेत्र के रूप में और 925 वर्ग किमी बफर क्षेत्र के रूप में है। अब प्रस्ताव को अंतिम मंजूरी के लिए राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) भेजा गया है।

केन-बेतवा नदी जोड़ने की परियोजना के मद्देनजर पन्ना के लिए वन्यजीव प्रबंधन योजना के तहत, एनटीसीए ने उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सरकारों को नए बाघ अभयारण्यों को अधिसूचित करने के लिए कहा था। केंद्र के साथ दोनों राज्य सरकारें बुंदेलखंड क्षेत्र में जल संकट को समाप्त करने के लिए 44,605 करोड़ रुपये की नदी जोड़ो परियोजना लागू कर रही हैं।

सितम्बर, 2022 उत्तर प्रदेश कैबिनेट ने चित्रकूट जिले में रानीपुर वन्यजीव अभयारण्य (आरडब्ल्यूएस) में राज्य के चौथे बाघ अभयारण्य की अधिसूचना को मंजूरी दी थी। आरडब्ल्यूएस में कोई बाघ नहीं है, लेकिन जानवरों के पगमार्क अक्सर वहां देखे जाते हैं क्योंकि पास के पन्ना टाइगर रिजर्व (पीटीआर) से बाघ अक्सर वहां आते हैं। दोनों संरक्षित क्षेत्र एक दूसरे से सिर्फ 150 किमी दूर है।

दुर्गावती टाइगर रिजर्व के बारे में:

- 2,339 वर्ग किलोमीटर का नया टाइगर रिजर्व नरसिंहपुर, दामोह और सागर जिलों में फैला होगा। बाघ की प्राकृतिक आवाजाही के लिए दुर्गावती के साथ पन्ना टाइगर रिजर्व (पीटीआर) को जोड़ने वाला एक ग्रीन कॉरिडोर विकसित किया जाएगा।
- नौरादेही वन्यजीव अभयारण्य जिसमें पांच बाघ हैं, सतपुड़ा और पीटीआर के बीच एक गलियारा है, जबकि दुर्गावती वन्यजीव अभयारण्य बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के लिए एक हरा गलियारा है। यह नया रिजर्व बांधवगढ़ के अतिरिक्त बाघों को भी समायोजित करेगा।

पीटीआर के बारे में:

- पन्ना भारत का बाईसवां टाइगर रिजर्व और मध्य प्रदेश में पांचवां टाइगर रिजर्व है। यह टाइगर रिजर्व विंध्य पर्वतमाला में स्थित है और राज्य के उत्तर में पन्ना और छतरपुर जिलों में फैला हुआ है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान 1981 में बनाया गया था जिसे 1994 में भारत सरकार द्वारा एक प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था। 2020 में, यूनेस्को ने अपने अद्वितीय परिदृश्य और प्रबंधन के कारण बायोस्फीयर के वैश्विक नेटवर्क में पीटीआर को शामिल किया।

एनटीसीए के बारे में:

- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण की स्थापना दिसंबर 2005 में टाइगर टास्क फोर्स की सिफारिश के बाद की गई थी, जिसका गठन भारत के प्रधानमंत्री द्वारा प्रोजेक्ट टाइगर और भारत में कई टाइगर रिजर्व के पुनर्गठित प्रबंधन के लिए किया गया था।

आगे की राह:

हालांकि, विशेषज्ञों का कहना है कि बाघ एकमात्र ऐसी प्रजाति नहीं है जो इससे प्रभावित होगे। पन्ना मध्य भारत में गिद्धों की सबसे बड़ी आबादी का घर है और, प्राकृतिक निवास के नुकसान का उन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा जिससे ये रानी दुर्गावती अभयारण्य में जा सकते है। यह चिंता का विषय है जिसका समाधान भी होना चाहिए।

6 लेड पेंट एलायंस का वार्षिक अपडेट

चर्चा में क्यों?

लेड पेंट को खत्म करने के लिए ग्लोबल अलायंस (लीड पेंट एलायंस) ने पेंट में लेड पर कानूनी सीमाओं की वैश्विक स्थिति पर अपना वार्षिक अपडेट प्रकाशित किया है।

लेड पेंट के बारे में:

- लेड पेंट या लेड-आधारित पेंट वह पेंट होता है जिसमें लेड होता है। लेड क्रोमेट और लेड कार्बोनेट सबसे आम रूप हैं। सुखाने में तेजी लाने, स्थायित्व बढ़ाने, पेंट की चमक बनाए रखने और जंग का कारण बनने वाली नमी का विरोध करने के लिए लेड को पेंट में डाला जाता है। यह पेंट से जुड़े मुख्य स्वास्थ्य और पर्यावरणीय खतरों में से एक है।

लेड पेंट एक्सपोजर सीमा के बारे में:

- लेड एक्सपोजर की कोई निश्चित सीमा निर्धारित नहीं है, देशों में मॉडल कानून और लेड पेंट को विनियमित करने में लेड के लिए एकाग्रता सीमा 90 पार्ट प्रति मिलियन (पीपीएम) है, जो लेड पेंट के लिए सबसे कम, सबसे सुरक्षात्मक नियामक सीमा है।

लेड प्रदूषण का प्रभाव:

- लेड मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र को स्थायी नुकसान पहुंचाता है, और प्रजनन क्षमता को प्रभावित करता है, जिससे छोटे बच्चे और गर्भवती महिलाएं विशेष रूप से कमजोर हो जाती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान है कि 2019 में रसायनों के संपर्क में आने से होने वाली लगभग आधी मौतें लेड के संपर्क में आने तथा इसके परिणामस्वरूप होने वाली हृदय रोगों के कारण हुई।

लेड पेंट एलायंस के बारे में:

- यूएनईपी और डब्ल्यूएचओ लेड पेंट एलायंस के लिए संयुक्त सचिवालय के रूप में काम करते हैं, जिसकी अध्यक्षता अमेरिका करता है। एलायंस को औपचारिक रूप से 2011 में शुरू किया गया था ताकि अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सके। एवं लेड पेंट के व्यावसायिक जोखिम को कम किया जा सके। इसका उद्देश्य लेड पेंट के निर्माण, आयात और बिक्री को रोकने के लिए उपयुक्त राष्ट्रीय नियामक ढांचे के माध्यम से सभी देशों में लेड पेंट कानूनों की स्थापना को बढ़ावा देना है।

निष्कर्ष:

लेड के जोखिम को खत्म करना, जैसे कि सीसा पेंट के निर्माण, बिक्री और आयात को रोकने के लिए कानून स्थापित करना, लोगों को सीसा के प्रतिकूल प्रभावों से बचाने का सबसे प्रभावी तरीका है। अधिकांश औद्योगिक देशों ने 1970 और 1980 के दशक में आवासीय और सजावटी पेंट की प्रमुख सामग्री को नियंत्रित करने के लिए कानूनों या विनियमों को अपनाया। हालांकि, दुनिया के कई हिस्सों में पेंट में लेड का इस्तेमाल जारी है। मानव स्वास्थ्य की रक्षा के लिए दुनिया के हर देश में कानूनों, विनियमों या लागू करने योग्य मानकों की आवश्यकता होती है।

7 काला हिरण संरक्षण प्रजनन सुविधा केंद्र

चर्चा में क्यों?

पंजाब वन और वन्यजीव विभाग ने फाजिल्का जिले के अबोहर उपखंड में गुरू जम्भेश्वर वन्यजीव अभयारण्य में काले हिरणों के लिए एक संरक्षण प्रजनन सुविधा केंद्र खोलने का निर्णय लिया है। सुखचौन गांव के सरपंच मनोज गोदारा ने पंजाब के राज्य पशु काले हिरण के संरक्षण के लिए अपने परिवार के ट्रस्ट से 10 एकड़ जमीन मुफ्त में दान करने की पेशकश के बाद राज्य द्वारा शुरू की जाने वाली यह पहली परियोजना है जो प्राइवेट भूमि पर स्थापित होने जा रही है। इसको पूर्ण रूप से चालू होने के लिए अब केंद्र सरकार की अनुमति की आवश्यकता है।

इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी?

- पिछले कुछ वर्षों में ब्लैकबक्स (स्थानीय भाषा में हिरन कहा जाता है) की संख्या में काफी तेजी से कमी आई है। भोजन की सीमित उपलब्धता और आवारा पशुओं और कुत्तों की आबादी में वृद्धि के कारण, काले हिरण राजस्थान के आसपास के क्षेत्रों में चले गए हैं। काला हिरण अबोहर की सांस्कृतिक पहचान है और बिश्नोई समुदाय के लिये काफी महत्त्वपूर्ण है।

ब्लैकबक के बारे में:

- ब्लैकबक या भारतीय मृग, भारत और नेपाल के मूल निवासी मृग की एक प्रजाति है। यह पूरे प्रायद्वीपीय भारत में राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, ओडिशा और अन्य क्षेत्रों में पाए जाते है।

सुरक्षा की स्थिति:

- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972: अनुसूची I
- आईयूसीएन स्थिति: कम से कम चिंता (least concern)
- साइट्स: परिशिष्ट III
- इसे पंजाब, हरियाणा और आंध्र प्रदेश का राज्य पशु घोषित किया गया है।

सांस्कृतिक महत्त्व:

- यह हिंदू धर्म के लिए पवित्रता का प्रतीक है क्योंकि इसकी त्वचा और सींग एक पवित्र वस्तु के रूप में माने जाते हैं। बौद्ध धर्म के लिए, यह सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

गुरू जम्भेश्वर वन्यजीव अभयारण्य:

- गुरु जंबेश्वर वन्यजीव अभयारण्य को 1989 में अभ्यारण्य घोषित किया गया था जिसमें उस समय १३ गावों जमीन लगी थी। यह एक अद्वितीय वन्यजीव अभयारण्य है जिसका स्वामित्व पूरी तरह से निजी व्यक्तियों या पंचायतों के पास है।

निष्कर्ष:

अभ्यारण्य एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ जानवरों के आवास और उनके आसपास किसी भी प्रकार की अशांति से रक्षा की जाती है। इन क्षेत्रों में जानवरों को पकड़ना, मारना और शिकार करना सख्त वर्जित है। जंगली जानवरों की घटती आबादी के संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी वन्यजीव अभयारण्य का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।

1 साइबर सुरक्षा अभ्यास- पॉवरएक्स

चर्चा में क्यों?

हाल ही में इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम (सीईआरटी-इन) ने पावर-सीएसआईआरटी (पावर सेक्टर में कंप्यूटर सिक्योरिटी इंसीडेंट रिस्पांस टीम) के सहयोग से 193 पावर सेक्टर यूटिलिटीज के लिए साइबर सुरक्षा अभ्यास 'पॉवरएक्स' का आयोजन किया।

पॉवरएक्स -2022 के बारे में:

- **उद्देश्य:** आईटी और ओटी सिस्टम में साइबर घटना को पहचानें, विश्लेषण करें और प्रतिक्रिया दें।
- **थीम:** आईटी और ओटी अवसंरचना में साइबर प्रेरित व्यवधान का बचाव।

अभ्यास का आयोजन सीईआरटी-इन द्वारा अपने अभ्यास सिमुलेशन प्लेटफॉर्म पर किया गया था।

इस अभ्यास ने विभिन्न विद्युत क्षेत्र की उपयोगिताओं (Utilities) के लगभग 350 से अधिक अधिकारियों की मेजबानी की जिससे उन्हें साइबर खतरों को सीखने, अभ्यास करने और प्रतिक्रिया देने में मदद मिल सकती है।

सीईआरटी-इन के बारे में:

- भारतीय कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम (सीईआरटी-इन) इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक संगठन है जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय साइबर स्पेस को सुरक्षित करना है। जिसकी स्थापना 2004 में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 के तहत की गई थी।
- सीईआरटी-इन हैकिंग और फिशिंग जैसे साइबर सुरक्षा संबंधी खतरों से निपटने के लिए नोडल एजेंसी है।
- यह संगठन देश में साइबर घटनाओं से संबंधित जानकारी एकत्र करने, विश्लेषण करने और प्रसारित करने के लिए जिम्मेदार है।
- यह निकाय साइबर खतरों के प्रति पूर्वानुमान, चेतावनी और आपातकालीन उपाय करने के लिए भी जिम्मेदार है।
- **पावर-सीएसआईआरटी के बारे में:** यह कंप्यूटर सुरक्षा से संबंधित मुद्दों के जवाब में शामिल विशेषज्ञों की एक टीम है।

विद्युत क्षेत्र में साइबर सुरक्षा पर सरकार के दिशानिर्देश:

- केंद्र सरकार ने पूरे देश में लागू होने वाले अक्टूबर 2021 में साइबर सुरक्षा पर दिशा-निर्देश जारी किए। ये दिशा-निर्देश विभिन्न बिजली उपयोगिताओं (Utilities) की तैयारी में सुधार लाने और देश के बिजली क्षेत्र में एक साइबर सुरक्षित पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की मांग करते हैं।

आगे की राह:

पिछले कुछ वर्षों से देश में साइबर सुरक्षा के खतरे बढ़ रहे हैं। पॉवरएक्स जैसी पहल इसमें जागरूकता पैदा करेगी और साइबर-सुरक्षित भारत के लक्ष्य को साकार करने में मदद करेगी।

2 स्मार्ट प्रोटीन शिखर सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

गुड फूड इंस्टीट्यूट इंडिया (जीएफआई इंडिया) द्वारा वार्षिक प्रमुख कार्यक्रम 'स्मार्ट प्रोटीन शिखर' सम्मेलन का शुभारंभ किया गया।

प्रमुख बिंदु:

- स्मार्ट प्रोटीन शिखर सम्मेलन का आयोजन फेडरेशन ऑफ इंडियन चौंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI) के सहयोग से शुरू हुआ। इसके अलावा इसे खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (MoFPI), कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) तथा भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) के 'ईट राइट इंडिया' पहल का समर्थन प्राप्त था।

जीएफआई के बारे में:

- द गुड फूड इंस्टीट्यूट (जीएफआई) एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो वैकल्पिक प्रोटीन के विकास को बढ़ावा देने के लिए विश्व स्तर पर काम कर रहा है।
- यह स्मार्ट प्रोटीन क्षेत्र में प्राथमिक विशेषज्ञ संगठन और संयोजक निकाय है।
- इसके पांच महत्त्वपूर्ण देशों और क्षेत्रों में संगठन हैं, जो इस प्रकार हैं: इजराइल, एशिया-प्रशांत, ब्राजील, यूरोप और भारत।
- भारत में यह सरकारी संगठनों, उद्यमियों, निगमों, विश्वविद्यालयों आदि के साथ काम करके, सभी के लिए स्थायी प्रोटीन को बढ़ावा देने और उन्हें उपलब्ध कराने की ओर कार्य करता है।

स्मार्ट प्रोटीन:

- स्मार्ट प्रोटीन ऐसे वैकल्पिक प्रोटीन होते हैं जो जानवरों तथा डेयरी आदि से प्राप्त प्रोटीन को भरोसेमंद और अनुमानित रूप

से प्रतिस्थापित कर सकते हैं।

- ये प्रोटीन पौधों एवं किण्वन आदि से निकाले जाते हैं जो उपभोक्ताओं को प्रतिरूप संवेदी अनुभव प्रदान करते हैं तथा पारंपरिक पशु प्रोटीन स्रोतों की तुलना में ज्यादा लाभ प्रदान करते हैं।

स्मार्ट प्रोटीन की आवश्यकता:

- विश्व की बढ़ती जनसंख्या के साथ, लगभग 820 मिलियन लोग या तो भोजन की कमी या खाद्य संकट से पीड़ित हैं।
- वर्तमान आहार प्रवृत्तियों के अनुसार, विश्व में भोजन की आवश्यकता 2050 में बढ़कर 60% हो जाएगी।
- डब्ल्यूएचओ (WHO) की रिपोर्ट के अनुसार रोगाणुरोधी प्रतिरोध जल्द ही एंटीबायोटिक युग का अंत कर सकता है और भविष्य में 75% संक्रमण खाद्य-जनित होंगे, ऐसा अनुमान है।
- इसके अलावा औद्योगिक स्तर पर पशु पालन को प्रभावित करते हैं। पशुधन क्षेत्र ग्रीन हाउस गैसों के प्रमुख स्रोतों में से एक है।
- इसलिए अधिक टिकाऊ, सुरक्षित और समान खाद्य आपूर्ति हेतु पौधों, कोशिकाओं और सूक्ष्मजीवों से निर्मित स्मार्ट प्रोटीन एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

आगे की राह:

स्मार्ट प्रोटीन समिट 2022 में प्रस्तुत 'डेलॉइट इंडिया- Deloitte India' की रिपोर्ट में, देश के स्मार्ट प्रोटीन बाजार (घरेलू और निर्यात)के वर्ष 2030 तक 33,194 करोड़ रुपये या 4.2 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

हालांकि स्मार्ट प्रोटीन अपेक्षाकृत एक नया विचार है, लेकिन इसमें व्यापक वैश्विक क्षमता है। इस क्षेत्र में भारतीय किसानों के साथ संपर्क स्थापित करके, स्थानीय उत्पादकों से प्रोटीन की आपूर्ति सुनिश्चित करने की अपार संभावनाएं हैं।

3 आईआईटी गुवाहाटी में 'परम कामरूप' सुपरकंप्यूटर सुविधा

चर्चा में क्यों?

भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी में 'परम कामरूप' सुपरकंप्यूटर सुविधा और समीर की एक उच्च-शक्ति सक्रिय और निष्क्रिय घटक प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। परम कामरूप, पूर्वोत्तर क्षेत्र में अपनी तरह का एक सुपर कंप्यूटर है, जिसे राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन के तहत स्थापित किया गया है।

सुपर कंप्यूटर परम कामरूप इस क्षेत्र में कई मुद्दों के समाधान के साथ-साथ एडवांस कंप्यूटिंग, हेल्थकेयर तकनीक प्रदान करेगा। इस सुपर कंप्यूटर के कई घटक स्वदेशी रूप से विकसित हुए हैं।

परम-कामरूप के बारे में:

- परम-कामरूप राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनएसएम) के तहत स्थापित एक अत्याधुनिक सुपर कंप्यूटर है। इस सुविधा से, IIT गुवाहाटी मौसम और जलवायु, जैव सूचना विज्ञान, कम्प्यूटेशनल रसायन विज्ञान, आणविक गतिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, डेटा साइंस आदि पर शोध करने में सक्षम होगा।
- समीर प्रयोगशाला का उपयोग उच्च शक्ति वाले माइक्रोवेव निष्क्रिय और सक्रिय घटकों के डिजाइन और विकास के लिए किया जाएगा। यह सुविधा वैज्ञानिकों को उच्च शक्ति वाले माइक्रोवेव इंजीनियरिंग के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास गतिविधियों को अंजाम देने के लिए एक मंच प्रदान करेगी।

सुपर कंप्यूटर के बारे में:

- सुपर कंप्यूटर एक ऐसा कंप्यूटर है जिसमें बहुत तेज गति और मेमोरी होती है। इस प्रकार का कंप्यूटर अपनी पीढ़ी के किसी भी अन्य कंप्यूटर की तुलना में तेजी से कार्य कर सकता है। वे आमतौर पर उस समय बनाए गए साधारण पर्सनल कंप्यूटरों की तुलना में हजारों गुना तेज होते हैं। सुपरकंप्यूटर अंकगणितीय कार्य बहुत तेजी से कर सकते हैं, इसलिए उनका उपयोग मौसम की भविष्यवाणी, कोड-ब्रेकिंग, आनुवंशिक विश्लेषण और अन्य कार्यों के लिए किया जाता है, जिन्हें कई गणनाओं की आवश्यकता होती है।

भारत में सुपर कंप्यूटर का अनुप्रयोग:

- जीनोमिक्स और दवा की खोज के लिए।
- शहरी पर्यावरणीय मुद्दों (मौसम विज्ञान, जल विज्ञान, वायु गुणवत्ता) के समाधान के लिए विज्ञान आधारित निर्णय समर्थन ढांचे आदि के लिए।
- भारत के नदी घाटियों के लिए बाढ़ पूर्व चेतावनी और पूर्वानुमान प्रणाली के लिए।
- तेल और गैस की खोज आदि में सहायता के लिए भूकंपीय इमेजिंग के लिए एचपीसी सॉफ्टवेयर सूट।

राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन:

- भारत ने अपनी परम श्रृंखला के साथ कम लागत पर सुपर कंप्यूटर बनाने में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। अपनी

क्षमता को और बढ़ाने और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, भारत सरकार ने 2015 में राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनएसएम) लॉन्च किया। एनएसएम के तहत, 70 से अधिक उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग के साथ सुपरकंप्यूटिंग ग्रिड का उपयोग करके देश में अनुसंधान एवं विकास संस्थानों और शैक्षणिक संस्थानों को जोड़ने की योजना थी।

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (डीईआईटीवाई) संयुक्त रूप से मिशन का मार्गदर्शन करते हैं। सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सी-डैक) को इस मिशन के तहत निर्मित कंप्यूटरों के समग्र डिजाइन, विकास, परिनियोजन और कमीशनिंग का काम सौंपा गया है। फ्रांसीसी आधारित आईटी सेवा फर्म एटोस ने सी-डैक के लिए सुपर कंप्यूटरों के लिए पुर्जे बनाने का ठेका जीता।

निष्कर्ष

भारत ने प्रौद्योगिकी परिदृश्य में अपनी पहचान बनाई है और पहले सुपर कंप्यूटर की शुरुआत के बाद से एक लंबा सफर तय किया है। चीन और अमेरिका जैसे प्रमुख वैश्विक खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए भारत को पूंजी के साथ-साथ प्रतिभा में निवेश की आवश्यकता होगी। वर्तमान में, सर्वर बोर्ड, इंटरकनेक्ट और स्टोरेज जैसे भागों को घरेलू रूप से डिजाइन और विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। भारत अपने पूर्ण रूप से स्वदेशी सुपर कंप्यूटर के निर्माण की ओर बढ़ रहा है और इसकी वर्तमान गति को देखते हुए भारत भविष्य में इसे हासिल करने में सक्षम हो सकता है।

4 एलवीएम3 रॉकेट

चर्चा में क्यों?

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने एलवीएम3 एम2/वनवेब इंडिया-1मिशन को सफलतापूर्वक लॉन्च किया है। एलवीएम3 एम2 रॉकेट ने लगभग 6 टन पेलोड को निचली-पृथ्वी की कक्षा में प्रत्स्थापित किया, जो अब तक किसी भी इसरो मिशन द्वारा अंतरिक्ष में पहुचायां गया सबसे ज्यादा पेलोड है।

एलवीएम3 एम2 रॉकेट मिशन के बारे में:

- एलवीएम3 एम2 मिशन एक विदेशी ग्राहक वनवेब के लिए एक समर्पित वाणिज्यिक मिशन है, जो न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL), एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (CPSE) के माध्यम से है। यह LEO के लिए 36 वनवेब उपग्रहों के साथ पहला बहु-उपग्रह मिशन है, जो अब तक 5, 796 किलोग्राम के सबसे भारी पेलोड द्रव्यमान के रूप में है।

एलवीएम3 के बारे में:

- लॉन्च व्हीकल मार्क 3 (LVM3) इसरो का सबसे भारी रॉकेट है। यह तीन चरणों वाला प्रक्षेपण यान है, जिसके किनारों पर दो ठोस प्रणोदक S200 स्ट्रैप-ऑन हैं और कोर चरण में L110 तरल चरण और C25 क्रायोजेनिक चरण शामिल हैं। यह जीटीओ (जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट) में 4,000 किलोग्राम वर्ग के उपग्रहों और एलईओ में 8,000 किलोग्राम पेलोड को लॉन्च करने में सक्षम है।

इस मिशन का महत्त्व

- इसरो और एनएसआईएल के प्रक्षेपण ने भारत में अंतरिक्ष क्षेत्र में असीम संभावनाओ को खोल दिया है जिससे देश में अरबों डॉलर के प्रवाह की संभावना है।
- एनएसआईएल और इसरो के साथ यह साझेदारी 2023 तक पूरे भारत में कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए वनवेब की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है।
- यह न केवल उद्यमों के लिए बल्कि कस्बों, गांवों, नगर पालिकाओं और स्कूलों के लिए भी सुरक्षित समाधान लाएगा, जिसमें देश भर में सबसे दुर्गम क्षेत्र भी शामिल हैं।

लॉन्च वाहनों के बारे में:

अंतरिक्ष यान को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए प्रक्षेपण यान का उपयोग किया जाता है। भारत में दो ऑपरेशनल लॉन्चर हैं:

  - पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV)
  - जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (GSLV)

- स्वदेशी क्रायोजेनिक अपर स्टेज के साथ जीएसएलवी को 2 टन वर्ग के संचार उपग्रहों को लॉन्च करने में सक्षम बनाया गया है। जीएसएलवी का अगला संस्करण जीएसएलवी एमके III है, जिसमें स्वदेशी उच्च प्रणोद क्रायोजेनिक इंजन और 3 चरण है, जिसमें 4 टन वर्ग के संचार उपग्रहों को लॉन्च करने की क्षमता है।

उपयोग किये जा रहे लॉन्चर:

- ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी)
- जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (जीएसएलवी)

- जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल मार्क III (LVM3)
- साउंडिंग राकेट

विकास के तहत लांचर:

- पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान - प्रौद्योगिकी प्रदर्शक (आरएलवी-टीडी)
- स्क्रैमजेट इंजन-टीडी

सेवानिवृत्त लांचर:

- एसएलवी-3
- एएसएलवी

निष्कर्ष:

भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र के पास स्टार्ट-अप और निजी उद्यमों के लिए एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का अवसर है। भारत विभिन्न सुधारों के माध्यम से निजी क्षेत्र की भागीदारी को तेजी से प्रोत्साहित कर रहा है, जिससे भारत को 2030 तक वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में 10% से अधिक की बाजार हिस्सेदारी हासिल करने में मदद मिलने की उम्मीद है।

5 जैतापुर परमाणु ऊर्जा संयंत्र

चर्चा में क्यों?

भारत और फ्रांस ने महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के जैतापुर में 9900 मेगावाट की कुल क्षमता वाले छह नए यूरोपीय दबावयुक्त परमाणु ऊर्जा रिएक्टर (ईपीआर) के निर्माण में तेजी लाने के तरीकों पर चर्चा की है।

परियोजना के बारे में:

- यह परियोजना जापान के मौजूदा 7965 मेगावाट काशीवाजाकी-करिवा परमाणु ऊर्जा संयंत्र को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का सबसे बड़ा परमाणु ऊर्जा उत्पादन स्थल (9900) बन जाएगा।
- छह परमाणु ऊर्जा रिएक्टर, जिनकी प्रत्येक की क्षमता 1,650 मेगावाट होगी, फ्रांस के तकनीकी सहयोग से स्थापित किए जाएंगे।
- यह परियोजना भारत और फ्रांस के बीच मजबूत साझेदारी, कम कार्बन भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता को मूर्त रूप देगी और हजारों स्थानीय नौकरियों के साथ महाराष्ट्र को सीधे लाभ पहुंचाएगी।

परमाणु ऊर्जा और उसके लाभ:

- भाप बनाने में पानी को उबालने के लिए परमाणु ऊर्जा एक कुशल तरीका है, जिसका उपयोग टर्बाइनों को चालू करने के लिए किया जाता है, जिससे बिजली उत्पन्न होती है। अपने छोटे भूमि पदचिह्न और इससे उत्पन्न होने वाले कचरे की मात्रा के कारण नवीकरणीय ऊर्जा के अन्य रूपों की तुलना में परमाणु ऊर्जा को लाभप्रद माना जाता है। परमाणु ऊर्जा पवन ऊर्जा की तुलना में 360 गुना कम भूमि और सोलर फोटोवोल्टिक संयंत्रों की तुलना में 75 गुना कम भूमि का उपयोग करती है। परमाणु ईंधन ऊर्जा-गहन है क्योंकि 1 इंच लंबी यूरेनियम गोली 120 गैलन तेल और लगभग 17,000 क्यूबिक फीट प्राकृतिक गैस के बराबर होती है।

तीन चरण का परमाणु विकास कार्यक्रम:

- 1954 में शुरू किए गए भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में देश के यूरेनियम और थोरियम संसाधनों से परमाणु ऊर्जा उत्पादन के तीन चरण के विकास की परिकल्पना की गई थी। इसके तीन चरण हैं -
  1. दबावयुक्त भारी जल रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर)।
  2. फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (एफबीआर)।
  3. थोरियम आधारित रिएक्टर।

भारत के परमाणु उर्जा के बारे में:

- सभी विकासशील देशों में, भारत वह देश है जिसने स्वदेशी रूप से विकसित, प्रदर्शित और तैनात परमाणु रिएक्टरों का उपयोग करके बिजली पैदा की है। भारत 1207 TWh बिजली का उत्पादन करके दुनिया भर में बिजली उत्पादन के मामले में तीसरे स्थान पर है। परमाणु ऊर्जा भारत के लिए बिजली का पांचवां सबसे बड़ा स्रोत है। परमाणु रिएक्टरों की संख्या के मामले में भी भारत सातवें स्थान पर है। देश भर में 7 बिजली संयंत्रों में 23 से अधिक परमाणु रिएक्टरों से 6780 मेगावाट परमाणु ऊर्जा का उत्पादन होता है।

प्रचालनात्मक परमाणु ऊर्जा संयंत्र:

कैगा	कर्नाटक
काकरापार	गुजरात
कुडनकुलम	तमिलनाडु
कलपक्कम	तमिलनाडु
नरौरा	उत्तर प्रदेश
रावतभाटा	राजस्थान
तारापुर	महाराष्ट्र

निष्कर्षः

भारत की परमाणु उर्जा भारत की बिजली की मांग का एक विश्वसनीय समाधान प्रदान कर सकती है, जबकि पवन और सौर उर्जा चौबीसों घंटे उपलब्ध नहीं हैं। यह वैश्विक ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) में भारत के योगदान को और कम कर सकता है, जो कि 6.55% था, जिसमें ऊर्जा क्षेत्र का योगदान दो-तिहाई से थोड़ा अधिक है। भारत की 6,790 मेगावाट की वर्तमान परमाणु ऊर्जा क्षमता 2031 तक बढ़कर 22,480 मेगावाट हो जाने की उम्मीद है। यह बदले में अन्य स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों के साथ-साथ शून्य ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने में देश की सहायता करने वाला है।

6 आईआईटी-मद्रास और नासा के शोधकर्ता अंतरिक्ष स्टेशन पर रोगाणुओं का अध्ययन किया

चर्चा में क्यों?

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-मद्रास और नासा जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी (JPL) के शोधकर्ताओं ने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) में रोगाणुओं के बीच परस्पर क्रिया का अध्ययन किया है।

प्रमुख बिंदुः

- आईएसएस पर रहने वाला एक सूक्ष्म जीव कई अन्य सूक्ष्मजीवों के लिए फायदेमंद पाया गया।
- शोधकर्ताओं ने आईएसएस पर सात स्थानों पर तीन अंतरिक्ष उड़ानों में लिए गए माइक्रोबियल नमूना डेटा का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि आईएसएस पर रहने वाला एक प्रमुख सूक्ष्म जीव क्लेबसिएला निमोनिया, आईएसएस पर मौजूद कई अन्य रोगाणुओं, विशेष रूप से पैंटोआ जीनस के बैक्टीरिया के लिए भी फायदेमंद है।
- हालांकि, यह पाया गया कि इसकी उपस्थिति एस्परगिलस कवक के विकास में बाधा उत्पन्न कर रही थी। इस कम्प्यूटेशनल अवलोकन को प्रयोगशाला प्रयोगों के माध्यम से आगे परीक्षण किया गया था, और यह पाया गया कि के निमोनिया की उपस्थिति वास्तव में एस्परगिलस कवक के विकास के लिए हानिकारक थी।
- इस रोगजनक को निमोनिया और अन्य नोसोकोमियल (अस्पताल से प्राप्त) संक्रमण के कारण जाना जाता है। शोधकर्ता मोटे तौर पर यह समझने में रुचि रखते थे कि यह बैक्टीरिया आसपास के अन्य रोगाणुओं के विकास और इसके संभावित प्रभावों को कैसे प्रभावित करता है?

खोज के परिणामः

- अध्ययन अंतरिक्ष स्टेशनों के कीटाणुशोधन के लिए रणनीति तैयार करने में मदद करेगा ताकि अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर रोगाणुओं के किसी भी संभावित प्रभाव को कम किया जा सके।
- स्पेसफ्लाइट के दौरान क्रू में प्रतिरक्षा में बदलाव हो सकता है और स्थलीय चिकित्सा सुविधाओं तक सीमित पहुंच हो सकती है। इसलिए, अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर अल्पकालिक और दीर्घकालिक अंतरिक्ष यात्रा से जुड़े जोखिमों को समझने के लिए अंतरिक्ष स्टेशन में रहने वाले रोगाणुओं का अध्ययन करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

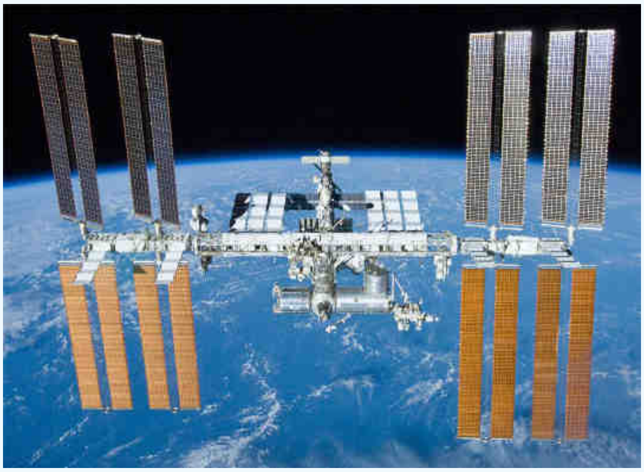

निष्कर्षः

इस अध्ययन में पाए गए माइक्रोबियल निशान से अंतरिक्ष स्टेशन के अंतरिक्ष यात्रियों को कोई खतरा नहीं है। यह अध्ययन इस बात का प्रमाण देता है कि आईएसएस के माइक्रोबायोम की निगरानी करना क्यों महत्त्वपूर्ण है? आईएसएस पर रोगाणुओं पर नजर रखना और सीखना कि वे माइक्रोग्रैविटी के अनुकूल कैसे होते हैं? ये शोध अंतरिक्ष यात्री के स्वास्थ्य की रक्षा करने में मदद कर सकते हैं।

7 स्वास्थ्य संयुक्त कार्य योजना

चर्चा में क्यों?

17 अक्टूबर, 2022 को चार बहुपक्षीय एजेंसियों द्वारा 'वन हेल्थ जॉइंट प्लान ऑफ एक्शन' का शुभारंभ किया गया, ताकि जीवों और पर्यावरण के खतरों का बेहतर तरीके से समाधान किया जा सके।

स्वास्थ्य संयुक्त कार्य योजना के बारे में:

- पंचवर्षीय एक स्वास्थ्य संयुक्त कार्य योजना का अनावरण क्वाड्रिपार्टाइट द्वारा किया गया था। इस क्वाड्रिपार्टाइट में शामिल हैं- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी), खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ), और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन।
- यह छह क्षेत्रों में क्षमताओं का समर्थन और विस्तार करने पर केंद्रित है:
  - स्वास्थ्य प्रणालियों के लिए एक स्वास्थ्य क्षमता।
  - उभरती और दोबारा-उभरती हुई जूनोटिक महामारी।
  - स्थानिक जूनोटिक।
  - उपेक्षित उष्णकटिबंधीय और वेक्टर जनित रोग।
  - खाद्य सुरक्षा जोखिम।
  - रोगाणुरोधी प्रतिरोध एवं पर्यावरण।
- यह योजना एक सहभागी प्रक्रिया के माध्यम से बनायी गयी है। यह मानव-पशु-पौधे-पर्यावरण इंटरफेस पर स्वास्थ्य मुद्दों को संबोधित करने के लिए जिम्मेदार सभी क्षेत्रों में समान रूप से सहयोग, संचार, क्षमता निर्माण और समन्वय में सुधार करने के उद्देश्य से कार्यों की एक शृंखला की रूपरेखा तैयार करती है।
- यह कार्य योजना 2022 से 2026 तक प्रभावी है तथा इसका उद्देश्य राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को कम करना है।

स्वास्थ्य:

- स्वास्थ्य एक एकीकृत दृष्टिकोण है जिसका लक्ष्य लोगों, जानवरों और पारिस्थितिक तंत्र की कल्याण को एक स्थायी तरीके से अनुकूलित करना है।
- यह मानव स्वास्थ्य, घरेलू और जंगली जानवरों, पौधों तथा पारिस्थितिक तंत्र सहित बड़े पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रयता और घनिष्ठ संबंधों को स्वीकार करता है।

स्वास्थ्य दृष्टिकोण की आवश्यकता:

- अध्ययनों से संकेत मिलता है कि दो-तिहाई से अधिक मौजूदा और उभरती संक्रामक बीमारियां जूनोटिक हैं, या जानवरों और मनुष्यों के बीच स्थानांतरित की जा सकती हैं।
- सभी मानव संक्रामक रोगों में से 60% मूल रूप से जूनोटिक हैं और लगभग 75% ऐसी प्रजातियां हैं जो एक जीव से दूसरे जीव में फैल सकती।
- रोगों की एक अन्य श्रेणी, 'एंथ्रोपोजूनोटिक' संक्रमण हैं जिसमें रोग मनुष्यों से जानवरों में स्थानांतरित हो जाते हैं।
- उच्च प्रभाव वाली बीमारियां महत्त्वपूर्ण पशुधन-व्युत्पन्न खाद्य पदार्थों को प्रभावित करती हैं, जो आहार के 33 प्रतिशत प्रोटीन और 17 प्रतिशत कैलोरी सेवन का योगदान करती हैं।
- निपाह वायरस, इबोला, सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (एसएआरएस), मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (एमईआरएस), और एवियन इन्फ्लुएंजा आदि जैसे हाल के वायरल प्रकोपों ने पर्यावरण, जानवरों और मानव स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर और गहन अध्ययन के लिए ठोस कारण प्रदान किए हैं।

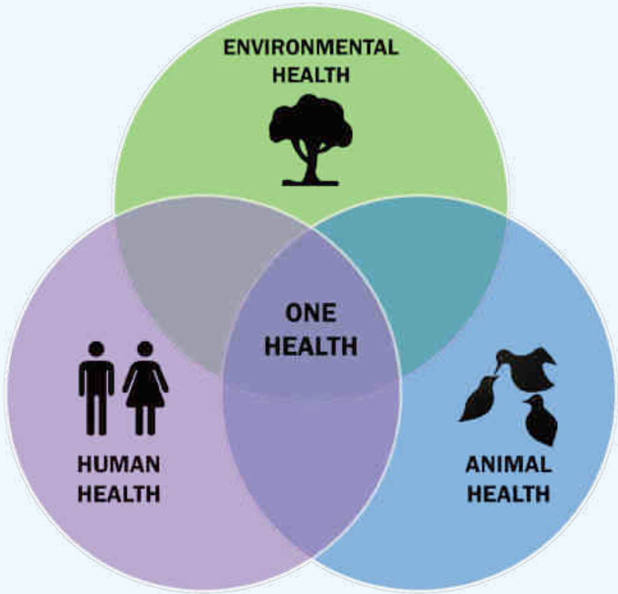

भारत में स्वास्थ्य दृष्टिकोण:

- भारत का 'वन हेल्थ' विजन अपना खाका त्रिपक्षीय गठबंधन से प्राप्त करता है जिसमें एफएओ, यूएनईपी, डब्ल्यूएचओ और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन शामिल हैं।
- इसने दीर्घकालीन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, 1980 में जूनोज पर एक राष्ट्रीय स्थायी समिति की स्थापना की और तब से इस संबंध में विभिन्न पहल की है।

1 पहला राष्ट्रीय कोयला सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

भारतीय राष्ट्रीय समिति विश्व खनन कांग्रेस द्वारा पहली बार राष्ट्रीय कोयला सम्मेलन और प्रदर्शनी-2022 का आयोजन नई दिल्ली में 16-17 अक्टूबर, 2022 को कोयला मंत्रालय के संरक्षण में किया गया।

थीम- 'भारतीय कोयला क्षेत्र- आत्मानिर्भर भारत की ओर सतत खनन'।

प्रदर्शनी के बारे में:

- यह कार्यक्रम नीति निर्माताओं, सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र की खनन कंपनियों के साथ-साथ शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और अन्य हितधारकों को बातचीत करने एवं भारतीय कोयला क्षेत्र के लिए 'आत्मनिर्भर भारत' के राष्ट्रीय मिशन के साथ संरेखित करने के लिए, एक रोडमैप तैयार करने हेतु एक मंच प्रदान करता है।

कॉन्क्लेव का फोकस क्षेत्र:

1. बिजली क्षेत्र में ईंधन की पर्याप्तता।
2. इस्पात तैयार करने में कोयले की आत्मनिर्भरता।
3. प्रौद्योगिकी और स्थिरता।

भारत का कोयले पर निर्भरता:

- आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 में बताया गया है कि 2030 तक कोयले की मांग 1.3 से 1.5 बिलियन टन तक बढ़ने की उम्मीद है, जो मौजूदा मांग से 63 प्रतिशत अधिक है। दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा कोयला उत्पादक होने के बावजूद, भारत ने 2021-22 (जनवरी 2022 तक) में लगभग 173.32 मिलियन टन कोयले का आयात किया। भारत के प्रमुख निर्यातक इंडोनेशिया, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका हैं।

भारत में कोयला क्षेत्र:

- भारत में पाए जाने वाले कोयला संसाधन मुख्य रूप से गोंडवाना कोयला क्षेत्र (250 मिलियन वर्ष पुराने) और तृतीयक कोयला क्षेत्र (15-60 मिलियन वर्ष पुराने) से हैं। झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में प्रमुख कोयला भंडार पाए जाते हैं। भारत में 55 प्रतिशत ऊर्जा की पूर्ति कोयले द्वारा की जाती है। कोयला सबसे महत्त्वपूर्ण जीवाश्म ईंधन है और बढ़ती मांग के पूर्वानुमान यह सुनिश्चित करते हैं कि कोयला भारत के ऊर्जा परिदृश्य का प्रमुख स्रोत है।

भारत में कोयला क्षेत्र की चुनौतियाँ:

- **पर्याप्त प्रौद्योगिकी का अभाव:** प्रमुख चिंताओं में से एक, जो भारत के कोयला उत्पादन में बाधा डालता है।
- **विलंबित मंजूरी:** राज्य और केंद्र सरकारों से कई पर्यावरण और वन मंजूरी की आवश्यकता होती है जो कोयला खनन परियोजनाओं में देरी करती है।
- **कम उत्पादकता:** आस्ट्रेलिया और चीन जैसे देशों की तुलना में देश में कोयला उत्पादकता बहुत कम है।
- **एकाधिकार क्षेत्र:** कोयला खनन में पीएसयू का दबदबा है जिसे अब धीरे-धीरे निजी क्षेत्र के लिए खोला जा रहा है। घरेलू मांगों को पूरा करने में असमर्थता के पीछे यही एकाधिकार रहा है।
- **अक्षय ऊर्जा के लिए सरकार का समर्थन:** अक्षय ऊर्जा पर सरकार के एक तरफा ध्यान ने कोयला क्षेत्र की उपेक्षा की है जिससे इसकी उत्पादकता प्रभावित हुई है।
- **पर्यावरण प्रदूषण:** खनन के दौरान कोयला क्षेत्र द्वारा उत्पन्न प्रदूषण, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक होते हैं।
- भारत की राष्ट्रीय समिति विश्व खनन कांग्रेस की शुरुआत 1958 ई. में हुई थी WMC में भारत का प्रतिनिधत्व भारत की राष्ट्रीय समिति करती है। सयुंक्त राष्ट्र से सम्बद्ध इस कांग्रेस का स्थायी सचिवालय पोलैंड में स्थित है।

सरकार द्वारा उठाए गए कदम:

- **वाणिज्यिक कोयला खनन को हरी झंडी:** सरकार ने वाणिज्यिक उद्देश्य के लिए भारतीय और विदेशी ईकाइयों के लिए कोयला खनन की अनुमति दी है।
- **पारदर्शी नीलामी पद्धति:** कोयला ब्लॉकों की नीलामी के उद्देश्य से सरकार ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर रही है। इस कदम से एकाधिकार की प्रवृत्ति को समाप्त करके और प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करके कोयला क्षेत्र में दक्षता बढ़ाने की उम्मीद है।
- **अनलॉकिंग ट्रांसपेरेंसी बाई थर्ड पार्टी असेसमेंट ऑफ माइंड कोल् (UTTAM):** कोयला मंत्रालय द्वारा कोयला गुणवत्ता निगरानी प्रक्रिया में दक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए इसे लॉन्च किया गया।
- **कोयला आवंटन निगरानी प्रणाली (CAMS):** CAMS का उपयोग कोयला ब्लॉकों के आवंटन की निगरानी के लिए किया जाता है।
- **नई कोयला लिंकेज नीति:** रिवर्स नीलामी के माध्यम से ताप विद्युत संयंत्रों को कोयले की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करना।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** खदान मानचित्रण और निगरानी के लिए ड्रोन/यूएवी का उपयोग करना, धूल (Dust) हटाने या कम करने हेतु स्वचालित धुंध आधारित जल छिड़काव प्रणाली का उपयोग आदि।

आगे की राह:

सरकार को उर्जा आत्मनिर्भरता की प्राप्ति हेतु इस तरह का कदम स्वागतयोग्य है परन्तु इससे उत्पन्न होने वाली हानियों का मोनिटरिंग भी आवश्यक है तथा जलवायु सुरक्षा हेतु, 2070 तक नेट-जीरो का लक्ष्य प्राप्त कर सकें।

2 उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में भारत एक 'स्टार': एस एंड पी रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

ग्लोबल रेटिंग्स एजेंसी एस एंड पी ने बताया कि इस वित्तीय वर्ष में अनुमानित 7.3 प्रतिशत की वृद्धि के साथ भारत उभरती अर्थव्यवस्थाओं में चमकता सितारा होगा। रिपोर्ट में, एस एंड पी ने उद्धृत किया कि आने वाली तिमाहियों में वैश्विक मैक्रो प्रदर्शन केंद्रीय बैंक द्वारा दरों में बढ़ोतरी के बीच सख्त वित्तीय स्थितियों के साथ मंदी की ओर इशारा करता है।

भारत की अर्थव्यवस्था में अंतर्दृष्टि:

- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी एक अनंतिम अनुमान के अनुसार, वित्त वर्ष 2022 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
- वित्त वर्ष 2012 की पहली तिमाही में भारत की जीडीपी मौजूदा कीमत पर 694.89 अरब अमेरिकी डॉलर है।
- वर्तमान में, भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी और यूके के बाद छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। परचेजिंग पावर पैरिटी (पीपीपी) के मामले में भारत विश्व में तीसरे स्थान पर है।
- 73 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य के सबसे बड़े यूनिकॉर्न आधार के मामले में भारत दुनिया में चौथे स्थान पर है।

मुख्य संकेतक

विदेशी निवेश:

- भारत वैश्विक निवेशकों के लिए एक पसंदीदा स्थान रहा है, जिससे कुल विदेशी मुद्रा 678 मिलियन अमरीकी डालर (जनवरी 2022) हो गया है। इसे फेसबुक और गूगल जैसे वैश्विक दिग्गजों के निवेश से मजबूती मिली है।

विभिन्न क्षेत्रों में वृद्धि:

- कृषि 2022-23 की पहली तिमाही में 4.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ मजबूत बनी हुई है, जो पिछली तिमाहियों की तुलना में सबसे अधिक है।
- विनिर्माण क्षेत्र में 4.8 प्रतिशत की औसत वृद्धि दर देखी गई।
- व्यापार, होटल, परिवहन आदि पूर्व-कोविड स्तर से नीचे बने हुए हैं। यह COVID के दौरान सबसे अधिक पीड़ित क्षेत्र था।
- निर्माण ने अर्थव्यवस्था में समग्र विकास में योगदान करते हुए सकारात्मक योगदान दिया है।
- मांग पक्ष पर, घरेलू मांग में सुधार निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीई) की वृद्धि दर में परिलक्षित हुआ है।
- **बाहरी व्यापार:** पेट्रोलियम की बढ़ती कीमतों और 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने के लिए मध्यवर्ती वस्तुओं के आयात की मांग को ध्यान में रखते हुए, आयात में वृद्धि निर्यात में वृद्धि से अधिक बनी रहेगी।
- **विकास दर अनुमान:** दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने के नाते, अर्थव्यवस्था का समग्र भविष्य मजबूत और स्थिर दिखता है। घरेलू मांग के पीछे भारत का मध्यम वर्ग एक बड़ी ताकत है। अगले दशक में उपभोक्ता खर्च दोगुना होने की उम्मीद है।
- **सकल माल और सेवा कर संग्रह:** यह जुलाई 2022 में 1.49 लाख करोड़ पर उच्च बना हुआ है।

अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम:

- विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआईएस)।
- मेक इन इंडिया योजना।
- अक्षय ऊर्जा में सक्रिय पहल।
- इलेक्ट्रॉनिक्स पर राष्ट्रीय नीति (एनपीई) 2019
- डीप ओशन मिशन।
- दूरसंचार क्षेत्र में सुधार और बैंकिंग क्षेत्र के सुधार।
- सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में सुधार।
- श्रम कानूनों का संकलन।
- अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य वैश्विक मंदी की ओर इशारा कर रहा है। भारत का विकास पथ घरेलू निवेश पर निर्भर करता है। क्षेत्रवार नीति निर्माण से दक्षता बढ़ेगी और व्यवसाय करने में आसानी होगी।

3 नारियल समुदाय किसान सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कोयंबटूर (तमिलनाडु) में आयोजित नारियल समुदाय किसान सम्मेलन में, केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री ने देश में नारियल की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को हर संभव

सहायता देने का आश्वासन दिया।

नारियल-एक महत्त्वपूर्ण नकदी फसल:

- नारियल, मुख्य रूप से छोटे और सीमांत किसानों द्वारा उगाया जाता है जो भारत की कृषि अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- नारियल का एक पेड़ 20-30 मीटर लंबा होता है और यह 100 साल तक जीवित रह सकता है।
- ये पेड़ उष्ण कटिबंध तथा क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहां हल्की ठंड होती है।
- नारियल के पौधे विशेष रूप से भारत के तटीय क्षेत्रों में केंद्रित हैं। इसके अलावा, जब कृषि जलवायु की स्थिति पूरी हो जाती है, तो पौधों को भीतरी इलाकों में उगाया जा सकता है।
- भारत में नारियल मुख्य रूप से तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र राज्यों में उगाया जाता है।

कृषि-नारियल के पौधे की जलवायु संबंधी आवश्यकताएं:

- नारियल के पौधे को 25-35 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर उगाया जाता है और 125 से 130 सेंटीमीटर की वर्षा अनुकूल होती है।
- इसे समुद्र तल से 600 मीटर की ऊंचाई तक उगाया जा सकता है।
- यह लेटेराइट, जलोढ़ और तटीय रेतीली मिट्टी सहित अन्य विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है।

भारत में नारियल उद्योग:

- इंडोनेशिया और फिलीपींस के बाद भारत विश्व में नारियल का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
- नारियल उद्योग की पारंपरिक गतिविधियां मुख्य रूप से खोपरा (Copra) बनाने, तेल निकालने, कॉयर (Coir) निर्माण आदि तक ही सीमित हैं।
- नारियल की भूसी (coconut Husk) देश में रेशे का एक प्रमुख स्रोत है।
- कॉयर और कॉयर-आधारित उद्योग नारियल उप-उत्पादों (विशेषकर भूसी) का उपयोग करने वाले प्रमुख क्षेत्रों में से एक है।
- साबुन, बालों के तेल, सौंदर्य प्रसाधन और अन्य औद्योगिक उत्पादों के निर्माण में इसका व्यापक प्रयोग होता है।

नारियल के बागान को समर्थन देने के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई पहल:

- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) में किसानों को सीधे नकद हस्तांतरण का प्रावधान है।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना।
- **सूक्ष्म सिंचाई योजना:** के तहत वित्तीय प्रावधान को 5000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 10,000 करोड़ रुपये किया गया है।
- **किसान क्रेडिट कार्ड योजना:** पहले किसानों को केवल पांच से छह लाख करोड़ रुपये तक फसली ऋण दिया जाता था, जिसे बढ़ाकर लगभग रु. 18 लाख करोड़ किया गया है।
- **एग्री इंफ्रा फंड:** प्रत्येक गांव में गोदाम, कोल्ड स्टोरेज जैसी बुनियादी सुविधाएं बनाने के लिए एग्री इंफ्रा फंड का प्रयोग किया जा रहा है।
- **नारियल विकास बोर्ड (सीडीबी) द्वारा शुरू की गई पहल:** सीडीबी ने छोटे और सीमांत किसानों को एकीकृत करके एक त्रिस्तरीय किसान समूह का गठन किया है जिसने भारत में प्रसंस्करण ईकाइयों की स्थापना में मदद की है। इससे रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं और किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो रहा है।
- नारियल उद्योग को मजबूत करने के लिए परियोजनाएं और नीति निर्माण समावेशी होनी चाहिए जिसमें किसान संगठन, राज्य सरकारों और केंद्र सरकार की सहभागिता हो ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके।

4 स्मॉल सेविंग यील्ड फॉर्मूला द्वारा निर्धारित से कम है- आरबीआई

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने अपने मासिक बुलेटिन में कहा कि भारत की छोटी बचत योजनाओं पर वर्तमान रिटर्न, दरों के निर्धारण के लिए निर्धारित फार्मूले से नीचे चला गया है। छोटी बचत योजनाओं पर प्रतिफल, सरकारी प्रतिभूतियों पर बाजार प्रतिफल से जुड़ा होता है।

समाचार में अंतर्दृष्टि:

- तीन साल की जमाराशियों के लिए, मौजूदा रिटर्न और फॉर्मूला-आधारित दरों के बीच का अंतर सबसे ज्यादा है। किसान विकास पत्र पर 7 प्रतिशत का रिटर्न फॉर्मूला दरों से 47 बीपीएस कम है। साथ ही, अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के लिए राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र पर भुगतान की दर 6.8% है और फॉर्मूला-आधारित दर 7.48% है।

स्मॉल सेविंग्स स्कीम क्या है?

- छोटी बचत योजनाएं केंद्र सरकार द्वारा प्रबंधित छोटी बचतों का समूह है, जिसका उद्देश्य नागरिकों को उम्र की परवाह किए बिना नियमित रूप से बचत करने के लिए प्रोत्साहित करना है।
- वे आय का एक सुनिश्चित स्रोत होने के कारण भारत में घरेलू बचत का एक प्रमुख स्रोत हैं।
- ये विशेष रूप से लोकप्रिय हैं क्योंकि ये न केवल बैंक-सावधि जमा से अधिक रिटर्न प्रदान करते हैं बल्कि एक सॉवरेन गारंटी और कर लाभ के साथ भी आते हैं।
- छोटी बचत योजनाओं के तहत जमाराशियों को राष्ट्रीय लघु बचत कोष (एनएसएसएफ) के तहत जमा किया जाता है, जिसका उपयोग केंद्र सरकार अपने वित्तीय घाटे को पूरा करने के लिए करती है।
- लघु बचत योजनाओं को तीन शीर्षों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है:

1) **डाकघर जमा**- बचत जमा, आवर्ती जमा और 1,2,3 और 5 साल की परिपक्वता वाली सावधि जमा और मासिक आय खाता शामिल है।

2) **बचत प्रमाण पत्र**- जैसे किसान विकास पत्र (केवीपी), राष्ट्रीय लघु बचत प्रमाणपत्र (एनएससी)

3) **सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ**- सुकन्या समृद्धि योजना, लोक भविष्य निधि (PPF), वरिष्ठ नागरिक बचत योजना।

छोटी बचत योजनाओं पर क्या है यील्ड?

- यील्ड वह प्रतिफल है जो एक निवेशक को किसी आर्थिक साधन पर प्राप्त होता है।
- इसकी गणना योजना के मौजूदा बाजार मूल्य से वार्षिक कूपन दर को विभाजित करके की जाती है।
- बाजार में यील्ड में वृद्धि के साथ, योजना की कीमत घटेगी।

छोटी बचत योजनाओं पर ब्याज दर निर्धारण :

- वित्त मंत्रालय द्वारा समय-समय पर ब्याज दरों की समीक्षा की जाती है। उन्हें त्रैमासिक आधार पर रीसेट किया जाता है। 2010 में गठित श्यामला गोपीनाथ समिति ने छोटी बचत योजनाओं के लिए बाजार से जुड़ी ब्याज दर प्रणाली का सुझाव दिया था।

5 भारत की खुदरा महंगाई पांच महीने के उच्चतम स्तर पर

चर्चा में क्यों?

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, सितंबर में भारत की खुदरा मुद्रास्फीति बढ़कर 7.41% हो गई, जो पांच महीनों में सबसे अधिक है। यह संख्या भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा निर्धारित (4+-2) से अधिक है। आरबीआई ने लगातार चौथी बार रेपो दर में 190 आधार अंकों की वृद्धि की है। खाद्य मुद्रास्फीति, जो सीपीआई बास्केट का लगभग आधा हिस्सा है, यह अगस्त में 7.62% की तुलना में सितंबर 2022 में बढ़कर 8.60% हो गई।

मुद्रास्फीतिः

- मुद्रास्फीति को अधिकांशतः वस्तुओं और सेवाओं की सामान्य कीमतों में वृद्धि या भोजन, कपड़े, आवास, परिवहन, उपभोक्ता स्टेपल आदि जैसे सामान्य उपयोग की कीमतों में वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है। सरल शब्दों में, मुद्रास्फीति ष्बहुत कम वस्तु के लिए, बहुत अधिक रुपया देने से हैष् यह समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं की एक टोकरी में औसत मूल्य परिवर्तन को मापता है। मुद्रास्फीति को प्रतिशत में मापा जाता है। मुद्रास्फीति की दो संभावनाएं होती हैं:

1. मुद्रास्फीतिः एक आर्थिक संकट

- उच्च मुद्रास्फीति मुद्रा की क्रय शक्ति में कमी का कारण बनती है क्योंकि वस्तुएं और सेवाएं महंगी हो जाती हैं। मुद्रास्फीति जीवन यापन की लागत को प्रभावित करती है, जो अंततः किसी देश को आर्थिक विकास में मंदी की ओर ले जाती है। मुद्रास्फीति किसी देश के लिए भयानक हो जाती है, जब वह 'स्टैगफ्लेशन' का रूप ले लेती है। स्टैगफ्लेशन ठहराव की एक आर्थिक स्थिति है जिसमें उच्च बेरोजगारी दर के साथ-साथ मुद्रास्फीति की उच्च दर हो जाती है।

2.मुद्रास्फीतिः एक अवसर

- फिलिप्स वक्र मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच एक स्थिर और उलटा संबंध का दावा करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, आर्थिक विकास मामूली मुद्रास्फीति के साथ होता है, जिसके बाद अधिक नए अवसर और कम बेरोजगारी होती है।
- **बेहतर खर्च करने की शक्तिः** एक उपभोक्ता निकट भविष्य में उच्च कीमतों का अनुमान लगाकर मुद्रास्फीति के दौरान अधिक खर्च करता है, जो बदले में अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है।
- **उच्च वेतन/मजदूरीः** वेतनभोगी कर्मचारी जीवनयापन की समग्र बढ़ती लागत को पूरा करने के लिए उच्च तनख्वाह की मांग करते हैं। इससे खर्च करने की शक्ति बढ़ती है और अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।
- **ऋण भुगतान में सहायताः** जब कोई उधारकर्ता, जिसने मुद्रास्फीति से पहले उधार लिया है, उच्च तनख्वाह के साथ समान राशि का भुगतान करता है, तो यह उसके लिए बोझ जैसा नहीं लगता।
- **ऋणदाता को भारी लाभः** मुद्रास्फीति के दौरान उधारदाताओं

को भी लाभ होता है, क्योंकि वस्तुओं की ऊंची कीमतों को पूरा करने के लिए लोगों से ऋण की अधिक मांग होती है जो यह भी सुनिश्चित करता है कि ऋणदाता उच्च ब्याज दर अर्जित करें।

- **गिग इकॉनमी को बढ़ावा:** मुद्रास्फीति के दौरान, नियोक्ता लागत में कटौती करते हैं, अंशकालिक कर्मचारियों और संविदा श्रमिकों को काम पर रखते हैं जो उन्हें महंगे स्वास्थ्य लाभ और कई अन्य भत्ते देने से बचाता है।

आगे की राह:

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़ती जागरूकता और नए तरीकों के उद्भव ने लोगों को अराजकता से बचने और इससे बाहर निकलने का अवसर देना सिखाया है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अस्तित्व और विकास सुनिश्चित करने के लिए विकसित बाजार के रुझानों के माध्यम से विश्लेषण और नेविगेट किए जाने पर मुद्रास्फीति वरदान हो सकती है।

6 मनी लॉन्ड्रिंग पर बुडापेस्ट सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

विश्व कस्टम संगठन (WMO) और एग्मेंट ग्रुप ऑफ फाइनेंशियल इंटेलिजेंस यूनिट (FIU) ने बुडापेस्ट, हंगरी में बुडापेस्ट सम्मेलन की मेजबानी की। सम्मेलन में कई मनी लॉन्ड्रिंग विरोधी सत्र आयोजित किए गए थे, जो कस्टम क्षेत्र को छूते हैं, जिसमें थोक नकदी तस्करी, आतंकवाद के वित्तपोषण, ई-मुद्रा, व्यापार आधारित मनी लॉन्ड्रिंग और पर्यावरण और मानव तस्करी के माध्यम से मनी लॉन्ड्रिंग शामिल हैं। सम्मेलन ने अंतरराष्ट्रीय आपराधिक संगठन (टीसीओ) और आतंकवादी संगठन द्वारा वैश्विक व्यापार प्रणाली और वित्तीय उद्योग की क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा और अखंडता दोनों के लिए बढ़ते खतरे पर प्रकाश डाला गया है।

सम्मेलन के प्रमुख बिंदु:

- सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक शिपमेंट में अवैध आय के रूपांतरण की पहचान करने के लिए कानून प्रवर्तन और एफआईयू के संयुक्त प्रयासों के महत्व को रेखांकित किया गया।
- यह माना गया कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में आभासी संपत्ति के आगमन और प्रसार के कारण पिछले दशक में मुद्रा, सोना और कीमती धातुओं की तस्करी का प्रचलन बढ़ा है।
- प्रतिभागियों ने यह भी माना कि अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य में नई भुगतान पद्धति आती रहेगी इसलिए, कानून प्रवर्तन एजेंसियों को इस क्षेत्र में मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों पर ध्यान देना चाहिए।
- सम्मेलन के प्रतिभागियों ने यह भी नोट किया कि कस्टम-एफआईयू सहयोग पुस्तिका, कस्टम अधिकारियों के लिए नकद तस्करी, सोने की तस्करी आदि जैसी मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों को को रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मनी लॉन्ड्रिंग क्या है?

- मनी लॉन्ड्रिंग अवैध स्रोतों से प्राप्त धन के स्रोत को छिपाने और इसे एक स्वच्छ स्रोत में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है, जिससे आपराधिक धन के अभियोजन, दोषसिद्धि और जब्ती से बचा जा सकता है। यह एक गैरकानूनी काम है जो काले धन को सफेद धन में परिवर्तित करता है। मनी लॉन्ड्रिंग एक गंभीर वित्तीय अपराध है।

मनी लॉन्ड्रिंग का वैश्विक परिदृश्य और उसका विनियमन:

- टीसीओ वैश्विक व्यापार में परिवहन मनी लॉन्ड्रिंग को बढ़ावा दे रहे है और नई और नवीन प्रौद्योगिकियां उन्हें अपनी अवैध गतिविधियों को जारी रखने और बढ़ाने के लिए तंत्र की एक विस्तृत शृंखला प्रदान करती हैं।
- यूएनओडीसी का अनुमान है कि वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 2% से 5% सालाना लॉन्डरिंग है, जो $800 बिलियन और $ 2 ट्रिलियन के बीच के बराबर है।
- अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं का फायदा उठाने वाली आपराधिक और आतंकवादी गतिविधियों की पहचान करने, उन्हें रोकने या उन्हें खत्म करने के लिए कानून प्रवर्तन प्रयासों के संबंध में दुनिया भर में कस्टम प्रशासन अग्रिम पंक्ति में है। WCO को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी कस्टम मामलों के लिए प्राथमिक मानक निर्धारण प्राधिकरण के रूप में मान्यता प्राप्त है। सीमा शुल्क प्रशासन न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

उभरती प्रौद्योगिकियों द्वारा समर्थित मनी लॉन्ड्रिंग के उभरते खतरों को बड़े डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे समान रूप से उन्नत एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग तंत्र के साथ संबोधित करने की आवश्यकता है। मनी लॉन्ड्रिंग की समस्या को प्रभावी ढंग से खत्म करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू दोनों हितधारकों के बीच डेटा साझाकरण तंत्र को मजबूत करके एक साथ आने की जरूरत है।

7 भारत का पहला सस्टेनेबिलिटी इंडेक्स

चर्चा में क्यों?

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) और डन एंड ब्रैडस्ट्रीट ने SIDBI-D&B सस्टेनेबिलिटी परसेप्शन इंडेक्स (SIDBI – D&B SPeX) लॉन्च किया है। इंडेक्स को नीति निर्माताओं और एनेबलर्स के लिए एक मात्रात्मक माप के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा ताकि व्यवसायों को पर्यावरण, सामाजिक अपनाने की दिशा में प्रेरित किया जा सके।

सूचकांक की प्रमुख विशेषता:

- यह विभिन्न व्यावसायिक मापदंडों पर व्यवसायों की भावनाओं को कैप्चर करता है, जिसका व्यापक रूप से विश्लेषण किया जाएगा ताकि ईएसजी ढांचे को अपनाने पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की जा सके।
- बाद में सूचकांक का विस्तार किया जाएगा ताकि क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय धारणाओं या आकांक्षाओं के साथ-साथ अपने ईएसजी में सुधार के लिए व्यवसायों की तैयारी को शामिल किया जा सके।
- सर्वेक्षण में पिछली तिमाही के साथ-साथ आगामी तिमाही के दृष्टिकोण के बारे में विचार शामिल होंगे। यह 6 महीने की अवधि में बदलती भावनाओं का आकलन करने में सक्षम बनाता है।
- सर्वेक्षण में एमएसएमई के डी एंड बी/सिडबी डेटाबेस से प्रत्येक तिमाही में 250 से अधिक एमएसएमई की भावनाओं और जागरूकता को शामिल किया जाएगा।
- यह एमएसएमई की पर्यावरणीय प्रथाओं पर विनियमों तथा सरकारी नीतियों की भूमिका और परिणामों का आकलन करने में मदद करेगा। इस तरह की प्रथाएं पर्यावरणीय स्थिरता में बाधा कैसे बन रही हैं?
- यह समुदाय, विविधता, समान अवसर और प्रतिस्पर्धा जैसे सामाजिक पहलुओं की भूमिका और प्रभाव को भी कवर करेगा।
- यह एमएसएमई क्षेत्र पर प्रभाव डालने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं के डेटा को भी कैप्चर करेगा।
- यह मूल्य शृंखला में स्थिरता प्रथाओं के कार्यान्वयन का विश्लेषण करेगा और विभिन्न संगठनों में आंतरिक चालकों के प्रभाव का आकलन करेगा।
- सूचकांक निवेशकों के अनुभव में सुधार करेगा, सभी हितधारकों के लिए मूल्य प्रदान करने वाले स्थायी व्यवसायों और व्यावसायिक प्रथाओं के लिए बेंचमार्क बनाएगा।
- इसका अंतिम उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था तथा बाजारों को स्थायी पूंजी और निवेश के लिए अधिक आकर्षक बनाना है।

एमएसएमई के लिए सरकारी पहल:

- 8 जुलाई, 2022 तक प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) के तहत स्वीकृत ऋणों की संख्या 10.03 मिलियन है जो एमएसएमई को मदद करेगी।
- 2022-23 के केंद्रीय बजट में एमएसएमई क्षेत्र को 50,000 करोड़ रुपये की आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) आवंटित की गई थी।
- नवंबर 2021 में, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय ने उद्यमिता और घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देकर आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय स्तर के जागरूकता कार्यक्रम, संभव का शुभारंभ किया।
- सितंबर 2021 में, खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) ने स्थानीय रेशम उद्योग को बढ़ावा देने और रोजगार पैदा करने के लिए ओडिशा में पहला 'सिल्क यार्न प्रोडक्शन सेंटर' स्थापित किया।

सिडबी के बारे में:

- भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) 2 अप्रैल, 1990 को भारतीय संसद के एक अधिनियम के तहत स्थापित किया गया था, जो सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र के संवर्धन, वित्तपोषण और विकास के साथ-साथ इसके लिए प्रमुख वित्तीय संस्थान के रूप में कार्य करता है।

निष्कर्ष:

भारत सरकार पांच वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था को दोगुना करके 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर करने की कल्पना करती है। एमएसएमई इस लक्ष्य को हासिल करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं और देश के युवाओं को एक प्रमुख रोजगार सृजनकर्ता के तौर पर रोजगार मुहैया करा सकते हैं।

1 विद्युत और नवीकरणीय ऊर्जा सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के विद्युत और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रियों का सम्मेलन 14-15 अक्टूबर, 2022 के दौरान उदयपुर, राजस्थान में आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय विद्युत और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आर. के. सिंह ने की।

कांफ्रेंस की मुख्य बातें:

- पीएम कुसुम योजना के तहत राज्यों को सोलराइजेशन में तेजी लाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। राज्यों को 40 गीगावाट के समग्र लक्ष्य को प्राप्त करने करने के लिए, सोलर रूफटॉप सिस्टम लगाने का प्रयास करना चाहिए।
- इस बात पर जोर दिया गया कि विद्युत की मांग 2030 तक दोगुनी हो जाएगी, जिसके लिए बड़ी पूंजी निवेश की आवश्यकता होगी।
- भारत को अपने ऊर्जा संक्रमण पथ को प्राप्त करने में मदद करने के लिए विद्युत प्रणालियों के आधुनिकीकरण और हरित हाइड्रोजन, भंडारण, अपतटीय पवन आदि जैसी नई प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने हेतु भी पूंजी निवेश की आवश्यकता होगी।
- इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि देश भर में DISCOMS विवेकपूर्ण और टिकाऊ वित्तीय प्रथाओं का पालन करें जोकि वर्तमान समय में व्यवहार्य हैं।
- मंत्रियों ने हाल के वर्षों में विद्युत क्षेत्र में अधिशेष उत्पादन क्षमता, राष्ट्रीय ग्रिड के विकास, सभी घरों तक सार्वभौमिक पहुंच और ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर आपूर्ति के रूप में हासिल की गई उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।
- समय पर निवेश के माध्यम से 24x7 विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने, राज्य की विद्युत वितरण कंपनियों की व्यवहार्यता, स्मार्ट मीटरिंग, उपभोक्ताओं के अधिकार और भविष्य की विद्युत व्यवस्था पर चर्चा हुई।
- हाल ही में वैश्विक ऊर्जा संकट के समय, भारत में भी विद्युत की मांग लगभग 11% बढ़ी जिसके पीछे प्रमुख कारण कोयले की आपूर्ति में कमी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कीमतों में बढ़ोतरी थी।

भारत में नवीकरणीय ऊर्जा:

- भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र, दुनिया में चौथा सबसे आकर्षक अक्षय ऊर्जा बाजार है।
- 2021 तक भारत पवन ऊर्जा में चौथा, सौर ऊर्जा में चौथा और समग्र नवीकरणीय ऊर्जा की स्थापित (Installed) क्षमता में तीसरे स्थान पर था।
- सितंबर 2022 तक, भारत की कुल नवीकरणीय उर्जा की स्थापित (Installed) क्षमता (पनबिजली सहित) 157.35 गीगावाट से अधिक रही है।
- भारत में लगभग 1100 गीगावाट की अनुमानित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता है। भारत ने अपनी क्षमता तक पहुंचने के लिए 2030 तक 500 गीगावाट का लक्ष्य रखा है।

अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल:

- सरकार ने देश में नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहलें शुरू की हैं, जैसे-हरित ऊर्जा गलियारा परियोजनाएं, पीएम कुसुम, राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा कोष, राष्ट्रीय पवन सौर हाइब्रिड नीति-2018, ऑफ ग्रिड और विकेंद्रीकृत सोलर फोटो वोल्टिक अनुप्रयोग कार्यक्रम, सतत रूफटॉप भारत के सौर परिवर्तन (सृष्टि) योजना आदि का कार्यान्वयन।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए):

- 2015 में पेरिस में आयोजित COP-21 के दौरान सौर ऊर्जा समाधानों से जलवायु परिवर्तन के खिलाफ संगठित करने के लिए भारत और फ्रांस के संयुक्त प्रयास से इसकी स्थापना हुई थी। इसका मुख्यालय गुरु ग्राम (भारत) में स्थित है। वर्तमान में 110 देशों ने आईएसए फ्रेमवर्क समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

वन सन-वन वर्ल्ड-वन ग्रिड:

- ग्लासगो में COP-26 जलवायु शिखर सम्मेलन में, भारत ने 'वन सन-वन वर्ल्ड-वन ग्रिड' लॉन्च किया था जिसका उद्देश्य लगभग 140 देशों को एक साझा ग्रिड के माध्यम से ऊर्जा प्रदान करना है जो सौर ऊर्जा को स्थानांतरित करेगा।

आगे की राह:

नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि होने से यह जलवायु परिवर्तन से निपटने में भारत और विश्व हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके मांग पक्ष को व्यवहार्य बनाने, विद्युत संयंत्र की व्यवहार्यता, ग्रिड के साथ-साथ नीति, बाजार और नियामक समाधानों को लघु से दीर्घावधि के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है।

2 मानक महोत्सव

चर्चा में क्यों?

मुंबई में भारतीय मानक ब्यूरो ने विश्व मानक दिवस के अवसर पर 14 अक्टूबर, 2022 को 'मानक महोत्सव' नामक एक 'मानक सम्मेलन' का आयोजन किया।

महोत्सव के बारे में:

- **थीम:** 'सतत विकास लक्ष्यों के लिए मानक-एक बेहतर दुनिया के लिए एक साझा दृष्टिकोण'
- इस कॉन्क्लेव के आयोजन में कई विषयों पर जोर दिया गया जैसे कि कैसे इस युग में मानक महत्व पूर्ण हैं और इस संबंध में और बेहतर काम कैसे किया जाए?
- कॉन्क्लेव को उपभोक्ता मामलों के मंत्री ने संबोधित किया, जिन्होंने 'ब्रांड इंडिया' के उद्भव के लिए गुणवत्ता मानकों के महत्व पर जोर दिया।

विश्व मानक दिवस के बारे में:

- विश्व मानक दिवस 14 अक्टूबर को दुनिया भर में काम करने वाले हजारों पेशेवरों के संयुक्त प्रयासों के सम्मान के लिए मनाया जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय मानकों के रूप में प्रकाशित स्वैच्छिक तकनीकी समझौतों को विकसित करने में सहायता करते हैं।
- इसका अस्तित्व 1946 से शुरू हुआ, जब मानकीकरण की सुविधा के लिए लंदन के 25 प्रतिनिधि एक साथ एक अंतर्राष्ट्रीय निकाय का शुभारंभ करने के लिए आए थे।
- हालांकि यह दिन पहली बार 1970 के दशक में मनाया गया था
- 2022 के लिए थीम: बेहतर दुनिया के लिए साझा दृष्टिकोण।

दुनिया भर में मानक:

- मानकीकरण प्रागैतिहासिक काल से दुनिया में मौजूद है, उत्खनन स्थलों पर समान आकार और आकार के पत्थर के औजार मिले हैं।
- हड़प्पा की मुहरों और बाटों से लेकर आधुनिक मानकीकरण के विकास तक, दुनिया के बेहतर कामकाज के लिए मानक विकसित हुए हैं।
- आम शब्दों में, एक मानक एक दस्तावेज है जो एक प्रक्रिया, उत्पादों या सेवाओं के लिए आवश्यकताओं, नियमों और दिशा-निर्देशों को प्रदान करता है जो आमतौर पर किसी मान्यता प्राप्त निकाय द्वारा सहमति और अनुमोदन का परिणाम होता है।
- वैश्विक मानकों के विकास में शामिल मुख्य संगठन अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन (आईएसओ), अंतर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रो-तकनीकी आयोग (आईईसी) और अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) आदि हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन, राष्ट्रीय मानक निकायों का एक विश्वव्यापी संघ है, जिसमें 160 से अधिक देशों के मानक निकाय शामिल हैं, जिसमें प्रत्येक सदस्य देश का प्रतिनिधित्व करने वाला एक मानक निकाय है।

भारतीय मानक ब्यूरो:

- भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), भारत का राष्ट्रीय मानक निकाय, जो भारत के लिए मानकों को तैयार करने में अहम भूमिका निभाता है।
- यह उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में कार्य करता है।
- भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) अधिनियम 2016, भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) को भारत के 'राष्ट्रीय मानक निकाय' के रूप में स्थापित करता है।
- बीआईएस मानकीकरण और अनुरूपता मूल्यांकन की अपनी मुख्य गतिविधियों के माध्यम से सुरक्षित, भरोसेमंद और गुणवत्तापूर्ण सामान उपलब्ध कराकर, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को लाभान्वित किया है।
- इसने उपभोक्ताओं के लिए स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने में भी बहुत योगदान दिया है। इसके अलावा पर्यावरण की रक्षा करना, विकल्प के रूप में निर्यात और आयात को बढ़ावा देना, किस्मों के प्रसार पर नियंत्रण आदि इसका काफी योगदान रहा है।

मानक क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?

- मानक अनुकूलता, संसाधनों का बेहतर उपयोग, बेहतर संचार और समझ, व्यापार बाधाओं को दूर करने आदि को बढ़ावा देते हैं।
- राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) के संबंध में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लिए मानकीकरण एक आवश्यक भूमिका निभा सकते हैं।
- इसके अलावा, भारत को अपना वैश्विक प्रभाव बनाने के लिए, उत्पादों, सेवाओं को मानकीकृत करना सुनिश्चित करना चाहिए जो भारत में आर्थिक विकास, मानव विकास, सांस्कृतिक विकास आदि में अपना योगदान दे सकें।

निष्कर्ष:

भारतीय प्रधानमंत्री के अनुसार मानक विकास, भारत के विकास के मुख्य स्तंभों में से एक है। भोजन और कपड़े जैसी बुनियादी जरूरतों से लेकर प्रमुख विकास बुनियादी ढांचे तक तथा समुदायों के बीच वृद्धि और बेहतर सह-अस्तित्व के लिए मानकीकरण की आवश्यकता है।

3 विश्व स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से 'विश्व स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन' 16 से 18 अक्टूबर के बीच बर्लिन में सम्पन्न हुआ।

विश्व स्वास्थ्य शिखर के बारे में:

- विश्व स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन एक अंतर्राष्ट्रीय, समावेशी और अंतर-क्षेत्रीय वैश्विक स्वास्थ्य सम्मेलन था जिसमें दुनिया के सभी क्षेत्रों के वैश्विक स्वास्थ्य नेताओं और हितधारकों को एक मंच पर लाया गया।
- सम्मेलन में सबसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार करते हुए 'मेकिंग द चॉइस फॉर हेल्थ' यानी 'स्वास्थ्य के लिए चुनाव करना' जैसे मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- WHS 2022 का उद्देश्य एक स्वस्थ भविष्य के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करना था जिसमें 300 से अधिक वक्ताओं और 6,000 प्रतिभागियों को शामिल किया गया।
- WHS 2022 के केंद्रीय विषय:
  1. स्वास्थ्य और कल्याण के लिए निवेश।
  2. जलवायु परिवर्तन और ग्रह स्वास्थ्य।
  3. महामारी की तैयारी के लिए आधारभूत संरचना।
  4. स्वास्थ्य के लिए डिजिटल परिवर्तन।
  5. खाद्य प्रणाली और स्वास्थ्य।
  6. स्वास्थ्य प्रणाली में रेजिलिएंस और इक्विटी।
  7. शांति के लिए वैश्विक स्वास्थ्य।

विश्व स्वास्थ्य संगठन:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) 1948 में स्थापित किया गया था जो संयुक्त राष्ट्र की स्वास्थ्य संबंधित विशेष एजेंसी है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन एक अंतर-सरकारी संगठन है जो अपने सदस्य राष्ट्रों के साथ, स्वास्थ्य मंत्रालय के माध्यम से सहयोग करता है।
- इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में स्थित है।
- WHO टीम में 194 सदस्य राज्य हैं, जो 6 मुख्य क्षेत्रों तथा 150 से अधिक स्थानों पर सहयोग कर सभी जन साधारण को अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण से सशक्त बनाने की ओर कार्य करती है।
- 1948 में भारत WHO का पक्षकार बना।

भारत में स्वास्थ्य योजनाएं:

1. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन:

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन को भारत सरकार द्वारा 2013 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (2005 में शुरू किया गया) और राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (2013 में शुरू किया गया) को मिलाकर शुरू किया गया था।
- यह जन साधारण को समान, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं पर सार्वभौमिक पहुंच की उपलब्धि की परिकल्पना करता है, जो उनकी पहुंच के भीतर हो, उनकी आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी हो तथा उनके प्रति जवाबदेह हो।

2. आयुष्मान भारत:

- यह भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक स्वास्थ्य योजना है जो राज्य स्तर पर विभिन्न प्रकार से चल रही स्वास्थ्य सेवाओं को एक व्यापक आवश्यकता आधारित स्वास्थ्य सेवा में बदलने की ओर कार्य करता है।
- सरकार ने सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच बढ़ाने हेतु इसे शुरू किया था।
- आयुष्मान भारत देखभाल दृष्टिकोण की निरंतरता को अपनाता है, जिसमें दो परस्पर संबंधित घटक शामिल हैं:-
  - स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र (HWCs)
  - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM&JAY)

3. राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन:

- इस मिशन का उद्देश्य देश के डिजिटल स्वास्थ्य ढांचे के एकीकरण के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करना है।

भारतीय स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए चुनौतियां:

- निरंतर प्रयासों के बावजूद, बुनियादी अनुसंधान तथा अनुसंधान संबंधी बुनियादी ढांचे के लिए अभी भी पर्याप्त पूंजी उपलब्ध नहीं है।
- पर्याप्त गुणवत्ता नियंत्रण और अपर्याप्त स्वास्थ्य खर्च के अलावा, योग्य चिकित्सा कर्मियों की कमी एक अन्य प्रमुख मुद्दा है जिसे हल करने की आवश्यकता है।
- अभी भी आबादी का एक बड़ा हिस्सा है जिसके पास बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं और सुविधाओं तक पर्याप्त पहुंच नहीं है। यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।
- स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों को अक्सर अत्यधिक भीड़-भाड़ वाली जगहों, अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, दवा और संसाधनों जैसी चरम स्थितियों में काम करना पड़ता है जिससे उनके काम पर भी असर पड़ता है।

4 राष्ट्रीय खेल 2022

चर्चा में क्यों?

राष्ट्रीय खेल 2022 गुजरात के 6 शहरों अहमदाबाद, गांधीनगर, सूरत, वड़ोदरा, राजकोट और भावनगर में आयोजित किए गए।

प्रमुख बिंदु:

- भारत का अपना ओलंपिक संस्करण कहा जाने वाला यह खेल 29 सितंबर से शुरू हुआ।
- हालांकि, चीन में 30 सितंबर को शुरू हुई अंतर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस चौंपियनशिप के साथ अतिव्यापन से बचने के लिए टेबल टेनिस प्रतियोगिताएं 20 सितंबर को शुरू कर दी गई थी।
- इस खेल में 28 भारतीय राज्यों, 8 केंद्र शासित प्रदेशों और भारतीय सशस्त्र बलों की खेल टीम को मिलाकर लगभग 7,000 एथलीटों ने 36 विभिन्न खेलों में पदक के लिए प्रतिस्पर्धा की।
- राष्ट्रीय खेल 2022 का समापन 12 अक्टूबर को हुआ।
- इन खेलों में सेवाओं ने सर्वाधिक 61 स्वर्ण पदक जीते जिसके बाद महाराष्ट्र (39), हरियाणा (38) और कर्नाटक (27) का स्थान रहा।
- इस आयोजन ने लगभग 36 खेलों की मेजबानी की गई, जिसमें पारंपरिक ओलंपिक खेलों के साथ-साथ मल्लखंब, खो-खो और कबड्डी जैसे स्वदेशी खेल शामिल थे।

खेल और विजेता:

- इस खेल में मल्लखंब नामक एक आकर्षक खेल का प्रदर्शन किया गया। यह कलात्मक जिम्नास्टिक है जहां खिलाड़ी लकड़ी के खंभे के चारों ओर घूमते हुए खुद को उल्टा संतुलित करते हैं, जिसमें केवल पांव ही उनके शरीर को संतुलित करने में सहायता देते हैं।
- सेवाओं ने अधिकतम पदक के साथ राजा भालिंद्र सिंह ट्रॉफी जीती, वहीं महाराष्ट्र को सर्वश्रेष्ठ राज्य ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।
- सजन प्रकाश ने पांच स्वर्ण, दो रजत और एक कांस्य सहित आठ पदक अपने नाम किए। उन्होंने 'सर्वश्रेष्ठ पुरुष एथलीट' का पुरस्कार भी जीता, जबकि हाशिका रामचंद्र ने '6 स्वर्ण और 1 कांस्य के साथ सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट' का पुरस्कार जीता।
- 10 साल के शौर्यजीत खैरे (मल्लखंब) पदक जीतने वाले सबसे कम उम्र के एथलीट बनने के बाद वायरल स्टार के रूप में उभरे।

भारत में खेल:

- भारत विश्व का सबसे युवा देश है इसलिए, खेल एक ऐसा महत्त्वपूर्ण पहलू है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं। इस विषय में भारत सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए हैं।
- खेलों को बढ़ावा देने हेतु युवा मामले और खेल मंत्रालय ने भारत के राष्ट्रीय खेल विकास संहिता 2011 को अधिसूचित किया।
- इसके अलावा नागर विमानन मंत्रालय ने 2022 में राष्ट्रीय वायु खेल नीति 2022 (NASP 2022) की शुरुआत की, जिसमें एरोबेटिक्स, मॉडलिंग, बैलूनिंग, ड्रोन, पावर्ड हैंग ग्लाइडिंग, पैराशूटिंग और अन्य गतिविधियां को शामिल किया गया।
- भारत में खेल प्रशासन के वर्तमान मॉडल में कई हितधारक हैं:
  - राष्ट्रीय खेल संघ (NSF)
  - भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI)
  - भारतीय ओलंपिक संघ (IOA)
  - राज्य ओलंपिक संघ (SOA)
  - युवा मामले और खेल मंत्रालय (MYAS) आदि।

सरकार की पहल:

1. खेलो इंडिया:

- एक योजना जो गुजरात के 'खेल महाकुंभ' पर आधारित है, जिसमें जमीनी स्तर पर युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर के मंच प्रदान करके उनकी प्रतिभा को विकसित करने की परिकल्पना की गई है।

2. फिट इंडिया मूवमेंट:

- भारतीय प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर लोगों से फिट इंडिया मूवमेंट के तहत एक फिट जीवन शैली अपनाने का आग्रह किया था।

3. खेलो इंडिया सेंटर:

- जून 2020 में, खेल मंत्रालय ने चार वर्षों के दौरान 1, 000 नए खेलो इंडिया केंद्र शुरू करने की योजना की घोषणा की जिसमें देश के प्रत्येक जिले में कम से कम एक केंद्र होंगे।

4. लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप):

- TOP कार्यक्रम 2014 में युवा और खेल मंत्रालय (MYAS) द्वारा शुरू किया गया था तथा 2018 में इसे विस्तारित किया गया ताकि 2020 टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों के साथ-साथ भविष्य की प्रतियोगिताओं में भारत के खिलाड़ियों को पदक जीतने में मदद मिल सके।

आगे की राह:

खेल एक ऐसी शक्ति है जो निश्चित रूप से भारत को प्रमुख सॉफ्ट पावर के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने में सहायता कर सकती है। वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर खेल तथा भारतीय एथलीटों को बढ़ावा देने के लिए हाल के कुछ वर्षों में सरकार द्वारा कई प्रयासों के बावजूद, कई कमियों को दूर करने की आवश्यकता है। जैसे-बुनियादी ढांचे की कमी, पारदर्शिता की कमी, अपर्याप्त व्यावसायिकता आदि।

5 नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF) का पहला मसौदा

चर्चा में क्यों?

राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क या एनसीआरएफ का मसौदा हाल ही में केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किया गया था। यह स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल शिक्षा के माध्यम से अर्जित ऋण को एकीकृत करने के लिए 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत एक रूपरेखा है। यह यूजीसी (उच्च शिक्षा में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स की स्थापना और संचालन) विनियमों के तहत तैयार किया गया, जिसे जुलाई 2021 में अधिसूचित किया गया था।

एनसीआरएफ की विशेषताएं:

स्कूली छात्रों के लिए क्रेडिट:

- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) एक क्रेडिट प्रणाली का अनुसरण करता है, वर्तमान में देश में नियमित स्कूली शिक्षा के लिए कोई स्थापित क्रेडिट तंत्र नहीं है।
- उच्च शिक्षा स्तर पर, एक विकल्प-आधारित क्रेडिट प्रणाली है, जहां एक छात्र को अर्जित किए जाने वाले क्रेडिट की संख्या के संदर्भ में डिग्री या डिप्लोमा या प्रमाण पत्र देने की आवश्यकता निर्धारित की जाती है।
- अब स्कूली छात्र क्लासरूम लर्निंग के साथ-साथ एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज से क्रेडिट कमा सकेंगे, जो क्रेडिट बैंक में जमा किए जाएंगे।

सभी ढांचे का एकीकरण:

- NCrF राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योग्यता फ्रेमवर्क (NHEQF), राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) और राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा योग्यता फ्रेमवर्क (NSEQF) को शामिल करके स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा और व्यावसायिक और कौशल शिक्षा के माध्यम से अर्जित क्रेडिट को समेकित रूप से एकीकृत करेगा।

आधार-सक्षम छात्र पंजीकरण:

- एक आधार-सक्षम छात्र पंजीकरण अभियान की योजना बनाई गई है जहां छात्र पंजीकरण होगा।

क्रेडिट के अकादमिक बैंक (एबीसी):

- छात्र पंजीकरण के बाद, एक अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) खाता खोला जाएगा, जहां क्रेडिट जमा किया जा सकता है। डिग्री और क्रेडिट उन खातों में जमा किए जाएंगे।

एनसीआरएफ की आवश्यकता:

- व्यावसायिक शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा के साथ स्कूल और उच्च शिक्षा का अंतर्संबंध सुनिश्चित करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों के क्रमिक कार्यान्वयन के लिए शैक्षिक प्रणाली तैयार करना जैसे कि चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम, जिसमें बहु प्रवेश और निकास आदि जैसी सुविधाएं हैं।
- मुख्यधारा की शिक्षा से बाहर हो चुके छात्रों को शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में फिर से प्रवेश करने में सक्षम बनाना।

निष्कर्ष:

एनसीआरएफ से छात्रों के नामांकन में वृद्धि, जनसांख्यिकीय लाभांश और भारत को विश्व की कौशल राजधानी में बदलने के राष्ट्रीय दृष्टिकोण को पूरा करने में मदद कर सकता है और भारत में बेरोजगारी जैसी समस्याओं का भी समाधान प्रदान कर सकता है।

6 ग्लाइफोसेट

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, सरकार ने मानव और पशु स्वास्थ्य के लिए जोखिम के डर से हर्बिसाइड ग्लाइफोसेट के उपयोग को प्रतिबंधित कर दिया है। अब से, ग्लाइफोसेट केवल कीट नियंत्रण ऑपरेटरों (पीसीओ) के माध्यम से उपयोग किया जाएगा। पीसीओ को कृन्तकों जैसे कीटों के इलाज के लिए घातक रसायनों का उपयोग करने के लिए लाइसेंस दिया जाता है।

ग्लाइफोसेट:

- यह एक गैर-चयनात्मक शाकनाशी (दोनों अर्थात सहयोगी प्रकार के पौधों को भी मारता) है। इसका उपयोग पौधों की वृद्धि को नियंत्रित करने और विशिष्ट फसलों को पकने के लिए भी किया जाता है। यह ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्राजील, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड और श्रीलंका सहित 28 देशों में प्रतिबंधित है, क्योंकि इससे कार्सिनोजेनिक हो सकता है (डब्ल्यूएचओ के एक अध्ययन के अनुसार) और यह 6 महीने तक पर्यावरण में अवशेष के रूप में रहता है।

भारत में ग्लाइफोसेट का उपयोग:

- यह वृक्षारोपण कृषि में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग वनीकरण गतिविधियों में और सिंचाई चौनलों, रेलवे ट्रैक आदि के क्षेत्रों में खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए भी किया जाता है। इसे बीटी कपास के साथ भी जोड़ा जा सकता है, जिससे डेक्कन बेल्ट में उच्च उपयोग होता है।

प्रतिबन्ध के बाद जुड़ी चिंताएं:

- अब सबसे बड़ी चिंता यह है कि खेती क्षेत्र में कोई कीट नियंत्रण संचालक प्रणाली उपलब्ध नहीं है और अनिवार्य रूप से इस नियम में किसानो को बहुत बाधायें आ सकती है। दूसरा, पीसीओ के शामिल होने से काफी हद तक अतिरिक्त लागत आएगी, इसलिए यह किसान केंद्रित कदम नहीं है।

निष्कर्ष

ग्लाइफोसेट अपने शुद्ध रूप में विषाक्तता में कम है। हालांकि, व्यावसायिक रूप से उपलब्ध अंतिम उत्पाद अन्य अवयवों के साथ मिलाने पर अत्यधिक विषैला होता है। उत्पाद त्वचा और आंखों में जलन, मतली, गले में जलन, उल्टी और दस्त का कारण बनता है। ग्लाइफोसेट के लंबे समय तक एक्सपोजर से अस्थमा, मधुमेह, कैंसर, बांझपन और जन्मजात अक्षमता जैसी पुरानी बीमारियां हो सकती हैं। अब जरुरत यह है कि किसानो के लिए इसके जगह कोई वैकल्पिक समाधान प्रदान करना चाहिए।

7 इंटरपार्लियामेंट्री यूनियन इलेक्शन

चर्चा में क्यों?

रवांडा की संसद द्वारा 11 से 15 अक्तूबर तक किगाली में अंतर संसदीय संघ की 145वीं विधान सभा और उससे संबंधित सभी बैठकों की मेजबानी की गई। इसी दौरान आईपीयू की कार्यकारी समिति के सदस्य के पद के चुनाव में अपराजिता सारंगी ने 18 मतों में से 12 मतों से शानदार जीत हासिल की।

IPU राष्ट्रीय संसदों का एक वैश्विक संगठन है जो शांति, लोकतंत्र और सतत् विकास को बढ़ावा देने के लिए संसदों और सांसदों को सशक्त बनाता है।इसकी स्थापना फ्रांस के राजनेता फ्रेडरिक पासी और यूनाइटेड किंगडम के विलियम रान्डल क्रेमर द्वारा 1889 में पेरिस में हुई थी। इसका मुख्यालय जिनेवा में स्थित है। आईपीयू में 179 राष्ट्रीय संसद व 13 क्षेत्रीय संसदीय निकाय शामिल है। आईपीयू अध्यक्ष संगठन का राजनीति प्रमुख होता है। यह वैश्विक आयोजनों और समारोहों में निकाय के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है।

विधानसभा का समग्र विषय लिंग समानता और लिंग संवेदनशील संसद है। आगामी चुनाव लैंगिक समानता और युवा सशक्तिकरण दोनों को अधिक से अधिक प्रगति करने का मौका देते हैं। यह संघर्ष के मध्यस्थता के लिए संयुक्त राष्ट्र, क्षेत्रीय संसदीय संगठनों, अंतरराष्ट्रीय अंतर सरकारी संगठनों और गैर सरकारी संगठनों के साथ घनिष्ठ सहयोग के साथ काम करता है।

आईपीयू का मुख्य उद्देश्य:

- इसका उद्देश्य विश्वव्यापी संसदीय संवाद कायम करना और शांति एवं सहयोग बनाए रखते हुए लोकतंत्र को मजबूत बनाना है।
- यह अपने सदस्यों देशों के बीच लोकतांत्रिक शासन, जवाबदेही और सहयोग को बढ़ावा देता है।
- अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह सभी देशों की संसद तथा सांसदों के बीच समन्वय और अनुभवों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करता है और अंतरराष्ट्रीय हितों तथा सरोकारों के प्रश्नों पर विचार-विमर्श करता है। मानवाधिकारों की रक्षा और संवर्धन में योगदान देने के साथ ही प्रतिनिधि संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण तथा विकास में भी यह अपना योगदान देता है।

आईपीयू का कार्यक्षेत्र:

आईपीयू अंतरराष्ट्रीय चिंताओं को दूर करने के लिए छः मुख्य कार्य क्षेत्रों पर कार्य करके संसदीय कार्रवाई को बढ़ावा देता है :

- प्रतिनिधिक लोकतंत्र।
- शांति और सुरक्षा।
- सतत् विकास को बढ़ावा
- मानवाधिकार और मानवीय कानून।
- राजनीति में महिलाएं।
- शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति।

आगे की राह:

अंतर-संसदीय संघ वैश्विक राजनीतिक विचारों पर चर्चा करने का एक मंच है। 2022 में वैश्विक राजनीति में दूरगामी परिवर्तन की संभावना है। साथ ही यह संसद में महिला सांसदों, महिला वक्ताओं और युवा लोगों की बढ़ती संख्या का समर्थन करना जारी रखेगा। इसके जरिए भविष्य में मानव तस्करी, मानव अधिकारों का हनन, खाद्य सुरक्षा से संबंधित, पर्यावरण से संबंधित मुद्दों आदि पर कार्यवाही की जा सकती है।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की महत्त्वपूर्ण खबरें

1. नवजात चूहों में एकीकृत मानव मस्तिष्क कोशिका का सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण

हाल ही में वैज्ञानिकों ने मानव मस्तिष्क की कोशिकाओं को नवजात चूहों में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किया जिससे जटिल मानसिक विकारों का अध्ययन करने की एक नई विधि तैयार हो गई है। इस प्रयोग से मानव मस्तिष्क के विकास और तंत्रिका विकास संबंधी विकारों के विषय में अधिक जाना जा सकेगा। यह अध्ययन स्किजोफ्रेनिया और ऑटिज़्म जैसे जटिल मनोवैज्ञानिक विकारों का अध्ययन करने का एक नया तरीका साबित हो सकता है।

2. सी-बकथॉर्न

हाल ही में लद्दाख में, भारतीय डाक ने प्रचार के लिए 'वन डिस्ट्रिक्ट-वन प्रोडक्ट' थीम के तहत लेह उत्पाद के रूप में सी-बकथॉर्न पर एक विशेष कवर जारी किया है।

सी-बकथॉर्न के बारे में:

सी बकथॉर्न, हिमालय का अद्भुत बेरी फल के रूप में जाना जाता है। सीबकथॉर्न एक सुंदर, सुनहरी और नारंगी जंगली बेरी है। हिमालय की कठोर जलवायु में जीवित रहने के लिए पोषण इकट्ठा करने के लिए इसकी झाड़ियों की जड़ें जमीन में 200 फीट नीचे होती हैं। सी-बकथॉर्न में 190 से अधिक जैविक रूप से सक्रिय यौगिक होते हैं। इस पर संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, जर्मनी और भारत जैसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों से व्यापक शोध निष्कर्ष नियमित रूप से प्रकाशित किए जा रहे हैं।

3. कामिकेज ड्रोन

हाल ही में, यूक्रेन के राजधानी कीव पर ईरान निर्मित कामिकेज ड्रोन द्वारा हमला किया गया।

कामिकेज ड्रोन के विषय में:

ये छोटे मानवरहित विमान हैं, जो विस्फोटकों से भरे होते हैं, जिन्हें सीधे एक टैंक या सैनिकों के समूह पर उड़ाया जा सकता है। ये लक्ष्य से टकराने और विस्फोट होने पर नष्ट हो जाते हैं। इस ड्रोन का नाम द्वितीय विश्व युद्ध के समय के जापानी कामिकेज पायलटों पर रखा गया है, जिन्होंने जानबूझकर अपने विस्फोटक से भरे विमान को दुश्मन के ठिकानों में हमला करके आत्मघाती आक्रमण किया था।

4. वर्ल्ड ग्रीन सिटी अवार्ड

हाल ही में तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद ने जेजू (दक्षिण कोरिया) में आयोजित इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हॉर्टिकल्चर प्रोड्यूसर्स (एआईपीएच) वर्ल्ड ग्रीन सिटी अवार्ड्स 2022 में समग्र 'वर्ल्ड ग्रीन सिटी अवार्ड 2022' और 'लिविंग ग्रीन फॉर इकोनॉमिक रिकवरी एंड इनक्लूसिव ग्रोथ' पुरस्कार जीता है।

हैदराबाद ने पेरिस, मैक्सिको सिटी, मॉन्ट्रियल, फोर्टालेजा और बोगोटा जैसे शहरों को हराकर यह पुरस्कार जीता है। यह पुरस्कार में एक ऐसी श्रेणी है जो ऐसे सिस्टम और समाधान बनाने पर केंद्रित है जो सभी शहर के निवासियों को आर्थिक संकट से उबरने तथा विकास करने से सम्बंधित हैं। इस श्रेणी में ओआरआर हरियाली जिसे 'तेलंगाना राज्य के लिए ग्रीन नेकलेस' कहा जाता है, को इस श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया।

AIPH
The world's champion for the power of plants
WORLD GREEN CITY AWARDS 2022

5. भारतीय बाइसन या गौर को निर्यात करने के प्रस्ताव पर विचार:

भारत सरकार श्रीलंका को गौर, या भारतीय बाइसन निर्यात करने के लिए कोलंबो के प्रस्ताव पर विचार कर रही है।

उद्देश्य:

- 17वीं शताब्दी के अंत से श्रीलंका में विलुप्त हो चुकी गौर की आबादी को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है। यह भारत और श्रीलंका के बीच पहला ऐसा समझौता होगा तथा यह 'वन्यजीव या प्राणी कूटनीति' की वैश्विक प्रवृत्ति का हिस्सा होगा।

भारतीय बाइसन के बारे में:

- भारतीय गौर, एक सबसे बड़ा जंगली गोजातीय है। यह दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया का स्थानीय निवासी है। यह वियतनाम, कंबोडिया, लाओस, थाईलैंड, प्रायद्वीपीय मलेशिया, म्यांमार, बांग्लादेश, भूटान, चीन और नेपाल में पाया जाता है। दुनिया में लगभग 13,000 से 30,000 गौर हैं, जिनमें लगभग 85% जनसंख्या भारत में निवास करती है।

6. वुल्फ वारियर कूटनीति:

हाल ही में, चीनी कूटनीति की 'वुल्फ वारियर' शैली ने सभी का ध्यान आकर्षित किया।

- यह एक ऐसा शब्द है जिसने शी जिनपिंग के राष्ट्रपति बनने के बाद लोकप्रियता हासिल की।
- 'वुल्फ वारियर कूटनीति' का प्रयोग चीनी सरकार के लिए चीन से पृथक अपनी विचारधारा का विस्तार करने, पश्चिम का मुकाबला करने और अपनी रक्षा करने की एक युक्ति है।
- 2015 की एक चीनी एक्शन फिल्म, जिसका शीर्षक 'वुल्फ वॉरियर' था, इसके सीक्वल ने इस शब्द के लिए प्रेरणा का काम किया ।

7. एकीकृत पेंशनर पोर्टल का हुआ शुभारंभ:

केंद्र सरकार ने पेंशनभोगियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एकीकृत पेंशनर पोर्टल नामक एकल खिड़की की शुरुआत की।

- पेंशनभोगियों के जीवन को आसान बनाने की दृष्टि से, विभाग ने एक एकीकृत पेंशनभोगी पोर्टल विकसित किया है।
- इसमें डीओपीपीडब्ल्यू के विभिन्न स्टैंड-अलोन पोर्टल शामिल हैं।
- भारतीय स्टेट बैंक पहला पेंशन वितरण बैंक बन गया है जिसने स्वयं को पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण विभाग (DoPPW) के पोर्टल के साथ एकीकृत किया है।
- पेंशनभोगी अपनी सभी पेंशन संबंधी गतिविधियों के लिए इस पोर्टल का उपयोग कर सकते हैं।
- एकीकृत पेंशनभोगियों के पोर्टल को सभी पेंशन संवितरण बैंकों के साथ जोड़ा जाएगा।
- यह पोर्टल विभिन्न सरकारी नीतियों की प्रभावशीलता को बढ़ाने में पेंशनभोगी के योगदान से संबंधित जानकारी देने का अवसर भी प्रदान करता है।

8. बुकर पुरस्कार 2022:

हाल ही में श्रीलंकाई लेखक शेहान करुणातिलका ने अपने दूसरे उपन्यास 'द सेवन मून्स ऑफ माली अल्मेडा' के लिए बुकर पुरस्कार जीता। बुकर प्राइज एक लिटरेरी प्राइज है जो हर साल अंग्रेजी भाषा में लिखे गए और यू.के या आयरलैंड में पब्लिश हुए सर्वश्रेष्ठ नावेल को दिया जाता है।

9. स्वदेश निर्मित प्रथम एल्यूमीनियम फ्रेट ट्रेन:

भारतीय रेलवे ने हाल ही में भुवनेश्वर से स्वदेशी रूप से निर्मित एल्यूमीनियम माल ट्रेन रेक का अनावरण किया है। यह अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में हल्का, लेकिन अधिक माल ढुलाई की क्षमता रखती है।

- इससे कार्बन की आठ से 10 टन बचत होगी
- यह पारंपरिक रेकों पर प्रति ट्रिप 180 टन अतिरिक्त पेलोड ले जा सकता है।
- रचना पर बिना वेल्डिंग के इन वैगनों को बनाने के लिए पूरी तरह से लॉक बोल्ट वाले निर्माण का उपयोग किया गया था।
- नए रेक का 80 प्रतिशत पुनर्विक्रय मूल्य और 10 वर्ष का जीवनकाल है।
- एल्युमीनियम घरेलू उद्योग के लिए अच्छा है। लोहा और इस्पात उद्योग, निकेल तथा कैडमियम की बहुत अधिक खपत करता है जिसका आयात किया जाता है। इसलिए एल्युमीनियम वैगनों के प्रसार से आयात कम होगा और साथ ही यह घरेलू एल्युमीनियम उद्योग के लिए अच्छा है।

10. स्प्रट-एसडीएम-1 लाइट एम्फीबियस टैंक

रूस भारतीय सेना के आगामी टेंडर के लिए अपने स्प्रट-एसडीएम-1 लाइट एम्फीबियस टैंक को लांच करेगा।

- स्प्रट पानी की बाधाओं को पार कर सकता है और जहाज से उतरते समय अपनी बंदूक से फायर कर सकता है। यह हर स्थिति में काम कर सकता है।
- टैंक एक निर्देशित मिसाइल प्रणाली से लैस है जिसे 5 कि.मी. तक की दूरी पर ईआरए (ERA) से लैस बख्तरबंद लक्ष्यों को भेदन करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- हल्के टैंकों की मौजूदगी से भारतीय सेना की उच्च स्तर की गतिशीलता के कारण, ऊंचाई वाले क्षेत्रों में युद्ध क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है। इससे भारत को चीन के साथ अपनी ऊंचाई वाली सीमाओं को सुरक्षित करने में सहायता मिलेगी।

11. पर्यटक पुलिस योजना पर राष्ट्रीय सम्मेलन

गृह मंत्रालय के पुलिस अनुसंधान और विकास ब्यूरो के समन्वय में केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय अखिल भारतीय स्तर पर एक समान पर्यटक पुलिस योजना के कार्यान्वयन के संबंध में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस विभाग के महानिदेशकों / महानिरीक्षकों के राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

पर्यटक पुलिस योजना का उद्देश्य:

- विदेशी और घरेलू पर्यटकों को पर्यटन स्थलों पर तथा उसके आसपास एक सुरक्षित पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करना। उन्हें राज्य/केंद्र शासित प्रदेश के पुलिस विभाग के साथ मिलकर काम करने में सक्षम व सुगम बनाना। अखिल भारतीय स्तर पर वर्दी पर्यटक पुलिस योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विदेशी एवं घरेलू पर्यटकों की विशिष्ट आवश्यकताओं के विषय में उन्हें संवेदनशील बनाना।
- यह वैश्विक स्तर पर भारत की सुरक्षा और सुरक्षा संबंधी धारणा को परिवर्तित कर देगा तथा भारत को विश्व भर में एक अनिवार्य यात्रा गंतव्य बनाने में सहायता करेगा।

12. सर सैयद उत्कृष्टता पुरस्कार

हाल ही में, अमेरिकी इतिहासकार बारबरा डी. मेटकाफ ने 2022 के लिए सर सैयद उत्कृष्टता अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) द्वारा सर सैयद अहमद खान की जयंती 17 अक्टूबर को यह वार्षिक पुरस्कार दिया जाता है। मेटकाफ के लेखन ने विशेष रूप से औपनिवेशिक काल के दौरान भारत और पाकिस्तान की मुस्लिम आबादी के इतिहास को समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

13. स्कूल ऑफ एक्सीलेंस परियोजना का शुभारंभ

हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा गांधीनगर, गुजरात में महत्त्वाकांक्षी 'मिशन स्कूल ऑफ एक्सीलेंस' परियोजना का शुभारंभ किया गया है।

- 10,000 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ, विश्व बैंक द्वारा आंशिक रूप से वित्त पोषित इस मिशन का उद्देश्य राज्य में नई कक्षाओं की स्थापना के माध्यम से शिक्षा के बुनियादी संरचना को मजबूत करना है।
- इस परियोजना के तहत सरकारी स्कूलों में 1.5 लाख स्मार्ट कक्षाओं, 20,000 कंप्यूटर प्रयोगशालाओं और 5,000 अटल टिंकरिंग प्रयोगशालाओं के अलावा 50,000 कक्षाओं की स्थापना होगी।

14. निहोन्शु

हाल ही में जापान के दूतावास, नई दिल्ली ने मादक पेय, निहोन्शु/जापानी सेक को भौगोलिक संकेत (जीआई टैग) की मांग करते हुए एक आवेदन किया है।

जापान के किसी उत्पाद के लिए यह पहली बार है, जब चेन्नई में भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री में टैग के लिए एक आवेदन हुआ है। जापान में, निहोन्शु को चावल से बना एक विशेष और मूल्यवान पेय माना जाता है। लोग पारंपरिक रूप से त्यौहारों, शादियों या अंत्येष्टि जैसे विशेष अवसरों पर निहोंशु पीते हैं। इस प्रकार, यह जापान में जीवन शैली और संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

सेक बाजार (लगभग सभी निहोन्शु हैं) जापान में दूसरी सबसे बड़ी शराब (जैसे बीयर) का बाजार है। निहोन्शु बनाने के लिए तीन मुख्य कच्चे माल-चावल, कोजी-किन (एक प्रकार का कवक बीजाणु) और जल की आवश्यकता होती है।

15. हैदराबादी हलीम को खाद्य श्रेणी में 'सबसे लोकप्रिय जीआई' का पुरस्कार

हाल ही में, हैदराबादी हलीम, एक लोकप्रिय व्यंजन जिसे रमजान के दौरान ज्यादातर खाया जाता है, को खाद्य श्रेणी में 'सबसे लोकप्रिय जीआई' का पुरस्कार मिला है। यह पुरस्कार वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रदान किया गया।

विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार:

- ओडिशा की कंधमाल हल्दी, जो अपने उपचार गुणों के लिए प्रसिद्ध है, को कृषि श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
- तमिलनाडु के तंजावुर आर्ट प्लेट ने हस्तशिल्प श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त किया है।
- विनिर्मित श्रेणी में कर्नाटक से मैसूर चंदन साबुन को पुरस्कार मिला है ।
- प्राकृतिक श्रेणी में उत्तर प्रदेश के चुनार के बलुआ पत्थर को पुरस्कार मिला है।

हैदराबादी हलीम:

यह मांसाहारी पकवान ज्यादातर रमजान के दौरान खाया जाता है। हैदराबादी हलीम को पहली बार 2010 में जीआई का दर्जा दिया गया था और यह टैग प्राप्त करने वाला भारत का पहला मांसाहारी व्यंजन था। हलीम मेकर्स एसोसिएशन, जिसे 2010 में जीआई टैग मिला था, ने हाल ही में मई, 2022 में, इसे और 10 वर्षों के लिए नवीनीकृत कराया है।

समसामयिकी घटनाएं एक नजर में

1. केंद्रीय रेलमंत्री अश्वनी वैष्णव ने भुवनेश्वर से भारत के पहले एल्युमीनियम माल धुलाई रैक का उद्घाटन किया जिसका निम्न लाभ है: लोहे की तुलना में हल्का, अधिक माल की क्षमता तथा कम ईंधन की खपत।
2. हैदराबाद को वर्ल्ड ग्रीन सिटी अवार्ड से सम्मानित किया गया। हैदराबाद यह पुरस्कार प्राप्त करने वाला देश का एकमात्र शहर है।
3. केंद्र सरकार ने भारतीय भाषाओं में पर्याप्त अध्ययन सामग्री तैयार करने के लिए NEP 2020 पर आधारित 22 भाषा केंद्रों की स्थापना की।
4. केंद्र सरकार ने वित्त मंत्रालय में लेखा महानियंत्रक भारती दास को नियुक्त किया।
5. भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने सौरव गांगुली के स्थान पर रोजर बिन्नी को नया अध्यक्ष चुना।
6. फुटबॉल का 18वां एशिया कप 2023 की मेजबानी कतर (दोहा) करेगा।
7. वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2022 के अनुसार, भारत में 2015-16 के मुताबिक 2019-20 में गरीबी में सुधार हुआ है।
8. 100 मीटर बाधा दौड़ 13 सेकेंड से भी कम समय में पूरा करने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट ज्योति याराजी बनी।
9. डिफेंस एक्सपो का 12वां संस्करण गुजरात में आयोजित हुआ जो गौरव पथ (पाथ टू प्राइड) थीम पर आधारित था।
10. केंद्रीय मंत्री डॉक्टर जितेंद्र सिंह ने सिंगल इंटीग्रेटेड पेंशन पोर्टल का शुभारंभ किया जिसे भविष्य पोर्टल नाम से जाना जायेगा।
11. केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने संगरूर पंजाब में एशिया का सबसे बड़ा कंप्रेस बायोगैस संयंत्र लांच किया।
12. उल्फ क्रिस्टर्सन स्वीडन के नए प्रधानमंत्री चुने गए।
13. अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के अध्यक्ष आर के सिंह (भारत) और सह अध्यक्ष क्रिसोला (फ्रांस) चुने गए। इसका मुख्यालय गुरुग्राम (भारत) में स्थित है।
14. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटरेस के साथ मिशन लाइफ (Li लाइफस्टाइल, F फॉर द, E एनवायरमेंट) को गुजरात से लांच किया जिससे पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा।
15. अक्टूबर 2022 में अरमाने गिरिधर को नया रक्षा सचिव नियुक्त किया गया। ये 31 अक्टूबर को अजय कुमार के सेवानिवृत्ति होने के बाद रक्षा विभाग के सचिव का पद संभालेंगे।
16. यूक्रेन के लोगों को यूरोपीय संसद के शीर्ष सम्मान सखारोव प्राइस पर फ्रीडम ऑफ थॉट से सम्मानित किया गया जोकि यूरोपीय यूनियन द्वारा दिया जाता है।
17. भारतीय मूल के ऋषि सुनक को ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने लिज ट्रस का स्थान लिया।
18. शंकर सुब्रमण्यम भारत के आदित्य एल1 मिशन के प्रधान वैज्ञानिक बनाये गये। यह सूर्य के आन्तरिक भाग कोरोना पर रिसर्च करेगा।
19. अनुमानित 250 करोड़ रूपये के लगत से भारत के पहले वर्टिकल लिफ्ट रेलवे सी ब्रिज-पंबन ब्रिज का निर्माण तमिलनाडु में हो रहा है, जो कि भारत की मुख्य भूमि को रामेश्वरम द्वीप से जोड़ता है।
20. डॉ के.पी. अश्वनी को रंगभेद तथा नस्लभेद में सुधार करने के लिए, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के विशेष दूत के रूप में नियुक्त किया गया। इनका कार्यकाल 3 वर्ष के लिए होगा।
21. इजिप्ट में 6 से 18 नवंबर तक COP-27 जलवायु परिवर्तन का आयोजित होगा जिसका विषय 'जलवायु परिवर्तन का महाद्वीप पर गंभीर प्रभाव' है।
22. लक्षद्वीप के थुड़ी और कदमत समुद्री तटों को प्रतिष्ठित ब्लूफ्लैग प्रमाणन प्राप्त हुआ। यह फाउंडेशन ऑफ एनवायरनमेंट एजुकेशन द्वारा दिया जाने वाला प्रमाणन है जोकि अब तक भारत की 12 साइटों को दिया जा चुका है।
23. संगीता वर्मा को भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग का कार्यवाहक अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
24. सत्यजीत रे की 1955 में प्रकाशित 'पाथेर पंचाली' को इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिल्म क्रिटिक्स ने सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ भारतीय फिल्म घोषित किया।
25. डॉक्टर शिफाली जुनेजा को अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन की वायु परिवहन समिति की अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 28 साल बाद इस समिति की अध्यक्षता भारत करेगा।
26. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 30 अक्टूबर को बड़ोदरा में c-295 एमडब्ल्यू परिवहन विमान विनिर्माण परियोजना की आधारशिला रखी।

स्वदेश दर्शन 2.0

विजन

देश में स्थायी और जिम्मेदार पर्यटन स्थलों का विकास करना।

मिशन

◆ देश में स्थायी और जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों और स्थानीय सरकारों के साथ साझेदारी में पर्यटन स्थलों के एकीकृत विकास के लिए एक मजबूत ढांचा तैयार करना।

उद्देश्य

- ◆ स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में पर्यटन के योगदान को बढ़ाने के लिए।
- ◆ स्थानीय समुदायों के लिए स्वरोजगार सहित रोजगार सृजित करना।
- ◆ पर्यटन और आतिथ्य में स्थानीय युवाओं के कौशल को बढ़ाने के लिए।
- ◆ पर्यटन और आतिथ्य में निजी क्षेत्र के निवेश को बढ़ाने के लिए।
- ◆ स्थानीय सांस्कृतिक और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और संवर्धन करना।

पर्यटन-आर्थिक विकास का इंजन

- ◆ यात्रा और पर्यटन क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में सामरिक महत्त्व रखता है।
- ◆ सामाजिक-आर्थिक लाभ प्रदान करता है:
  - ➢ रोजगार
  - ➢ आय
  - ➢ विदेशी मुद्रा अर्जन
- ◆ अन्य उद्योगों का विकास या विस्तार जैसे:
  - ➢ कृषि
  - ➢ निर्माण
  - ➢ हस्तशिल्प

प्रमुख सिद्धांत

- ◆ प्रमुख पर्यटन विषयों के लिए मानक विकसित करना।
- ◆ सतत और जिम्मेदार पर्यटन।
- ◆ गंतव्य और पर्यटन केंद्रित दृष्टिकोण।
- ◆ पर्यटन स्थल का एकीकृत विकास।
- ◆ घरेलू पर्यटन पर ध्यान।
- ◆ नीति और संस्थागत सुधार।
- ◆ स्थायी आधार पर संचालन और रखरखाव।
- ◆ अन्य केंद्रीय और राज्य योजनाओं के साथ तालमेल।

प्रमुख थीम

◆ विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस हर साल 10 अक्टूबर को दुनिया भर में जागरूकता बढ़ाने और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए मनाया जाता है।

पर्यटन क्षेत्र के संवर्धन और विकास के लिए नीतिगत पहल

- ◆ गंतव्य प्रबंधन संगठन की स्थापना।
- ◆ आतिथ्य उद्योग का राष्ट्रीय एकीकृत डेटाबेस (NIDHI)
- ◆ आतिथ्य उद्योग के लिए आकलन, जागरूकता और प्रशिक्षण के लिए प्रणाली (SAATHI)
- ◆ स्थायी पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन आदि के लिए स्टार वर्गीकरण और प्रमाणन योजनाओं में सुधार।
- ◆ होमस्टे / बी एंड बी के लिए न्यूनतम मानक।
- ◆ अतुल्य भारत वेबसाइट और मोबाइल एप्लिकेशन।
- ◆ पर्यटन आँकड़े जारी करना।
- ◆ एमआईसीई, मेडिकल और वेलनेस, इकोटूरिज्म, एडवेंचर टूरिज्म तथा अन्य विशिष्ट क्षेत्रों के विकास के लिए रणनीतियाँ।

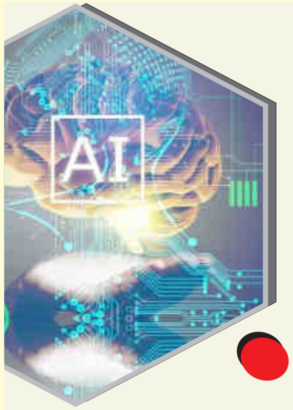

दूरसंचार क्षेत्र में एआई और बिग डेटा का लाभ

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के बारे में

एआई के जनक जॉन मैकार्थी, जिन्होंने 1956 में इस शब्द को दिया था जिसे 'बुद्धिमान मशीन बनाने के विज्ञान और इंजीनियरिंग' के रूप में परिभाषित करते हैं।

एआई के प्रकार

- **कमजोर एआई:** आईबीएम सेल्फ-ड्राइविंग कारों और वर्चुअल असिस्टेंट को कमजोर एआई की श्रेणी में मानता है।
- **सामान्य एआई:** वे एप्लिकेशन जहां मशीनें मानव क्षमताओं का अनुकरण करती हैं और किसी भी कार्य को मानव की तरह ही करती हैं।
- **मजबूत एआई:** यह तब होता है जब मशीनें इंसानों की तुलना में चेतना और निर्णय लेने (या बेहतर) पर विकसित होती हैं।

बिग डेटा (बीडी) के बारे में

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) बीडी को 'विभिन्न विशेषताओं वाले व्यापक डेटासेट के संभावित वास्तविक समय की बाधाओं के तहत संग्रह, भंडारण, प्रबंधन, विश्लेषण और विजुअलाइजेशन को सक्षम करने के लिए एक प्रतिमान' के रूप में परिभाषित करता है।

बीडी के लक्षण

बीडी की विशेषता 4 "V" है

- विविधता (Variety): संरचित, असंरचित और अर्ध-संरचित डेटा जो कई स्रोतों से एकत्र किया जाता है।
- सत्यता (Veracity): डेटा में पक्षपात, शोर और असामान्यता।
- वेग (Velocity): कितनी तेजी से डेटा एकत्र किया जा रहा है और अपेक्षित परिणाम देने के लिए बड़ी डेटा प्रौद्योगिकियों द्वारा कितनी तेजी से डेटा संसाधित किया जाता है?
- आयतन (Volume): विभिन्न स्रोतों से दैनिक आधार पर बड़ी मात्रा में डेटा उत्पन्न होता है।

बीडी की श्रेणियाँ

- संरचित डेटा।
- अर्ध-संरचित डेटा।
- असंरचित डेटा।

बीडी के प्रकार

- मेटाडेटा (डेटा के बारे में डेटा)।
- डेटा निकास।
- मानव-स्रोत (नागरिक-जनित) डेटा।
- एआई-सोर्स्ड डेटा।
- व्यक्तिगत डेटा।
- गैर-व्यक्तिगत डेटा (एनपीडी)।
- मुक्त डेटा।

बिग डेटा एनालिटिक्स

- आंकड़ा संग्रहण।
- डेटा प्री-प्रोसेसिंग और विश्लेषण।
- बिग डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म और टूल्स।

दूरसंचार में बी.डी

- **नेटवर्क इन्फ्रास्ट्रक्चर:** नेटवर्क इवेंट, कॉल रिकॉर्ड (ऑन और ऑफ नेटवर्क), टेक्स्ट तथा मल्टीमीडिया संदेशों की संख्या, डेटा ट्रैफिक की मात्रा, स्थान-विशिष्ट डेटा, उपयोगकर्ता हैंडसेट डेटा।
- **उत्पाद:** उत्पाद सूची, उत्पाद जीवन-चक्र डेटा, उत्पाद और प्लेटफॉर्म लागत, नवाचार रोडमैप, उत्पाद उपयोग इत्यादि।
- **मार्केटिंग और बिक्री:** ग्राहक डिवाइस, विकल्प प्राथमिकताएं, बिक्री चैनल डेटा, सेगमेंटेशन डेटा इत्यादि।
- **कस्टमर केयर:** ऑर्डर डेटा, कॉन्ट्रैक्ट डेटा, फॉल्ट हैंडलिंग डेटा।

दूरसंचार क्षेत्र के लिए अवसर

- सेवा की समग्र गुणवत्ता में वृद्धि (क्यूओएस)
- स्पेक्ट्रम प्रबंधन।
- नेटवर्क सुरक्षा।
- ग्राहक केंद्रित।
- प्रसारण क्षेत्र।

मिशन लाइफ

संदर्भ

भारत के प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी ने हाल ही में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, केवड़िया (गुजरात) में संयुक्त राष्ट्र महासचिव के साथ एक द्विपक्षीय बैठक की जिसके दौरान उन्होंने वैश्विक पहल के रूप में 'मिशन LiFE' का शुभारंभ किया।

प्रमुख बिंदु

- संयुक्त राष्ट्र महासचिव (यूएनएसजी) एंटोनियो गुटेरेस ने हाल ही में भारत का दौरा किया। UNSG के रूप में पुन: निर्वाचन के बाद, यह उनकी पहली भारत यात्रा थी।
- भारतीय प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में एकता के महत्त्व पर प्रकाश डाला।
- प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रचलित धारणा के विपरीत जलवायु परिवर्तन केवल नीति से संबंधित एक मुद्दा नहीं है, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए व्यक्ति, परिवारों और समुदायों से भी योगदान की आवश्यकता है।
- प्रधानमंत्री ने बताया कि मिशन LiFE P-3 मॉडल की भावना को बढ़ाता है, यानी प्रो प्लैनेट पीपल जो 'ग्रह की जीवन शैली, ग्रह के लिए और ग्रह द्वारा' के विश्वास की परिकल्पना करता है।
- इसके अलावा उन्होंने 'रिड्यूस, रीयूज एंड रिसाइकल' और सर्कुलर इकोनॉमी की अवधारणा पर भी जोर दिया तथा उल्लेख किया कि यह जीवन शैली हजारों वर्षों से, भारतीय जीवन शैली का हिस्सा रही है।

मिशन लाइफ के बारे में:

- LiFE को 1 नवंबर, 2021 को ग्लासगो में CoP–26 में भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा एक जन आंदोलन के रूप में पेश किया गया था।
- यह एक व्यवहार परिवर्तन आंदोलन है जो लोगों को प्रकृति के अनुरूप जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने की परिकल्पना करता है, जिससे प्रकृति को नुकसान न पहुंचे।
- भारत ने 5 जून, 2022 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर LiFE ग्लोबल मूवमेंट शुरू करके LiFE विजन का और विस्तार किया।
- भारत ने दुनिया भर के शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और स्टार्ट-अप को ठोस वैज्ञानिक तरीकों पर विचार करने के लिए आमंत्रित किया, जिसके माध्यम से पर्यावरणीय संकट को दूर करने के लिए सामूहिक कार्यवाही की पूरी क्षमता का उपयोग किया जा सके।

प्रभाव

- एक अनुकूल जीवन शैली को अपनाना भी जलवायु परिवर्तन से निपटने के दौरान भारी प्रभावी हो सकता है, जैसे ट्रैफिक लाइट पर कार के इंजन, स्कूटर के इंजन आदि को बंद करने जैसी छोटी क्रियाएं प्रति वर्ष 22.5 बिलियन kWh तक ऊर्जा बचा सकती हैं।
- इसी तरह, जब नल सक्रिय उपयोग में न हों तो उन्हें बंद कर देने से लगभग 9 ट्रिलियन लीटर तक पानी की बचत हो सकती है, जबकि खाद्य अपशिष्ट को खाद बनाने से 15 बिलियन टन भोजन को लैंडफिल में जाने से बचाया जा सकता है।

मिशन LiFE

- मिशन LiFE, एक मिशन-मोड वैज्ञानिक और मात्रात्मक कार्यक्रम के माध्यम से, भारत के धारणाओं तथा लक्ष्यों को क्रियान्वित करेगा और भारत की जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाएगा।
- यह मिशन 2022–27 की अवधि में, कम से कम 1 अरब भारतीयों तथा अन्य वैश्विक नागरिकों को जुटाने के लिए तैयार किया गया है जिससे ये अपने व्यक्तिगत और सामूहिक योगदान द्वारा पर्यावरण की संरक्षण कर सकें।
- भारत के कम से कम 80% गांवों और शहरी स्थानीय निकायों को 2028 तक, पर्यावरण के अनुकूल बनने की ओर क्रियान्वित करना।
- मिशन LiFE वैश्विक लॉन्च का समन्वय नीति आयोग, MoEFCC और गुजरात सरकार द्वारा किया गया।
- MoEFCC द्वारा कार्यान्वित किए जाने से पहले, मिशन LiFE को नीति आयोग द्वारा पहले वर्ष के लिए क्यूरेट और इनक्यूबेट किया जाएगा। यह मिशन पांच साल का कार्यक्रम है।

भारत द्वारा अन्य व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रम

- **स्वच्छ सागर सुरक्षित सागर:** एक ऐसा अभियान जिसने 75 दिनों में 75 समुद्र तटों से लगभग 15,000 टन कचरे को हटाने का लक्ष्य था।
- **स्वच्छ भारत अभियान:** इस मिशन ने 7 वर्षों के भीतर ग्रामीण भारत में लगभग 100 मिलियन शौचालयों के निर्माण और उपयोग को बढ़ावा दिया।
- **उज्ज्वला योजना:** उज्ज्वला योजना ने परिवारों में एलपीजी कनेक्शन 2015 में 62% से बढ़ाकर 2021 में 99.8% कर दिया।

डिजिटल बैंकिंग इकाई

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में, भारत के प्रधानमंत्री ने देश के 75 जिलों में डिजिटल बैंकिंग इकाई शुरू की।
- ये डिजिटल बैंकिंग इकाईयां देश में वित्तीय समावेशन को और बढ़ा सकती हैं।
- बजट 2022-23 में देश के 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाईयां स्थापित करने की घोषणा की गई थी।

डिजिटल बैंकिंग इकाई क्या है?

- डिजिटल बैंकिंग इकाई व्यवसाय या हब का विशिष्ट बिंदु है जिसमें किसी भी समय स्वयं सेवा मोड में डिजिटल बैंकिंग उत्पाद और सेवा के साथ-साथ मौजूदा वित्तीय सेवा उत्पाद प्रदान किया जाएगा।

डिजिटल बैंकिंग इकाई द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवा

डीबीयू में उत्पादों और सेवाओं के ग्राहकों को 2 मोड में पेश किया जाएगा:

- ➢ स्वयं सेवा मोड।
- ➢ डिजिटल सहायता मोड।

- डीबीयू के माध्यम से दी जा रही सेवाओं में बैंकिंग सुविधाएं जैसे- बचत खाता खोलना, बैलेंस-चेक, प्रिंट पासबुक, फंड ट्रांसफर, फिक्स्ड डिपॉजिट में निवेश, ऋण आवेदन, जारी किए गए चेक के लिए स्टॉप-पेमेंट निर्देश, क्रेडिट/डेबिट कार्ड के लिए आवेदन, व्यू खाते का विवरण, करों का भुगतान, बिलों का भुगतान, नामांकन करना आदि संभव होगा।
- डीबीयू जन समर्थ पोर्टल के माध्यम से सरकारी क्रेडिट लिंक योजनाओं को ऑनबोर्डिंग और एक छोटे से एमएसएमई/खुदरा ऋण के एंड-टू-एंड डिजिटल प्रोसेसिंग की सुविधा भी प्रदान करेंगे।

निम्नलिखित पहलुओं में डीबीयू पारंपरिक शाखा से अलग होंगे

- यह 24 x 7 नकद जमा और निकासी सहित बैंकिंग सेवाएं प्रदान करेंगे।
- इसमें सेवाएं डिजिटल रूप से प्रदान की जाएंगी।
- जिन लोगों के पास कनेक्टिविटी या कंप्यूटिंग डिवाइस नहीं हैं, वे डीबीयू से पेपरलेस मोड में बैंकिंग लेनदेन कर सकते हैं।
- सहायता प्राप्त मोड में बैंकिंग लेनदेन के लिए उपयोगकर्ताओं की सहायता और मार्गदर्शन के लिए बैंक कर्मचारी उपलब्ध रहेंगे।

डिजिटल बैंकिंग इकाई के लिए आरबीआई के दिशानिर्देश

- डिजिटल बैंकिंग अनुभव वाले वाणिज्यिक बैंकों (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, भुगतान बैंकों और स्थानीय क्षेत्र के बैंकों के अलावा) को टियर 1 से टियर 6 केंद्रों में डीबीयू खोलने की अनुमति है, जब तक कि विशेष रूप से प्रतिबंधित न हो।
- बैंकों के डीबीयू को बैंकिंग आउटलेट माना जाएगा।
- डीबीयू का नेतृत्व बैंक के एक वरिष्ठ और अनुभवी कार्यकारी द्वारा किया जाना चाहिए जिसे डीबीयू के मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) के रूप में नामित किया जा सकता है।

डिजिटल बैंकिंग इकाई का लाभ

- डीबीयू ग्राहकों को पूरे वर्ष बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं का किफायती, सुविधाजनक पहुँच तथा बेहतर डिजिटल अनुभव प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा।
- इसमें डिजिटल वित्तीय साक्षरता का प्रसार किया जायेगा और साइबर सुरक्षा जागरूकता एवं सुरक्षा उपायों पर विशेष जोर दिया जाएगा।
- डीबीयू द्वारा सीधे या व्यावसायिक सुविधाकर्ताओं/संवाददाताओं के माध्यम से प्रदान की जाने वाली व्यवसाय और सेवाओं से उत्पन्न होने वाली ग्राहकों की शिकायतों का निवारण प्रदान किया जा सकेगा।

निष्कर्ष

डिजिटल अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। वाणिज्य, वित्तपोषण और रसद सहित अर्थव्यवस्था के सभी हिस्सों को अगली पीढ़ी के समाधानों की आवश्यकता है। हमारी आबादी का केवल 27% ही डिजिटल रूप से साक्षर है, जिसमें अच्छे कनेक्टिविटी इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है। इस प्रकार सरकार के लिए वित्त से संबंधित डिजिटल साक्षरता पर ध्यान देना समय की मांग है।

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (जीईएसी) ने बीज उत्पादन के लिए ट्रांसजेनिक हाइब्रिड सरसों डीएमएच-11 के 'पर्यावरणीय रिलीज' की सिफारिश की है। इसके अलावा मधुमक्खियों और अन्य परागणकों पर जीई सरसों के प्रभाव पर क्षेत्र परिणम पर अध्ययन की अनुमति दी है।

डीएमएच-11

धारा सरसों हाइब्रिड (डीएमएच-11) के बारे में

- धारा सरसों हाइब्रिड-11 (डीएमएच-11) को 2002 में ट्रांसजेनिक तकनीक के माध्यम से दिल्ली विश्वविद्यालय के दीपक पेंटल द्वारा विकसित किया गया था।
- यह हर्बिसाइड टॉलरेंट (HT) सरसों का आनुवंशिक तौर पर संशोधित रूप है।
- इसमें दो एलियन जीन ('बार्नेज' और 'बारस्टार') होते हैं जो बैसिलस एमाइलोलिफेशियन्स नामक मिट्टी के जीवाणु से आइसोलेट होते हैं जो उच्च उपज वाली वाणिज्यिक सरसों की संकर प्रजाति विकसित करने में सहायक है।
- जीईएसी ने 2017 में डीएमएच-11के व्यावसायिक खेती प्रस्ताव को मंजूरी दे दी थी, लेकिन पर्यावरण मंत्रालय ने इसे इनकार कर दिया था तथा सुझाव दिया कि जीईएसी को जीएम फसल पर और अधिक अध्ययन करना चाहिए।

डीएमएच-11 के सकारात्मक प्रभाव

- यह खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों का समाधान कर सकता है।
- इसकी उपज अधिक है और इस प्रकार किसानों को उच्च आय प्रदान कर सकती है।
- यह कीटनाशकों और शाकनाशियों के उपयोग को कम कर सकता है जो पर्यावरण की रक्षा कर सकता है।

डीएमएच-11 के नकारात्मक प्रभाव

- यह मानव स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक परिणाम पैदा कर सकता है।
- यह किसानों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों की अनुचित प्रथाओं के प्रति संवेदनशील बना सकता है।
- यह पर्यावरण के आनुवंशिक संदूषण का कारण बन सकता है।

निष्कर्ष

जीएम सरसों की व्यावसायिक खेती से पहले स्वतंत्र पर्यावरणविदों द्वारा प्रभाव मूल्यांकन किया जाना चाहिये, क्योंकि किसान पारिस्थितिकी और स्वास्थ्य पर GM फसलों के दीर्घकालिक प्रभाव का आकलन नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा सुरक्षा प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

भारत में जीएम फसलें

- **कपास:** 2002 में जीईएसी ने आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिलनाडु जैसे 6 राज्यों में व्यावसायिक खेती के लिये BT कपास को मंजूरी दी। बीटी कपास जीईएसी द्वारा अनुमोदित पहली और एकमात्र ट्रांसजेनिक फसल है।
- **बैंगन:** माहिको ने धारवाड़ कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय और तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के साथ संयुक्त रूप से बीटी बैंगन विकसित किया।
- जीईएसी ने वर्ष 2007 में बीटी बैंगन की व्यावसायिक रिलीज की सिफारिश की थी, लेकिन वर्ष 2010 में इस पहल को रोक दिया गया था।

आगे क्या हो सकता है?

- केंद्र सरकार इस पर अंतिम फैसला करेगी कि इसे व्यावसायिक खेती के लिए अनुमति दी जाए या नहीं।
- डीएमएच-11 का वाणिज्यिक उपयोग बीज अधिनियम और संबंधित नियमों तथा विनियमों के अधीन होगा।

C-295 विमान

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वड़ोदरा में C-295 परिवहन विमान के निर्माण संयंत्र की आधारशिला रखी। यह पहली बार है जब C-295 विमान का निर्माण यूरोप के बाहर किया जाएगा।

उत्पादक

यूरोपीय विमानन प्रमुख एयरबस और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स (TASL), टाटा की रक्षा शाखा, गुजरात के वड़ोदरा में भारतीय वायु सेना (IAF) के लिए C-295 परिवहन विमान का निर्माण करेगी।

C-295 परिवहन विमान समझौते के बारे में

- सितंबर 2021 में, भारत ने वायु सेना के पुराने एवरो-748 विमानों को बदलने के लिए 56 C-295 परिवहन विमानों की खरीद के लिए एयरबस रक्षा और अंतरिक्ष के साथ लगभग ₹21,000 करोड़ के सौदे को एक परियोजना के तहत, एक डील पर हस्ताक्षर किया था जिसमें भारत में सैन्य विमानों का निर्माण भी शामिल था।
- समझौते के तहत, एयरबस चार साल के भीतर सेविले (स्पेन) में अपनी अंतिम असेंबली लाइन से 'फ्लाई-अवे' स्थिति में पहले 16 विमान हस्तानांतरित होंगे और बाद के 40 विमानों का निर्माण तथा संयोजन भारत में TASL द्वारा दो फर्मों के बीच औद्योगिक साझेदारी के रूप में किया जाएगा।

C- 295 विमान की विशेषताएं

- C-295 मेगावाट समकालीन तकनीक के साथ 5-10 टन क्षमता का परिवहन विमान है।
- इसमें त्वरित प्रतिक्रिया और सैनिकों तथा कार्गो के पैरा-ड्रॉपिंग के लिए एक रियर रैंप दरवाजा है।
- इसे स्वदेशी इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सूट के साथ स्थापित किया जाएगा।

समझौते के लाभ

- यह परियोजना भारतीय वायुसेना की रसद क्षमताओं को मजबूत करेगी।
- यह परियोजना भारतीय निजी क्षेत्र को प्रौद्योगिकी गहन और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी विमानन उद्योग में प्रवेश करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है।
- यह परियोजना घरेलू विमानन निर्माण में वृद्धि करेगी जिसके परिणामस्वरूप आयात पर निर्भरता कम होगी और निर्यात में अपेक्षित वृद्धि होगी।
- यह आत्मनिर्भर भारत पहल के अनुरूप है।
- यह परियोजना भारतीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करेगी।

निष्कर्ष

रक्षा क्षेत्र में मेक इन इंडिया पहल आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्त्वपूर्ण है। भारत वर्तमान में अपने द्वारा उपयोग किए जाने वाले अधिकांश रक्षा उत्पादों का आयात करता है। रक्षा में निजी क्षेत्र की भागीदारी विदेशी उत्पादकों को विभिन्न भारतीय व्यवसायों के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। यह रणनीतिक सहयोग, भारत के रक्षा क्षेत्र में उत्पादकों के लिए कई अवसर पैदा करेगा।

Google के खिलाफ CCI का फैसला

चर्चा में क्यों?

- भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) ने देश में एंड्रॉइड मोबाइल डिवाइस पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित कई श्रेणियों में 'अपनी बाजार प्रमुख स्थिति का दुरुपयोग' करने के लिए गूगल पर 1,337.76 करोड़ ($162 मिलियन) का जुर्माना लगाया है।
- देश में Android-आधारित स्मार्टफोन के उपभोक्ताओं की शिकायतों के बाद 2019 में भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (CCI) द्वारा गूगल के अनुचित व्यावसायिक व्यवहार के खिलाफ जाँच का आदेश दिया गया था।

गूगल के खिलाफ मुख्य आरोप

- **ऐप स्टोर बाजार में प्रभुत्व :** मोबाइल एप्लिकेशन वितरण समझौता के तहत संपूर्ण गूगल मोबाइल सूट (जीएमएस) की अनिवार्य प्री-इंस्टॉलेशन (इसे अनइंस्टॉल करने का कोई विकल्प नहीं है) और उनके खास प्लेसमेंट से डिवाइस निर्माताओं के लिए अनुचित स्थिति बनी है जो प्रतिस्पर्धा अधिनियम की धारा-4 (2)(ए)(i) के प्रावधानों का उल्लंघन हुआ है।
- **इंटरनेट खोज बाजार में प्रभुत्वः** गूगल ने ऑनलाइन सर्च मार्केट में मौद्रिक प्रोत्साहन देकर अपना प्रभाव कायम रखा है, जिससे अन्य प्रतिस्पर्धी सर्च ऐप्स के लिए बाजार में पहुँच नहीं मिली जो कि अधिनियम की धारा-4(2)(c) का उल्लंघन है।
- **एंड्रॉइड ऑपरेटिंग सिस्टम में प्रभुत्वः** गूगल ने डिवाइस निर्माताओं द्वारा निर्मित/वितरित/मार्केटिंग किए जाने वाले सभी एंड्रॉइड उपकरणों के लिए एंटी-फ्रैगमेंटेशन एग्रीमेंट (AFA), एंड्रॉइड कम्पैटिबिलिटी कमिटमेंट एग्रीमेंट (ACC) पर हस्ताक्षर करके गूगल के स्वामित्व वाले ऐप्स (विशेष रूप से गूगल प्ले स्टोर) की प्री-इंस्टॉलेशन के जरिए, डिवाइस निर्माताओं को एंड्रॉइड के वैकल्पिक संस्करणों पर काम करने वाले डिवाइस यानी एंड्रॉइड फोर्क्स को विकसित करने तथा बेचने की क्षमता और प्रोत्साहन को कम कर दिया जिससे ग्राहकों के हितों के लिए तकनीकी या वैज्ञानिक विकास सीमित हो गया जो कि अधिनियम की धारा-4(2)(बी)(ii) के प्रावधानों का उल्लंघन है।

भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई)

- सीसीआई कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय के तहत एक वैधानिक निकाय है जो प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
- इसमें केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त एक अध्यक्ष और 6 सदस्य होते हैं।

गूगल के लिए CCI का निर्देश

- स्मार्टफोन निर्माताओं को यह चुनने की अनुमति दी जानी चाहिए कि वे Google के कौन से ऐप इंस्टॉल करना चाहते हैं? उन्हें पूरे बुके (Buque) को प्री-इंस्टॉल करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए।
- निर्माताओं को प्ले स्टोर का लाइसेंस गूगल खोज सेवाओं, क्रोम ब्राउजर,यूट्युब, गूगल मानचित्र, जी-मेल, या किसी अन्य गूगल एप्लिकेशन को पूर्व-स्थापित करने की आवश्यकताओं से नहीं जोड़ा जाना चाहिए।
- गूगल को प्रारंभिक डिवाइस सेटअप के दौरान उपयोगकर्ताओं को सभी खोज प्रविष्टि बिंदुओं आदि के लिए अपना डिफॉल्ट खोज इंजन चुनने की अनुमति देनी चाहिए।
- गूगल को अपनी सर्च सेवाओं के लिए विशिष्टता सुनिश्चित करने के लिए मूल उपकरण निर्माता (ओईएम)को कोई मौद्रिक/अन्य प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। जैसे कि राजस्व-साझाकरण समझौतों में दिया गया है।
- गूगल ओईएम पर विंडन-रोधी बाध्यताएं नहीं लगाएगा, जिसका अर्थ है कि वे निर्माता जो वैकल्पिक Android संस्करण का उपयोग कर रहे हैं, उन्हें गूगल के स्वामित्व वाले ऐप्स तक पहुंच प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए।
- गूगल उपयोगकर्ताओं द्वारा अपने पहले से इंस्टॉल किए गए ऐप्स की स्थापना रद्द करने को प्रतिबंधित नहीं करेगा।

प्रारम्भिक परीक्षा आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 3डी बायोप्रिंटिंग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग का एक रूप है जो स्याही के रूप में कोशिकाओं और अन्य जैव-संगत सामग्रियों का उपयोग करता है।
2. यह जीवित संरचनाओं को परत दर परत प्रिंट करता है जो प्राकृतिक जीवित प्रणालियों के व्यवहार की नकल करते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

2. किन दो ग्रहों के खगोलीय संरेखण को महान संयोग के रूप में संदर्भित किया गया है जिसे हाल ही में देखा गया था?

(a) बृहस्पति और शनि (b) पृथ्वी और मंगल
(c) बुध और शुक्र (d) बृहस्पति और मंगल

3. रिवर्स ऑस्मोसिस के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. आरओ में, पानी में कुल घुलित ठोस पदार्थ जिसमें ट्रेस रसायन, वायरस, बैक्टीरिया और लवण शामिल हैं, को पीने योग्य पानी के मानकों को पूरा करने के लिए कम किया जा सकता है।
2. आरओ में यूवी विकिरण, ठोस कणों के अवसादन को तेज करता है, स्थिरता को दूर करता है और पानी की सफाई में सुधार करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

4. यह एक ब्रह्मांडीय घटना है जो ब्रह्मांड में विशाल आकाशगंगा या आकाशगंगाओं के समूह की उपस्थिति के कारण प्रकाश के आवर्धन का परिणाम है। इससे वैज्ञानिकों को तारा निर्माण की समझ में मदद मिलने की उम्मीद है।

निम्नलिखित में से कौन ऊपर दी गई घटना का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) जियोटेल (b) स्पेगेटीफिकेशन
(c) सुपरनोवा विस्फोट (d) गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग

5. 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित में से कौन सी प्रवृत्ति/प्रवृतियाँ देखी गई?

1. विकास दर में लगातार वृद्धि हुई।
2. कृषि और संबद्ध क्षेत्र लगातार सकारात्मक विकास दर दिखाते हैं।
3. कुल निवेश में सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 (d) केवल 2 और 3

6. विशेष आहरण अधिकार अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक कृत्रिम मुद्रा साधन है और इसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्राओं की एक टोकरी से बनाया गया है। निम्नलिखित में से कौन सी मुद्राएँ एसडीआर बास्केट बनाती है?

1. यू.एस. डॉलर
2. यूरो
3. चीनी रॅन्मिनबी
4. जापानी येन
5. पाउंड स्टर्लिंग

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 2 और 3 (b) केवल 1, 3 और 5
(c) केवल 2, 3 और 4 (d) 1, 2, 3, 4 और 5

7. निम्नलिखित में से कौन हाट मनी की परिभाषा सही ढंग से देता है?

(a) यह उन फंडों को संदर्भित करती है जो उन निवेशकों द्वारा नियंत्रित होते हैं जो सक्रिय रूप से अल्पकालिक रिटर्न चाहते हैं।
(b) यह घरेलू मुद्रा को संदर्भित करती है जो मूल्यह्रास के पर्याप्त दबाव में है।
(c) यह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा है जिसमें सबसे अधिक विश्वास दिखाया जाता है और हर अर्थव्यवस्था को

इसकी आवश्यकता होती है।

(d) यह शेयर बाजार में सबसे अधिक अस्थिर शेयरों को संदर्भित करती है।

8. राष्ट्रीय विनिर्माण नीति 2011 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका उद्देश्य भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी को बढ़ाकर 30% करना है।
2. इसका लक्ष्य 2022 तक 10 मिलियन अतिरिक्त रोजगार सृजित करना है।
3. इस नीति के तहत राष्ट्रीय निवेश और विनिर्माण क्षेत्र बनाए गए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 और 3 (b) केवल 1
(c) केवल 3 (d) केवल 2 और 3

9. विशेष आर्थिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह विदेश व्यापार नीति के प्रावधानों के तहत स्थापित किया गया है।
2. केंद्र और राज्य दोनों सरकारों के पास SEZ स्थापित करने की शक्ति है।
3. इसे व्यापार संचालन, शुल्क और प्रशुल्क के उद्देश्य से विदेशी क्षेत्र माना जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2
(c) केवल 3 (d) केवल 2 और 3

10. निम्नलिखित में से कौन सा/से उपाय चालू खाता घाटे को कम करने में मदद कर सकता/सकते है/हैं?

1. विनिमय दर का अधिमूल्यन
2. सख्त मौद्रिक नीति
3. आपूर्ति श्रृंखला में बाधाओं को दूर करना

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2 और 3

11. फॉरवर्ड ब्लॉक के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसकी स्थापना सुभाष चंद्र बोस ने की थी।
2. इसका उद्देश्य सभी वामपंथी तत्वों के लिए एक एकीकृत बल के रूप में कार्य करना था।
3. इसने द्वितीय विश्व युद्ध का सक्रिय विरोध किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

12. बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलुओं से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह अपने मालिक के प्राधिकरण के बिना, अनिवार्य लाइसेंसिंग और पेटेंट के सरकारी उपयोग को पूरी तरह से प्रतिबंधित करता है।
2. यह सदस्यों को अपने देशों में कुछ प्रकार के पौधों और जानवरों के आविष्कारों को पेटेंट कराने से निषेध करने की अनुमति देता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

13. मुद्रा स्वैप का/के निम्नलिखित में से कौन सा/से लाभ है/हैं?

1. विनिमय दर जोखिम से बचाव।
2. इसका मुद्रा की दिशा का अनुमान लगाने के लिए उपयोग किया जाना।
3. यह विदेशी मुद्रा में उधार लेने की लागत कम करता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 2 (b) केवल 1
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2 और 3

14. निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

1. मानस राष्ट्रीय उद्यान : पिग्मी हॉग
2. दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान : कश्मीरी हिरण
3. साइलेंट वैली नेशनल पार्क : लायन टेल्ड मैकाक

उपर्युक्त दिए गए युग्मों में से कौन से सही सुमेलित हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

15. निम्नलिखित में से कौन सा/से राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव

अभ्यारण्यों और बायोस्फीयर रिजर्व का/के मूल उद्देश्य है/हैं?

1. जानवरों की प्रजातियों का नियंत्रित और सीमित उपयोग।
2. संरक्षित क्षेत्रों में प्रजातियों की व्यवहार्य संख्या का रखरखाव।
3. वन्यजीव संरक्षण के बारे में जनता को शिक्षित करना।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

16. मैंग्रोव में निम्नलिखित में से कौन से संशोधन देखे जा सकते हैं?

1. जीवंतता
2. नमक स्रावित करने वाली ग्रंथियां
3. न्यूमेटोफोरस

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

17. गैंगेटिक डॉल्फिन के संदर्भ में जिसे आमतौर पर सुसु कहा जाता है, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. ये मीठे पानी में रहती हैं और सांस लेने के लिए सतह पर आती हैं।
2. ये प्रभावी रूप से अंधी होती हैं और मुख्य रूप से संचार करने के लिए अल्ट्रासोनिक तरंगों पर भरोसा करती हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

18. निम्नलिखित में से कौन अखिल भारतीय किसान सभा से जुड़े हैं?

1. स्वामी सहजानंद
2. इंदुलाल याज्ञनिक
3. आचार्य नरेंद्र देव
4. बंकिम मुखर्जी

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) 1, 2 और 4 (b) 1, 3 और 4
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2, 3 और 4

19. कभी-कभी समाचारों में देखा जाने वाला रणनीतिक व्यापार प्राधिकरण शब्द भारत के आर्थिक संबंधों से निम्नलिखित में से किस देश या संघ से जुड़ा है?

(a) जापान (b) यूरोपीय संघ
(c) चीन (d) यूएसए

20. विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रांतीय गवर्नर हमेशा शाही राजकुमारों से नियुक्त किए जाते थे।
2. नायक का पद वंशानुगत हो गया।
3. उनके शासन में स्थानीय स्वशासी संस्थाओं की चोल परंपराओं का विस्तार हुआ और उन्हें मजबूती मिली।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

21. हाल ही में, MPEDA द्वारा शुरू की गई शाफरी योजना किस विशिष्ट क्षेत्र से संबंधित है?

(a) बागवानी (b) मछली पालन
(c) एक्वाकल्चर (d) कपड़ा

22. गंगा नदी डॉल्फिन और इरावदी डॉल्फिन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इरावदी डॉल्फिन लवणीय और मीठे पानी दोनों में रहती है।
2. संकटग्रस्त गंगा नदी डॉल्फिन केवल मीठे पानी में रह सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

23. आहार क्रांति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1 इसे नीति आयोग द्वारा लॉन्च किया गया है।
2. यह आंदोलन भारत और दुनिया द्वारा सामना की जा रही अजीबोगरीब समस्याओं (जिसे अक्सर भूख और बीमारियां कहा जाता हैं) को दूर करने के लिए

शुरु किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

24. हाल ही में कौन सा क्षेत्र चक्रवात सेरोजा से प्रभावित हुआ है?

(a) दक्षिणी इंडोनेशिया पूर्वी तिमोर
(b) दक्षिण अमेरिका
(c) अरब सागर
(d) जापान

25. इंडियन राइनो विजन 2020 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे 2010 में डिजाइन किया गया था।
2. यह योजना काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, ओरंग राष्ट्रीय उद्यान और पोबितोरा राष्ट्रीय उद्यान से परे चार संरक्षित क्षेत्रों में गैंडों को वितरित करने की थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) दोनों 1 और 2 (d) न तो 1, न ही 2

26. सड़कों को ढहाने, खेत में खाद डालने और अन्य उद्देश्यों के लिए पर्यावरण में नमक का आना - जहरीले रसायनों को छोड़ता है जो मीठे पानी की आपूर्ति प्रणाली के लिए खतरा पैदा करते हैं।

उपर्युक्त प्रक्रिया है:

(a) मीठे पानी का लवणीकरण सिंड्रोम
(b) खारा प्रदूषण
(c) जल क्षारीय सिंड्रोम
(d) नमक रासायनिक प्रदूषण

27. हाल ही में वैज्ञानिकों ने किस स्थान पर डिस्क फुटेड बैट नामक चमगादड़ की एक नई प्रजाति की खोज की?

(a) असम (b) मेघालय
(c) सिक्किम (d) मध्य प्रदेश

28. हाल ही में जॉयनगर मोआ को जीआई टैग मिला है और यह ज्यादातर कोलकाता के पास जॉयनगर शहर तक ही सीमित है, इसलिए जॉयनगर मोआ है:

(a) पॉप्ड राइस बॉल (b) रसगुल्ला
(c) मिश्री (d) राजभोग

29. E-2025 पहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा लॉन्च किया गया है।
2. यह 25 देशों में मलेरिया के संचरण को रोकने के लिए एक कार्यक्रम है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

30. MACS 1407 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह चावल की अधिक उपज देने वाली और कीट प्रतिरोधी किस्म है।
2. यह नई विकसित किस्म असम, पश्चिम बंगाल, झारखंड और छत्तीसगढ़ राज्यों में खेती के लिए उपयुक्त है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

31. इनोवेटर्स ग्रोथ प्लेटफॉर्म के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे आरबीआई द्वारा लॉन्च किया गया है।
2. एक मंच के रूप में आईजीपी ने भारतीय पूंजी उपलब्धता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाने और लिस्टिंग के प्रमुख मुद्दे को संबोधित करने का वादा किया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

32. डायमोनियम फॉस्फेट उर्वरक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसमें फास्फोरस और मैग्नीशियम दोनों होते हैं।
2. यह बहुत कम घुलनशील है और इसे मिट्टी में घुलने में अधिक समय लगता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

33. हाल ही में एक रिपोर्ट कनेक्टेड कॉमर्स: डिजिटल रूप से समावेशी भारत के लिए रोड मैप बनाना, नामक शीर्षक से जारी की गयी है:

(a) नीति आयोग द्वारा

(b) वित्त मंत्रालय और आरबीआई द्वारा

(c) आरबीआई और नीति आयोग द्वारा

(d) नीति आयोग और मास्टर कार्ड द्वारा

34. माउंट न्यारागोंगो कहाँ स्थित है जो लगभग दो दशकों में पहली बार फूटा/प्रस्फुटित हुआ है?

(a) गुयाना

(b) जिम्बाब्वे

(c) कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य

(d) केन्या

35. मलेरकोटला किस राज्य का 23वां जिला बन गया है?

(a) हरियाणा (b) पंजाब

(c) राजस्थान (d) मध्य प्रदेश

36. युवा लेखकों को सलाह देने के लिए प्रधानमंत्री की योजना- *YUVA* के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. शिक्षा मंत्रालय, उच्च शिक्षा विभाग ने यह योजना शुरू की है।
2. इस योजना का उद्देश्य देश में पढ़ने, लिखने और पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 30 वर्ष से कम उम्र के युवा और उभरते लेखकों को प्रशिक्षित करना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

37. द्वीप विकास प्राधिकरण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसका गठन केंद्रीय गृह मंत्रालय के तत्वावधान में किया गया था।
2. इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री करते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

38. फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. यह वित्त मंत्रालय द्वारा स्थापित भारत में शीर्ष व्यापार संवर्धन संगठन है।
2. यह संगठन विदेशी बाजारों में भारतीय उद्यमियों और निर्यातकों का प्रतिनिधित्व करने और उनकी सहायता करने के लिए जिम्मेदार है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

39. निम्नलिखित आम की किस्मो को उनके जीआई टैग राज्य के साथ सही सुमेलित करें:

A.	जरदालु	1.	गुजरात
B.	केसर	2.	बिहार
C.	अल्फांसो	3.	पश्चिम बंगाल
D.	खिरसापति	4.	महाराष्ट्र

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) A-3, B-2, C-1, D-4

(b) A- 2, B-1, C-4, D-3

(c) A-4, B-3, C-2, D-1

(d) A-1, B-3, C-3, D-4

40. जलगांव केले के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे 2016 में जीआई सर्टिफिकेशन मिला था।
2. जलगाँव को केले की राजधानी के रूप में जाना जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

41. देश का 52वां टाइगर रिजर्व कौन सा है?

(a) रामगढ़ विषधारी वन्यजीव अभ्यारण्य

(b) पेरियार टाइगर रिजर्व

(c) कमलांग टाइगर रिजर्व

(d) श्रीविल्लीपुथुर मेगामलाई टाइगर रिजर्व

42. एम्बरग्रीस क्या है, जो हाल ही में खबरों में रहा है?
(a) व्हेल द्वारा उत्सर्जन (b) कोरल रीफ
(c) नई खोजी गई मछली (d) ग्रे स्टोन

43. प्रोजेक्ट-75 I क्या है, जिसे हाल ही में रक्षा अधिग्रहण परिषद द्वारा अनुमोदित किया गया है?
(a) ड्रोन विकास परियोजना
(b) सबमरीन निर्माण परियोजना
(c) गश्ती पोत विकास परियोजना।
(d) रडार विकास परियोजना

44. EnVision अंतरिक्ष परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह नासा के योगदान के साथ ईएसए के नेतृत्व वाला एक मिशन है।
2. साल 2030 में यह बुध ग्रह तक पहुँचेगा।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?
(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

45. किस राज्य ने दुनिया के पहले आनुवांशिक रूप से संशोधित GM रबर का फील्ड परीक्षण शुरू किया है?
(a) असम (b) सिक्किम
(c) मेघालय (d) पश्चिम बंगाल

46. डंडारी गुस्सादी उत्सव मनाया जाता है:
(a) मुंडा जनजाति द्वारा
(b) संथाली जनजाति द्वारा
(c) थारू जनजाति द्वारा
(d) राज गोंड जनजाति द्वारा

47. सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसे रक्षा नकारात्मक निर्यात सूची भी कहा जाता है।
2. अगस्त 2020 में, 101 वस्तुओं वाली पहली सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची को अधिसूचित किया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही कथन है/हैं?
(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर

1.	(c)	17.	(c)	33.	(d)
2.	(a)	18.	(d)	34.	(c)
3.	(a)	19.	(d)	35.	(b)
4.	(d)	20.	(b)	36.	(c)
5.	(c)	21.	(c)	37.	(a)
6.	(d)	22.	(c)	38.	(b)
7.	(a)	23.	(b)	39.	(b)
8.	(c)	24.	(a)	40.	(c)
9.	(c)	25.	(b)	41.	(a)
10.	(d)	26.	(a)	42.	(a)
11.	(d)	27.	(b)	43.	(b)
12.	(b)	28.	(a)	44.	(a)
13.	(c)	29.	(b)	45.	(a)
14.	(d)	30.	(b)	46.	(d)
15.	(d)	31.	(b)	47.	(b)
16.	(d)	32.	(d)		

1. राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह केंद्रीय आतंकवाद विरोधी कानून प्रवर्तन एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
2. यह विदेशों में भारतीयों और भारतीय हितों को लक्षित आतंकवादी हमलों की जांच कर सकती है।
3. इसे राज्यों की विशेष अनुमति के बिना राज्यों में आतंकवाद से संबंधित अपराधों से निपटने का अधिकार है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

A- केवल 1 और 2
B- केवल 2 और 3
C- केवल 1 और 3
D- 1, 2 और 3

उत्तर- D

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति भारत में जीएम फसलों की सर्वोच्च नियामक है।
2. भारत ने जीएम चावल की व्यावसायिक खेती की अनुमति दी है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A- केवल 1
B- केवल 2
C- 1और 2
D- इनमे से कोई नही

उत्तर- A

3. पॉलीक्रैक तकनीक का उपयोग किसमें किया जाता है?

A- खसखस उत्पादन
B- अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन
C- यूरिया का विनाइट्रीकरण
D- शेल गैस निर्माण

उत्तर- B

4. भारत ने ग्लासगो में COP-26 शिखर सम्मेलन में निम्नलिखित में से किस जलवायु लक्ष्य की घोषणा की?

1. 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा से 50% ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करना।
2. स्थापित अक्षय क्षमता को 2030 तक 500 गीगावाट तक बढ़ाना।
3. 2005 के स्तर की तुलना में वर्ष 2030 तक भारत के कार्बन उत्सर्जन की तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम करना।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

A- केवल 1
B- केवल 1 और 2
C- केवल 2 और 3
D- 1, 2 और 3

उत्तर- D

5. GSLV Mk-III के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे उपग्रहों को जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटीओ) और लो अर्थ ऑर्बिट (एलईओ) दोनों में ले जाने के लिए डिजाइन किया गया है।
2. यह ऊपरी चरण में एक रूसी-विकसित क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग करता है।
3. गगनयान और चंद्रयान-3 जैसे मिशन GSLV Mk-III द्वारा लॉन्च किए जाएंगे।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही नहीं है/हैं?

A- 2 केवल
B- केवल 2 और 3
C- केवल 1 और 3
D- 1, 2 और 3

उत्तर- A

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF) G7 की पहल पर 1989 में स्थापित एक अंतर-सरकारी निकाय है।
2. यह एक नीति-निर्माण निकाय है जो विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय विधायी और नियामक सुधार लाने के लिए आवश्यक राजनीतिक इच्छाशक्ति उत्पन्न करने के लिए कार्य करता है।
3. एफएटीएफ सचिवालय लंदन, इंग्लैंड में ओईसीडी मुख्यालय में स्थित है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

A- 1 और केवल 2
B- केवल 2 और 3
C- 1 और केवल 3
D- 1, 2 और 3

उत्तर- A

7. जलवायु पारदर्शिता रिपोर्ट किसके द्वारा प्रकाशित की गयी?

A- आईयूसीएन
B- डब्ल्यूईएफ
C- आईपीसीसी
D- उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर- D

8. हाल ही में खबरों में रहे मेटावर्स के बारे में निम्नलिखित

कथनों पर विचार करें?

1. मेटावर्स एक समानांतर, आभासी, दुनिया है जहां उपयोगकर्ताओं की अलग-अलग पहचान, संपत्ति और चरित्र हो सकते हैं।
2. फेसबुक एकमात्र कंपनी है जिसने मेटावर्स बनाया है।
3. इसमे वर्चुअल एसेट्स या क्रिप्टोकरेंसी के बदले वर्चुअल रूप से सेवाएं दी जा सकती हैं।
4. इंटरऑपरेबिलिटी मेटावर्स की सफलता की कुंजी है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A- केवल 1, 2 और 3
B- केवल 2 और 3
C- केवल 1, 3 और 4
D- 1, 2, 3 और 4

उत्तर- C

9. 'वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट' किसके द्वारा तैयार की जाती है:

A- यूरोपीय सेंट्रल बैंक
B- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
C- पुनर्निर्माण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक
D- आर्थिक सहयोग और विकास संगठन

उत्तर- B

10. समान नागरिक संहिता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।

1. समान नागरिक संहिता वह है जो पूरे देश के लिए एक कानून प्रदान करती है, जो सभी धार्मिक समुदायों पर उनके व्यक्तिगत मामलों जैसे विवाह, तलाक, विरासत और गोद लेने में लागू होती है।
2. संविधान के अनुच्छेद 46 में कहा गया है कि भारत के पूरे क्षेत्र में नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता को सुरक्षित करना राज्य का दायित्व होगा।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A- केवल 1
B- केवल 2
C- दोनों 1 और 2
D- न तो 1 और न ही 2

उत्तर- A

11. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इंदिरा गांधी के कार्यकाल के दौरान भारत सरकार द्वारा कोयला क्षेत्र का राष्ट्रीयकरण किया गया था।
2. अब, कोयला ब्लॉकों का आवंटन नीलामी के आधार पर किया जाता है।
3. अभी तक भारत घरेलू आपूर्ति की कमी को पूरा करने के लिए कोयले का आयात करता था, लेकिन अब भारत कोयला उत्पादन में आत्मनिर्भर है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

A- केवल 1
B- केवल 1 और 2
C- केवल 3
D- 1, 2 और 3

उत्तर- B

12. ग्लोबल हंगर इंडेक्स किसके द्वारा जारी किया जाता है:

A- यूएनडीपी
B- ऑक्सफैम
C- एमनेस्टी
D- उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर- D

13. हाल ही में, निम्नलिखित में से किसने अपनी द्विवार्षिक 'लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट 2022' जारी की है

A- आईयूसीएन
B- एफएओ
C- डब्ल्यूडब्ल्यूएफ
D- डब्ल्यूईएफ

उत्तर- C

14. लघु बचत योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।

1. लघु बचत योजनाएं भारत में परिवारों के लिए आय का प्रमुख स्रोत हैं।
2. छोटी बचत योजनाओं पर रिटर्न हमेशा बैंक की सावधि जमा से अधिक होता है।
3. स्मॉल सेविंग योजनाओं की बढ़ती कीमतों के साथ, यील्ड निश्चित रूप से बढ़ने वाला है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

A- 1 और 2
B- 2 और 3
C- 1 केवल
D- केवल 3

उत्तर- C

व्यक्तित्व

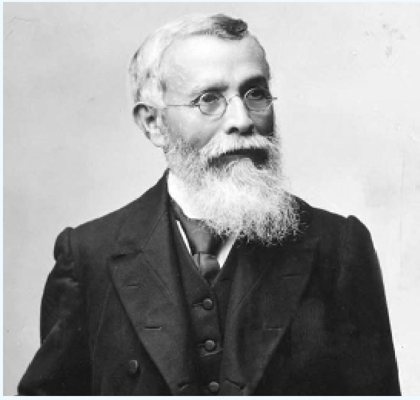

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

10 नवंबर, 1848 ई. को सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का जन्म पेशे से चिकित्सक दुर्गा चरण बनर्जी के घर हुआ था। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने शुरुआत में प्रेसीडेंसी कॉलेज से अपनी शिक्षा प्राप्त की थी। स्नातक की पढ़ाई के बाद वह रमेशचन्द्र दत्त और बिहारी लाल गुप्ता के साथ 1868 में भारतीय सिविल सेवा परीक्षा में बैठने के लिए इंग्लैण्ड चले गए। वह इन दोनों के साथ परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और ब्रिटिश भारत सरकार में सेवा करने के लिए योग्य हो गए। 1868 में वह दूसरे भारतीय थे जिन्होंने आईसीएस की परीक्षा पास की थी। इसके पूर्व 1867 ई. में सत्येन्द्रनाथ टैगोर आई.सी.एस. बनने वाले पहले भारतीय थे।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को आई.सी.एस. की परीक्षा पास करने के बाद सिलहट (बांग्लादेश) में सहायक मजिस्ट्रेट के रूप में नियुक्ति मिली, परन्तु जल्द ही सुरेन्द्र नाथ को, अपने एक अधीनस्थ द्वारा तैयार 'अपनी उम्र पर एक रिपोर्ट' में एक तकनीकी अनौचित्य के आधार पर पद से बर्खास्त कर दिया गया था। रिपोर्ट में त्रुटिपूर्ण तरीके से उनकी उम्र 22 वर्ष बताई गई थी, जबकि आई.सी.एस. पास करने की उम्र 21 वर्ष थी। बनर्जी अपने मामले में अपील करने के लिए लंदन भी गए, परन्तु वे असफल रहे।

26 जुलाई, 1876 को उन्होंने आनन्दमोहन बोस के साथ मिलकर इंडियन नेशनल एसोसिएशन जिसे इंडियन एसोसिएशन भी कहते हैं, की स्थापना की थी। यह 1870 के दशक में भारतीय युवाओं को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ राजनीतिक जागरूकता फैलाने वाला सबसे बड़ा मंच साबित हुआ था। बनर्जी की उच्च शिक्षा और उनकी राजनीतिक चिंतन पद्धति के चलते उन्हें "इंडियन बर्क" के नाम से भी जाना जाता था। उल्लेखनीय है कि एडमंड बर्क एक सुप्रसिद्ध ब्रिटिश राजनीतिक चिंतक और सिद्धान्तकार थे।

बनर्जी ने ऑल इंडिया नेशनल कांफ्रेंस की भी स्थापना की थी और 1883 में कलकत्ता में प्रथम अखिल भारतीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने में प्रमुख योगदान दिया था। यह राष्ट्रीय सम्मलेन अखिल भारतीय स्तर पर पहला प्रयास था। बनर्जी स्वदेशी आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे जो विदेशी उत्पादों के खिलाफ, भारत में निर्मित माल (स्वदेशी) की वकालत करते थे।

उन्होंने इल्बर्ट बिल का विरोध किया था और 1882 में एक कॉलेज भी खोला जिसका नाम उन्होंने रिपन कॉलेज रखा, जो 1880-1884 के बीच भारत के वायसराय मार्क्विस ऑफ रिपन के नाम पर रखा गया था जो अब सुरेन्द्र नाथ बनर्जी कालेज है।
1879 में उन्होंने अंग्रेजी भाषा के एक समाचार पत्र 'बंगाली' को खरीदकर इसका संपादन भी किया, जो उनके उदारवादी राजनीतिक विचारों का मुखपत्र भी था। सन 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने अपने संगठन का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विलय कर दिया था।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने 1895 में पूना में हुए 11वें अधिवेशन और 1902 में अहमदाबाद में हुए 18वें अधिवेशन की अध्यक्षता की थी। वहीं सन 1900 तक सुरेन्द्र नाथ बनर्जी कलकत्ता निगम और बंगाल विधान परिषद के सदस्य रहे। उस समय तक वे कांग्रेस के भी महत्त्वपूर्ण नेता बन चुके थे। अपने उदारवादी विचारों के कारण इंग्लैंड में वे भारतीय मांगों के लिए अग्रणी नेताओं में से एक थे।

जब 1905 में लॉर्ड जॉर्ज कर्जन ने बंगाल के विभाजन की घोषणा की, तब बनर्जी ने जनसभाओं और रैलियों के माध्यम से इसका कड़ा विरोध किया था। बनर्जी ने मॉर्ले-मिन्टो सुधार 1909 का समर्थन किया और उस समय उभरते हुए लोकप्रिय भारतीय राष्ट्रवादी नेता मोहनदास गांधी द्वारा प्रस्तावित सविनय अवज्ञा की आलोचना भी की थी, जिससे उन्हें भारतीय जनता और अधिकांश राष्ट्रवादी राजनेताओं की नाराजगी का सामना करना पड़ा था।

वह 1921 में बंगाल के सुधार के लिए विधान परिषद के लिए चुने गए थे। उन्हें नाइटहुड की उपाधि भी दी गई। उन्होंने स्थानीय स्वशासन के लिए 1921 से 1924 तक मंत्री के रूप में कार्य किया। इसके परिणामस्वरुप स्वराज पार्टी के उम्मीदवार डॉ. विधान चन्द्र रॉय ने 1923 में बंगाल विधान परिषद के चुनाव में, 24 परगना नगर निर्वाचन क्षेत्र से सुरेन्द्र नाथ बनर्जी को एक बड़े अंतर से हराया था।

6 अगस्त, 1925 को बैरकपुर में बनर्जी की मृत्यु हो गई। अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने 1925 में अपनी आत्मकथा, 'एक राष्ट्र का निर्माण (Nation in Making)' लिखी थी।

ध्येय IAS®

most trusted since 2003

20 वर्षों का भरोसा

सफलता ही हमारी परम्परा!

4500+ Selections in IAS & PCS

सामान्य अध्ययन
Bilingual

इतिहास

द्वारा जावेद सर

23rd Nov. / 8:30am

सामान्य अध्ययन
Bilingual

इतिहास

द्वारा जावेद सर

23rd Nov. / 2:30pm

GENERAL STUDIES
English Medium

HISTORY

by Javed Sir

23rd Nov. / 6:00pm

Optional Subject
Bilingual
For IAS/PCS

Sociology

by Kumar Amit Sir

10th Nov. / 12Noon

Optional Subject
Bilingual
For IAS/PCS

History

by Javed Sir

23rd Nov. / 12Noon

Lucknow (Aliganj)
A-12 Sector-J Aliganj, Lucknow

9506256789
7570009002

ध्येयIAS®

most trusted since 2003

20 वर्षों का भरोसा

सफलता ही हमारी परम्परा!

4500+ SELECTIONS IN IAS & PCS

₹ 55

dhyeyaias.com

Face to Face Centres

North Delhi : A 12, 13, Ansal Building, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi - 110009, Ph: 9205274741/42/44 I **Laxmi Nagar :** 1/53, 2nd floor, Lalita Park, Near Gurudwara, Opposite Pillar no.23, Laxmi Nagar, Delhi -110092, Ph: 9205212500/9205962002 I **Greater Noida :** 4th Floor Veera Tower, Alpha 1 Commercial Belt., Greater Noida, UP - 201310, Ph: 9205336037/38 I **Prayagraj :** II & III Floor, Shri Ram Tower, 17C, Sardar Patel Marg, Civil Lines, Prayagraj, UP - 211001, Ph: 0532-2260189/8853467068 I **Lucknow (Aliganj) :** A-12, Sector-J, Aliganj, Lucknow, UP- 226024, Ph: 0522-4025825/9506256789 I **Lucknow (Gomti Nagar) :** CP-1, Jeewan Plaza, Viram Khand-5, Near Husariya Chauraha, Gomti Nagar, Lucknow, UP - 226010, Ph: 7234000501/ 7234000502 I **Lucknow (Alambagh) :** 58/1 , Sector-B Opposite Phoenix Mall Gate No. 3, L.D.A Colony , Alambagh Lucknow,, Ph: 7518373333, 7518573333 | **Kanpur :** 113/154 Swaroop Nagar, Near HDFC Bank, Kanpur, UP - 208002, Ph: 7887003962/7897003962 I **Gorakhpur :** Narain Tower, 2nd floor, Gandhi Gali, Golghar, Gorakhpur, Uttar Pradesh 273001, Ph: 7080847474 I **Bhubaneswar :** OEU Tower, Third Floor, KIIT Road, Patia, Bhubaneswar, Odisha -751024, Ph: 9818244644/7656949029

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.com/hindi

ध्येयIAS
most trusted since 2003
Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744